उत्तर प्रदेश में पेराई सत्र के लिए गन्ना सट्टा व आपूर्ति नीति जारी
- 12

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा- जीएसटी सुधार से पारदर्शी बनेगी अर्थव्यवस्था
- 12

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के नेता का दो तानाशाहों के साथ आना शर्म की बात
- 13

मिचेल स्टार्क ने टी20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा
- 14

आज का मौसम

32.0⁰ अधिकतम तापमान

27.0⁰ न्यूनतम तापमान

सूर्योदय 05.49

सूर्यास्त 06.26

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार

कानपुर नगर

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण

लखनऊ बरेली कानपुर मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

भाद्रपद शुक्ल पक्ष एकादशी 04:22 उपरांत द्वादशी विक्रम संवत 2082

बुधवार, 3 सितंबर 2025, वर्ष 4, अंक 14, पृष्ठ 14 ■ मूल्य 5 रुपये

ब्रीफ न्यूज

नागपुर में इंडिगो का विमान पक्षी के टकराया

नागपुर। नागपुर से कोलकाता जा रहा इंडिगो का एक विमान मंगलवार की सुबह उड़ान भरने के पश्चात पक्षी के टकराने के बाद हवाई अड्डे पर लौट आया। हवाई अड्डे के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि 160 से 165 यात्रियों को ले जा रहे विमान को नागपुर हवाई अड्डे पर एहतियात के तौर पर लौटना पड़ा। अधिकारी ने बताया कि उड़ान रद्द कर दी गई है।

विदेशी वित्तपोषण मामले की ईडी जांच शुरू

बेंगलुरु। ईडी ने कर्नाटक के धर्मस्थल में कथित सांप्रदायिक साजिशों को अमली जामा पहनाने के लिए विदेश से वित्तपोषण के आरोपों की जांच शुरू की है। आधिकारिक सूत्रों ने मंगलवार को बताया कि एजेंसी उन सभी संस्थाओं और हितधारकों से संबंधित तथ्य और दस्तावेज एकत्र कर रही है, जिनमें कुछ गैर सरकारी संगठन भी शामिल हैं। इनपर धर्मस्थल में विवाद पैदा करने के लिए उक्त धन का इस्तेमाल करने का आरोप है।

अभिनेत्री रान्या राव पर 102 करोड़ का जुर्माना

बेंगलुरु। राजस्व आसूचना निदेशालय (डीआरआई) ने सोने की तस्करी के एक मामले में कन्नड़ फिल्म अभिनेत्री रान्या राव पर 102 करोड़ रुपये का जुर्माना लगाया है। उनके साथ, तीन अन्य पर भी 50 करोड़ रुपये से अधिक का भारी जुर्माना लगाया गया है। डीआरआई ने मंगलवार को अभिनेत्री और बेंगलुरु सेंट्रल जेल में बंद अन्य आरोपियों को 2,500 पृष्ठों का जुर्माना नोटिस दिया। अभिनेत्री को तीन मार्च को बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 14.8 किग्रा सोने के साथ पकड़ा गया था।

विधायक के. कविता बीआरएस से निलंबित

हैदराबाद। भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) ने विधान परिषद सदस्य के. कविता को पार्टी विरोधी गतिविधियों के कारण मंगलवार को पार्टी से निलंबित कर दिया। यह कदम ऐसे समय में उठाया गया है जब कविता ने चचेरे भाइयों एवं भारत राष्ट्र समिति (बीआरएस) के नेताओं टी हरीश राव और जे संतोष कुमार पर कालेश्वरम परियोजना को लेकर अपने पिता के. चंद्रशेखर राव (केसीआर) की छवि खराब करने का आरोप लगाकर पार्टी में तूफान खड़ा कर दिया था।

नई दिल्ली में सेमीकॉन इंडिया 2025 के उद्घाटन के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव। ● एजेंसी

भारत की छोटी चिप दुनिया में लाएगी बड़ा बदलाव : मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी

सेमीकॉन इंडिया-2025

- **प्रधानमंत्री बोले, देश सेमीकंडक्टर मिशन के अगले चरण की ओर अग्रसर**
- **कहा-दुनिया भारत के साथ सेमीकंडक्टर का भविष्य बनाने के लिए तैयार**

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को कहा कि 18 अरब डॉलर से अधिक की 10 सेमीकंडक्टर परियोजनाएं जारी हैं और देश अब भारत सेमीकंडक्टर मिशन के अगले चरण की ओर बढ़ रहा है। साथ ही कहा कि 1,000 अरब डॉलर के वैश्विक चिप बाजार का दोहन करने के लिए उसको (चिप) तैयार करने से जुड़ी प्रोत्साहन (डीएलआई) योजना के अगले चरण पर सरकार काम कर रही है। मोदी ने कहा कि वह दिन दूर नहीं जब भारत में बनी सबसे छोटी चिप दुनिया में सबसे बड़ा बदलाव लाएगी। वह दिन दूर नहीं जब दुनिया कहेगी भारत में तैयार, भारत में निर्मित, दुनिया के लिए विश्वसनीय। सेमीकॉन इंडिया-2025 के उद्घाटन के अवसर पर मोदी ने यह बात कही। इसमें दुनिया भर से करीब 50 देशों के सेमीकंडक्टर क्षेत्र के विशेषज्ञों ने शिरकत की।

मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि भारत की नवाचार और युवा शक्ति भी इस कार्यक्रम में स्पष्ट रूप से मौजूद है। उन्होंने कहा कि यह अनूठा संयोजन एक स्पष्ट संदेश देता है कि दुनिया, भारत पर भरोसा करती है। दुनिया, भारत में विश्वास करती है और दुनिया, भारत के साथ सेमीकंडक्टर का भविष्य बनाने के लिए तैयार है। प्रधानमंत्री ने कहा कि सेमीकंडक्टर की दुनिया में अक्सर कहा जाता है कि तेल काला सोना था लेकिन चिप डिजिटल हीरा है। उन्होंने कहा कि जहां तेल ने पिछली सदी को आकार दिया, वहीं 21वीं सदी की शक्ति अब छोटी चिप में केंद्रित है। आकार में छोटा होने के बावजूद इन चिप में वैश्विक प्रगति को तेजी से बढ़ाने की क्षमता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि वैश्विक सेमीकंडक्टर बाजार पहले ही 600 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंच चुका है और आने वाले वर्ष में इसके 1,000 अरब डॉलर को पार करने की उम्मीद है।

चुनौतियों के बावजूद दर्ज की 7.8 प्रतिशत की वृद्धि

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मंगलवार को 'बेजान अर्थव्यवस्था' के कटाक्ष का परोक्ष रूप से खंडन करते हुए कहा कि भारतीय अर्थव्यवस्था पहली तिमाही में 7.8 प्रतिशत की दर से बढ़ी और वैश्विक अनिश्चितताओं एवं आर्थिक स्वार्थ से प्रेरित चुनौतियों के बीच सभी अनुमानों को पार कर गई है। 'सेमीकॉन इंडिया 2025' सम्मेलन में उन्होंने कहा कि अप्रैल-जून में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) की वृद्धि हर उम्मीद, आशा एवं अनुमान से बेहतर रही। प्रधानमंत्री ने कहा कि भारत ने यह आर्थिक प्रदर्शन वैश्विक अनिश्चितताओं और आर्थिक स्वार्थ से उपजी चुनौतियों के बीच किया है।

प्रदेश में बनेगा आउटसोर्स सेवा निगम

कैबिनेट ने दी मंजूरी, वेतन-पीएफ और ईएसआई का पैसा सीधे खातों में जाएगा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार : मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अगुवाई में हुई मंत्रिमंडल की बैठक में मंगलवार को 15 प्रस्तावों को हरी झंडी दिखाई गई। इनमें कम्पनीज एक्ट-2013 के सेक्शन-8 के अंतर्गत उत्तर प्रदेश आउटसोर्स सेवा निगम लिमिटेड के गठन को मंजूरी देना भी अहम रहा। यह एक पब्लिक लिमिटेड कंपनी होगी, जिसे नान-प्रॉफिटेबल संस्था के रूप में संचालित किया जाएगा। इसके माध्यम से अब आउटसोर्सिंग एजेंसियों का चयन सीधे विभाग नहीं करेंगे, बल्कि निगम जेम पोर्टल के माध्यम से निष्पक्ष और पारदर्शी प्रक्रिया से एजेंसी का चयन करेगा।

आउटसोर्स कर्मचारियों का चयन तीन वर्ष के लिए किया जाएगा। कर्मचारियों को 16 से 20 हजार रुपये प्रतिमाह मानदेय दिया जाएगा। इस फैसले से सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि प्रत्येक कर्मचारी को उसका पूरा हक मिले और भविष्य सुरक्षित रहे। यह निर्णय लाखों युवाओं को बेहतर अवसर देगा, प्रदेश में रोजगार एवं सुशासन का नया मॉडल भी स्थापित करेगा।

वित्त मंत्री सुरेश खन्ना ने कैबिनेट के निर्णयों की जानकारी देते हुए बताया कि विभिन्न विभागों और संस्थाओं में लंबे समय से आउटसोर्सिंग एजेंसियों के माध्यम से बड़ी संख्या में कार्मिक सेवाएं प्रदान कर रहे थे। लेकिन, लगातार यह शिकायतें सामने आ रही थीं कि उन्हें सरकार द्वारा स्वीकृत पूरा मानदेय नहीं मिल रहा। ईपीएफ, ईएसआई जैसी अनिवार्य सुविधाओं का नियमित अंशदान भी कई बार एजेंसियों द्वारा नहीं किया जाता था। इन अनियमितताओं को खत्म करने और कर्मचारियों के हितों की रक्षा के लिए यह निगम गठित किया गया है।

लखनऊ स्थित लोकभवन में कैबिनेट सहयोगियों के साथ बैठक करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ।

ऐसी होगी नई व्यवस्था और सुविधाएं

लखनऊ। आउटसोर्सिंग एजेंसियों का चयन निगम जेम पोर्टल से करेगा। कर्मचारियों का मानदेय 16 से 20 हजार रु. प्रतिमाह निर्धारित है और महीने में 26 दिन सेवा ली जा सकेगी। कर्मचारी तीन वर्षों के लिए अपनी सेवाएं दे सकेंगे और उनका वेतन 1 से 5 तारीख तक सीधे उनके खातों में जाएगा। ईपीएफ और ईएसआई का अंशदान भी सीधे कर्मचारियों के खाते में जाएगा। चयन लिखित परीक्षा और साक्षात्कार से होना है। नियमानुसार आरक्षण मिलेगा। सेवा के दौरान मृत्यु होने पर 15 हजार रुपये अंतिम संस्कार सहायता के रूप में दिए जाएंगे।

पारिवारिक संपत्ति का बंटवारा होगा आसान और सस्ता

लखनऊ। कैबिनेट ने पारिवारिक संपत्ति के बंटवारे के लिए विभाजन विलेख पर स्टाम्प शुल्क और रजिस्ट्रेशन फीस को अधिकतम 5,000 रुपये तक सीमित करने का फैसला लिया। वर्तमान में विभाजन विलेख पर 4 प्रतिशत स्टाम्प शुल्क और 1 प्रतिशत रजिस्ट्रेशन फीस लागू है, जो संपत्ति के मूल्य पर आधारित है। नई व्यवस्था से पारिवारिक विवाद कम होंगे और संपत्ति का सौहार्दपूर्ण बंटवारा संभव होगा। हालांकि, इस छूट से अनुमानित 5.58 करोड़ का स्टाम्प शुल्क और 80.67 लाख का रजिस्ट्रेशन शुल्क राजस्व नुकसान हो सकता है।

ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब बनेगा यूपी, मंत्रिमंडल ने की नीति मंजूर

लखनऊ। कैबिनेट बैठक में उप्र. इलेक्ट्रॉनिक्स घटक विनिर्माण नीति-2025 (यूपी ईसीएमपी-2025) को मंजूरी दी, जो अगले 6 वर्षों तक प्रदेश में डिस्प्ले, कैमरा मॉड्यूल, मल्टीलेयर पीसीबी जैसे 11 महत्वपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक कॉम्पोनेन्ट्स के निर्माण को बढ़ावा देगी। सरकार की इस नीति से 5,000 करोड़ रुपये के निवेश और लाखों रोजगार के अवसर सृजित होंगे। इस नीति के तहत उद्यमियों को केंद्र की योजना के समतुल्य अतिरिक्त प्रोत्साहन दिए जाएंगे, जिससे यूपी का मौजूदा इलेक्ट्रॉनिक्स इकोसिस्टम ग्लोबल मैन्युफैक्चरिंग हब के रूप में उभरेगा। नीति का क्रियान्वयन शासन स्तर पर गठित नीति कार्यान्वयन इकाई और सशक्त समिति की देखरेख में नोडल संस्था द्वारा किया जाएगा। प्रमुख सचिव अनुराग यादव ने बताया कि नीति के तहत 5,000 करोड़ रुपये का अनुमानित व्यय होगा, जिससे प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार के लाखों अवसर सृजित होंगे।

अफगानिस्तान में मृतकों की संख्या 1400 के पार 3000 से अधिक घायल

शक्तिशाली भूकंप से एक घर में बना बड़ा गड्ढा और टूटी सीढ़ियां।

जलालाबाद, एजेंसी

- **पूर्वी अफगानिस्तान में रविवार की रात आया था शक्तिशाली भूकंप**
- **जीवित लोगों की तलाश में प्रभावित इलाके में बचाव अभियान जारी**

अफगानिस्तान के पूर्वी हिस्से में आए 6.0 तीव्रता के शक्तिशाली भूकंप में मरने वालों की संख्या बढ़कर 1400 से ज्यादा हो गई है और 3,000 लोग घायल हुए हैं। तालिबान सरकार के प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुजाहिद ने एक्स पर बताया कि पूर्वी अफगानिस्तान में आए भीषण भूकंप में मरने वालों की संख्या 1,400 से अधिक हो गई है। 3,000 से अधिक लोग घायल हुए हैं। जीवित लोगों की तलाश में इलाके में तलाश अभियान जारी है।

रविवार देर रात को पर्वतीय क्षेत्र में आए 6.0 तीव्रता के भूकंप से गांव तबाह हो गए और लोग घंटों मलबे में फंसे रहे। इससे पहले, अफगानिस्तान के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के प्रवक्ता यूसुफ हम्माद ने बताया कि घायलों को निकाला जा रहा है, इसलिए ये आंकड़े बदल सकते हैं। उन्होंने बताया कि भूकंप के कारण कुछ इलाकों में भूस्खलन हुआ, जिससे सड़कें अवरुद्ध हो गईं। ज्यादातर नुकसान कुनार प्रांत में हुआ है। घायलों को अस्पताल पहुंचाने के लिए हेलीकॉप्टर का इस्तेमाल किया जा रहा है। तालिबान सरकार ने अंतर्राष्ट्रीय मदद की अपील की है। ब्रिटेन ने 10 लाख पाउंड (13 लाख अमेरिकी डॉलर) की आपात धनराशि देने का वादा किया है, जिसे तालिबान सरकार के बजाय मानवीय एजेंसियों के बीच बांटा जाएगा, हालांकि ब्रिटेन तालिबान सरकार को मान्यता नहीं देता। चीन सहित अन्य देशों ने भी आपदा राहत सहायता की पेशकश की है।

सूडान में भूस्खलन से 1000 से अधिक नागरिकों की मौत

खारतूम/नई दिल्ली। मध्य अफ्रीकी देश सूडान के मार्रा पर्वतीय क्षेत्र में भारी बारिश के बाद हुए भूस्खलन में एक हजार लोगों की मौत हो गई है। सशस्त्र समूह सूडान लिबरेशन मूवमेंट/आर्मी ने एक बयान में कहा है कि कई दिनों की भारी बारिश के कारण रविवार को भूस्खलन हुआ, जिसमें केवल एक व्यक्ति ही जीवित बचा है और तरासिन गांव का अधिकांश हिस्सा जमींदोज़ हो गया है। सैन्य प्रशासन ने संयुक्त राष्ट्र और अन्य क्षेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से मानवीय आधार पर सहायता की अपील की है।

सीओ-कोतवाल नपे चौकी लाइन हाजिर

राज्य ब्यूरो, लखनऊ/बाराबंकी

छात्रों की पिटाई

- **मुख्यमंत्री का एक्शन, कमिश्नर आईजी ने भेजी जांच रिपोर्ट**
- **बाराबंकी के एसआरएम विवि के मामले ने तूल पकड़ा**

अमृत विचार : श्री रामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय बाराबंकी में एबीवीपी के छात्रों की पिटाई मामले में मंगलवार को विरोध प्रदर्शन के बीच मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सख्त एक्शन लिया है। उनके आदेश पर अयोध्या के कमिश्नर और आईजी ने मौके पर जांच के बाद रिपोर्ट भेज दी है। मामले में सीओ सिटी बाराबंकी और नगर कोतवाल को हटाने के साथ ही विभागीय जांच और निलंबन की कार्रवाई शुरू हो गई है, जबकि गदिया चौकी प्रभारी समेत सभी पुलिसकर्मियों को लाइन हाजिर कर दिया गया है।

विश्वविद्यालय में एलएलबी की मान्यता को लेकर सोमवार को प्रदर्शन कर रहे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) से जुड़े छात्रों पुलिस कर्मियों के साथ मिलकर कुछ अराजकतत्वों ने पिटाई की थी। इसमें 22 छात्र घायल हुए। मामले को लेकर एबीवीपी ने मंगलवार को बाराबंकी समेत लखनऊ विश्वविद्यालय और विधानसभा के पास प्रदर्शन किया। शीर्ष भाजपा नेताओं के हस्तक्षेप से मामला मुख्यमंत्री के संज्ञान में आते ही एक्शन शुरू हो गया। अयोध्या के कमिश्नर राजेश कुमार व आईजी प्रवीण कुमार ने विवि पहुंचकर पूरे प्रकरण की जांच कर कोर्स की वैधता, पुलिस की भूमिका और बाहरी लोगों की ओर से छात्रों की पिटाई के आरोपों पर सीएम कार्यालय को देर शाम रिपोर्ट दी। सूत्रों के अनुसार मामले में सीओ सिटी हर्षित चौहान और कोतवाली प्रभारी आरके राणा को तत्काल प्रभाव से हटाते हुए विभागीय जांच के साथ निलंबन की कार्रवाई शुरू कर दी गई है। इसकी एडीजी लखनऊ कार्यालय ने भी पुष्टि की है।

विवि प्रशासन पर एफआईआर के निर्देश

प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री योगेंद्र उपाध्याय ने बताया कि श्री रामस्वरूप मेमोरियल विश्वविद्यालय, माती में एलएलबी पाठ्यक्रम की मान्यता का समय से नवीनीकरण न कराए जाने के कारण छात्रों के भविष्य में अनिश्चितता की स्थिति उत्पन्न हुई है। प्रवेश के समय अवैध वसूली और छात्रों की न्यायोचित मांगों को दबाने के लिए बाहरी तत्वों का सहयोग लेना अत्यंत गंभीर हैं। विवि के जिम्मेदार अधिकारियों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराने के निर्देश दिए गए हैं।

तीन विश्वविद्यालयों में 948 नए पदों को मंजूरी

- **468 अस्थायी शिक्षणेतर और 480 आउटसोर्सिंग पदों पर भर्ती**

लखनऊ। राज्य सरकार ने तीन नवगठित विश्वविद्यालयों गुरु जम्भेश्वर विवि मुरादाबाद, मां विंध्यवासिनी विवि मिर्जापुर और मां पाटेश्वरी विवि बलरामपुर में कुल 948 नए पदों के सृजन को मंजूरी दी है। इसमें 468 अस्थायी शिक्षणेतर और 480 आउटसोर्सिंग पद हैं। इन पदों पर नियुक्ति होते ही इन विश्वविद्यालयों की प्रशासनिक और कार्यात्मक व्यवस्था मजबूत होगी। उच्च शिक्षा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) योगेंद्र उपाध्याय ने बताया कि प्रत्येक विवि में 156 अस्थायी शिक्षणेतर पद सृजित किए गए हैं, जो 28 फरवरी 2026 तक प्रभावी रहेंगे। प्रत्येक विवि में 160 पद आउटसोर्सिंग से भरे जाएंगे।

कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को निर्वाचन आयोग की नोटिस

- **दिल्ली में दो जगह से मतदाता होने का मामला**

नई दिल्ली। दिल्ली चुनाव प्रशासन ने कांग्रेस नेता पवन खेड़ा को एक से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने को लेकर नोटिस जारी किया है।

नई दिल्ली के जिला निर्वाचन अधिकारी ने खेड़ा को भेजे नोटिस में कांग्रेस नेता को आठ सितंबर को सुबह 11 बजे तक जवाब देने का निर्देश दिया है। जिला निर्वाचन अधिकारी द्वारा जारी नोटिस में कहा गया है कि मेरे संज्ञान में लाया गया है कि आपने अपना नाम एक से अधिक निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूची में पंजीकृत कराया है। खेड़ा नई दिल्ली और जंगपुरा विधानसभा क्षेत्रों में मतदाता के रूप में पंजीकृत हैं।

शरजील इमाम सहित 8 की बेल अर्जी खारिज

दिल्ली दंगा मामला

नई दिल्ली। दिल्ली हाईकोर्ट ने फरवरी 2020 के दंगों के पीछे की कथित साजिश से जुड़े यूएपीए मामले में उमर खालिद, शरजील इमाम और सात अन्य को जमानत (बेल) देने से मंगलवार को इनकार कर दिया। न्यायमूर्ति नवीन चावला और न्यायमूर्ति शलिंदर कौर की पीठ ने शरजील इमाम, उमर खालिद, मोहम्मद सलीम खान, शिफा उर रहमान, अतहर खान, मीरान हैदर, अब्दुल खालिद सैफी और गुलफिशा फातिमा और शादाब अहमद की जमानत याचिकाओं पर फैसला सुनाया। नौ जुलाई को अपना आदेश सुरक्षित रखने के बाद मंगलवार को पीठ ने कहा कि सभी अपीलें खारिज की जाती हैं। विस्तृत आदेश का इंतजार है।

सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी | सीजेआई बोले-हम आंध्र प्रदेश, तेलंगाना या कर्नाटक से संबंधित मामले पर गौर नहीं कर रहे

राष्ट्रपति के मामले में केवल संविधान की करेंगे व्याख्या

नई दिल्ली, एजेंसी

- **प्रेसीडेंट रिफरेंस मामले में शीर्ष अदालत ने सरकार को दिया भरोसा**

उच्चतम न्यायालय ने मंगलवार को कहा कि वह विधेयकों को मंजूरी के लिए राष्ट्रपति को भेजे जाने (प्रेसीडेंट रेफरेंस) पर विचार करते समय केवल संविधान की व्याख्या करेगा कि क्या न्यायालय राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों से निपटने के लिए राज्यपालों और राष्ट्रपति के लिए समयसीमा निर्धारित कर सकता है।

भारत के प्रधान न्यायाधीश (सीजेआई) बीआर गवई की अध्यक्षता वाली पांच न्यायाधीशों की पीठ ने यह टिप्पणी उस समय की जब सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा कि यदि इस संदर्भ का विरोध करने वाले पक्षों की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता अभिषेक सिंघवी अन्य के अलावा आंध्र प्रदेश से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों के उदाहरणों का हवाला देंगे, तो उन्हें जवाब दाखिल करने की आवश्यकता है क्योंकि उन्होंने उन पहलुओं पर दलील नहीं दी है। पीठ में न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति विक्रम नाथ, न्यायमूर्ति पीएस नरसिम्हा और न्यायमूर्ति ए एस चंदुरकर भी शामिल हैं।

मेहता ने पीठ से कहा कि अगर वे (तमिलनाडु और केरल सरकारें) आंध्र प्रदेश आदि के उदाहरणों पर भरोसा करने जा रही हैं... तो हम चाहेंगे कि इस पर जवाब दाखिल हो। क्योंकि हमें यह दिखाना होगा कि संविधान के साथ उसकी स्थापना से ही किस तरह खिलवाड़ किया गया...। सीजेआई गवई ने मेहता से कहा कि हम अलग-अलग मामलों पर गौर नहीं कर रहे हैं, चाहे वह आंध्र प्रदेश हो, तेलंगाना हो या कर्नाटक, लेकिन हम केवल संविधान के प्रावधानों की व्याख्या करेंगे। और कुछ नहीं।

सिंघवी ने राष्ट्रपति संदर्भ पर सुनवाई के छठे दिन अपनी दलीलें पुनः शुरू कीं और संक्षेप में बताया कि विधेयकों के विफल होने का क्या अर्थ है।

शीर्ष अदालत ने राज्यपाल की शक्तियों को लेकर उठाए हैं कई सवाल

अनुच्छेद 200 राज्य विधानमंडल द्वारा पारित विधेयकों के संबंध में राज्यपाल को शक्तियां प्रदान करता है, जिसके तहत वह विधेयक पर अपनी सहमति दे सकते हैं, अपनी सहमति रोक सकते हैं, विधेयक को पुनर्विचार के लिए लौटा सकते हैं या विधेयक को राष्ट्रपति के विचारार्थ सुरक्षित रख सकते हैं। अनुच्छेद 200 के एक प्रावधान में कहा गया है कि राज्यपाल, विधेयक को स्वीकृति के लिए प्रस्तुत किए जाने के बाद यथाशीघ्र, विधेयक को, यदि वह धन विधेयक नहीं है, सदन में पुनर्विचार के लिए लौटा सकते हैं और विधानसभा द्वारा पुनर्विचार करने तथा उसे वापस भेजने के बाद वह अपनी सहमति नहीं रोकेंगे। शीर्ष अदालत ने 26 अगस्त को कहा था कि यदि राज्यपाल विधेयकों को मंजूरी देने में अनिश्चितकाल तक देरी करते हैं तो क्या अदालत को शक्तिहीन होकर बैठना चाहिए और क्या संवैधानिक पदाधिकारी की विधेयक को रोकने की स्वतंत्र शक्ति का अर्थ यह होगा कि धन विधेयक को भी रोका जा सकता है।

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 3 सितंबर 2025

निर्यातकों को मिलेगा 882 करोड़ का वित्तीय प्रोत्साहन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की कैबिनेट ने दी नई निर्यात प्रोत्साहन नीति को मंजूरी, कई प्रावधान किए

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: राज्य सरकार ने निर्यातकों को राहत देने के लिए अपनी नई निर्यात प्रोत्साहन नीति को मंजूरी दी है। इसके तहत निर्यातकों 882 करोड़ रुपये के वित्तीय प्रोत्साहन दिए जाएंगे। पांच साल में सरकार निर्यात को 50 अरब डालर तक पहुंचाएगी। इतना ही नहीं निर्यातकों की तादाद में भी 50 प्रतिशत बढ़ोतरी होगी। दरअसल, कैबिनेट की बैठक में मंगलवार को उत्तर प्रदेश निर्यात प्रोत्साहन नीति 2025-30 कई प्रावधान किए गए हैं।

इस कड़ी में सेवा क्षेत्र के प्रमुख हब के तौर पर उभर रहे गौतमबुद्धनगर में एक सर्विस ट्रेड फैसिलिटेशन सेंटर (एसटीएफसी) की स्थापना होगी। इसके लिए 2.5 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। सेवा क्षेत्र के लिए विकास विपणन सहायता यूपी पहला राज्य है जिसने सेवा क्षेत्र के निर्यातकों के लिए विपणन विकास सहायता की नई योजना प्रस्तावित की है। इसमें पात्र निर्यातक इकाइयों को विदेशी मेले में प्रतिभाग पर स्टॉल किराए पर व्यय धनराशि का 75 प्रतिशत, अधिकतम 2 लाख रु. एवं व्यक्ति के लिए इकोनॉमी क्लास में की गयी यात्रा पर हुए व्यय का 75 प्रतिशत, अधिकतम 1 लाख रु. तक वित्तीय सहायता अनमुन्य की जाएगी। अंतरराष्ट्रीय स्तर के घरेलू मेले में जाने पर स्टॉल किराये पर किये गये व्यय का 75 प्रतिशत, व इकोनॉमी क्लास के एयर फेयर का 75 प्रतिशत वित्तीय सहायता दी जाएगी।

लोकभवन में आयोजित प्रेसवार्ता में केबिनेट बैठक में लिए गए फैसलों की जानकारी देखते वित्त मंत्री सुरेश खन्ना और अन्य मंत्री।

बीमा, बाजार विस्तार, प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण पर विशेष बल

- नई नीति में 2020-25 की निर्यात नीति में सुधार करते हुए डिजिटल तकनीकी, अवसंरचना विकास, वित्तीय सहायता, निर्यात ऋण और बीमा, बाजार विस्तार, प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण पर विशेष बल दिया गया है। नीति का लक्ष्य वर्ष 2030 तक पंजीकृत निर्यातकों की संख्या में 50 प्रतिशत वृद्धि करना और सभी जिलों को निर्यात गतिविधियों से जोड़कर क्षेत्रीय संतुलन सुनिश्चित करना है। इससे प्रदेश को एक सशक्त ग्लोबल एक्सपोर्ट हब के रूप में स्थापित करने में मदद मिलेगी।

इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माण को बढ़ावा

- इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के निर्माण को बढ़ावा देने के लिए बनी नई नीति के तहत डिस्प्ले, कैमरा मॉड्यूल, मल्टीलेयर पीसीबी जैसे 11 प्रमुख कंपोनेंट्स के निर्माण को प्रोत्साहन मिलेगा।

दिव्यांगजनों सशक्तिकरण के लिए नया केंद्र

- दिव्यांगजनों के सशक्तिकरण के लिए वाराणसी के परगना रामनगर में स्थित 3 एकड़ जमीन को दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग को सौंपे जाने का प्रस्ताव मंजूर हो गया है। इस जमीन पर समेकित क्षेत्रीय केंद्र बनाया जाएगा। यह सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय के तहत काम करेगा। इसकी जानकारी नगर विकास मंत्री ने दी।

शाहजहांपुर में बनेगा स्वामी शुकदेवानंद विवि

- कैबिनेट ने शाहजहांपुर में स्वामी शुकदेवानंद विवि. की स्थापना के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी है। इसके लिए मुमुक्ष आश्रम ट्रस्ट की शैक्षणिक इकाइयों को उच्चीकृत किया जाएगा। वर्तमान में ट्रस्ट के अंतर्गत 5 संस्थान संचालित हैं—स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज, स्वामी शुकदेवानंद विधि महाविद्यालय, श्री दैवी सम्पद ब्रह्मचर्य संस्कृत महाविद्यालय, श्री धर्मानन्द सरस्वती इंटर कॉलेज और श्री शंकर मुमुक्ष विद्यापीठ। विश्वविद्यालय बनने के बाद इनका संचालन विश्वविद्यालय करेगा। ट्रस्ट के पास कुल 21.01 एकड़ भूमि है, जिसमें से लगभग 20 एकड़ जमीन विश्वविद्यालय को मिलेगी।

नायब तहसीलदारों को प्रभार देकर वाद निस्तारित कराने की तैयारी

अमृत विचार, लखनऊ : राजस्व वादों को निस्तारित कराने के लिए राजस्व परिषद तहसीलदारों की कमी के मद्देनजर अब नायब तहसीलदारों को प्रभार देकर वाद निस्तारित कराने जा रहा है। दरअसल, उप्र. में 766 तहसीलदार के पद स्वीकृत हैं, लेकिन 328 ही तैनात हैं और 16 प्रतिनियुक्ति पर दूसरे विभागों में हैं। इसलिए नायब तहसीलदारों को प्रभारी तहसीलदार बनाकर मुकदमे निपटाए जाएंगे।

आयुक्त एवं सचिव राजस्व परिषद एसवीएस रंगाराव ने इस बाबत मंगलवार को मंडलायुक्तों और जिलाधिकारियों को निर्देश भेज दिया है। इसमें कहा गया है कि वर्तमान में 422 तहसीलदार के पद खाली हैं। इसलिए प्रत्येक तहसील में न्यूनतम एक तहसीलदार की तैनाती नहीं हो पा रही है। राज्य के तहसीलदार प्रशासनिक और तहसीलदार न्यायिक के पदों पर शत-प्रतिशत तैनाती न हो पाने के करण सामान्य प्रशासन व न्यायिक काम सुचारू रूप से नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे में तहसीलदार संवर्ग के अधिकारियों की कमी से उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों का तात्कालिक समाधान करने के लिए नायब तहसीलदारों को प्रभार देने की सहमति बनी है। सहायक कलक्टर प्रथम श्रेणी के रूप में तहसीलदार के पदनाम से न्यायिक एवं प्रशासनिक दायित्व देते हुए रोस्टर निर्धारित करते हुए काम कराया जाएगा। इसके लिए नायब तहसीलदारों को कोई भत्ता नहीं दिया जाएगा। तहसीलदार का पदीय दायित्वों का निवर्हन किए जाने के आधार पर सेवा संबंधी लाभ के लिए कोई दावा स्वीकार नहीं होगा। डीएम इसके आधार पर दायित्व तय करते हुए काम लेंगे।

न्यूज ब्रीफ

मंडियों में जल्द खुलेंगी सबरी कैंटीन

अमृत विचार, लखनऊ : शासन से स्वीकृति मिलने के मंडी परिषद ने प्रमुख मंडियों में शबरी कैंटीन खोलने की कवायद शुरू कर दी है। कैंटीन में किसान, मजदूर व व्यापारियों को स्वच्छ व सस्ता भोजन दिया जाएगा। कैंटीन की रुपरेखा निर्धारित करके मेन्यू और दरें निर्धारित की जा रही हैं मंडी परिषद को जिले की प्रमुख मंडी समितियों में शबरी कैंटीन स्थापित करनी हैं। जहां, दूरदराज से आए किसान, मजदूर और व्यापारियों को सस्ता, स्वच्छ, पौष्टिक और स्वास्थ्यवर्धक भोजन खिलाया जाएगा। हाइजीनिक किचन, बैठने की व्यवस्था, पेयजल, शौचालय और कूड़ा निस्तारण आदि इंतजाम किए जाने हैं। लगभग प्रमुख मंडियों में स्थल चयन का सर्वे पूर्ण कर लिया गया है। कैंटीन खोली जाएंगी।

नर्सिंग भर्ती के लिए स्क्रीनिंग परीक्षा सात को

अमृत विचार, लखनऊ : लोहिया संस्थान में नर्सिंग की नियमित भर्ती के लिए स्क्रीनिंग परीक्षा सात सितंबर को होगी। स्क्रीनिंग में पास होने वाले अभ्यर्थी को मुख्य परीक्षा में शामिल होने का मौका दिया जाएगा। लोहिया में नर्सिंग के 665 और 200 अन्य पदों के लिए भर्ती प्रक्रिया चल रही है। नर्सिंग में देश भर से 48 हजार से ज्यादा अभ्यर्थियों ने आवेदन किया है। अभ्यर्थियों की ज्यादा संख्या होने के कारण संस्थान प्रशासन पहले स्क्रीनिंग परीक्षा कराएगा। सात सितंबर को सुबह 9 से 11 बजे के बीच एक पाली में स्क्रीनिंग परीक्षा होगी। सीएमएस डॉ. विक्रम सिंह ने बताया कि अभ्यर्थियों को सुबह 7:30 बजे रिपोर्ट करना होगा। स्क्रीनिंग में सफल अभ्यर्थी ही मुख्य परीक्षा देंगे। परीक्षा के प्रवेश पत्र जारी कर दिए हैं। स्क्रीनिंग परीक्षा प्रदेश भर में कई केंद्रों पर होगी। मुख्य परीक्षा में लखनऊ व आस-पास के जिलों में हो कराई जा सकती है।

सेवा पखवाड़ा को लेकर भाजपा की कार्यशाला आज

अमृत विचार, लखनऊ : भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश महामंत्री व सदस्य विधान परिषद गोविंद नारायण शुक्ला ने बताया कि सेवा पखवाड़ा की तैयारी को लेकर बुधवार दोपहर 12 बजे से इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इसमें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्म दिवस 17 सितंबर से महात्मा गांधी की जयंती 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा मनाने की रणनीति तय होगी। कार्यशाला में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी, उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व ब्रजेश पाठक और प्रदेश महामंत्री (संगठन) धर्मपाल सिंह सहित अभियान के राष्ट्रीय सह संयोजक युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष तेजस्वी सूर्या मार्गदर्शन करेंगे।

देव दीपावली के भव्य आयोजन की तैयारी

अमृत विचार, लखनऊ : कैबिनेट मंत्री पर्यटन एवं संस्कृति जयवीर सिंह ने आगामी दीपोत्सव एवं देव दीपावली को आकर्षक एवं भव्य ढंग से आयोजित करने के लिए मंगलवार को पर्यटन निदेशालय के अधिकारियों के साथ समीक्षा की और प्रस्तुतिकरण का अवलोकन किया। उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि बीते साल की तरह इस वर्ष भी दीपोत्सव एवं देव दीपावली के आयोजन में संस्कृति एवं पर्यटन विभाग की भूमिका खास होनी चाहिए। जयवीर सिंह ने कार्यक्रम के संबंध में विस्तार से समीक्षा की और पर्व की महत्ता को देखते हुए किसी प्रकार की कमी न रहे, यह अधिकारियों को सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में प्रमुख सचिव पर्यटन एवं संस्कृति तथा धर्मार्थ कार्य मुकेश मेश्राम, विशेष सचिव संस्कृति संजय कुमार सिंह, विशेष सचिव पर्यटन ईशा प्रिया, पर्यटन सलाहकार जेपी सिंह के अलावा प्रीती श्रीवास्तव, अंजू चौधरी आदि मौजूद रहे।

प्रो. पी. के. प्रजापति बनाए गए निदेशक

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ निवासी अंतर्राष्ट्रीय स्तर के आयुर्वेद विशेषज्ञ प्रो. प्रदीप कुमार प्रजापति को केंद्र सरकार ने आल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ आयुर्वेद, नई दिल्ली का निदेशक नियुक्त किया है। वे अभी डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृष्णन आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान) में कुलपति के पद पर तैनात हैं। नियुक्ति मामलों की केंद्रीय कैबिनेट कमेटी के एप्रूवल के बाद केंद्रीय आयुष मंत्रालय ने प्रो. प्रजापति की नियुक्ति के आदेश जारी कर दिए हैं। आदेश के अनुसार उनकी नियुक्ति कार्यभार ग्रहण करने से पांच वर्ष या अधिवर्षता आयु (जो भी पहले हो) तक के लिए की गई है। प्रो. प्रदीप इससे पहले गुजरात आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जामनगर के शोध संस्थान में निदेशक, दिल्ली विश्वविद्यालय में डीन सहित अनेक महत्वपूर्ण पदों पर रह चुके हैं।

1607 करोड़ के निवेश प्रस्ताव को मिली मंजूरी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- देवरिया, शाहजहांपुर, गौतमबुद्धनगर व फर्रुखाबाद में चार कम्पनियों को जल्द ही जारी होंगे लेटर ऑफ कम्फर्ट

अमृत विचार: कैबिनेट की बैठक में मंगलवार को देवरिया, गौतमबुद्ध नगर, फर्रुखाबाद एवं शाहजहांपुर में 1607 करोड़ रूपए के निवेश प्रस्ताव को स्वीकृति प्रदान की गई। जिसके आधार पर जल्द ही सभी कम्पनियों को लेटर ऑफ कम्फर्ट जारी किया जाएगा।

औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी ने बताया कि चार प्रस्तावों पर विचार हुआ है। जिनमें मेसर्स फॉरएवर डिस्टिलरी प्राइवेट लिमिटेड-उसका बाजार औद्योगिक क्षेत्र (यूपीसीडा) के 250.12 करोड़, वाईटीटी इंडस्ट्रीज प्राइवेट लिमिटेड खिमसेपुर औद्योगिक क्षेत्र शाहजहांपुर के 277.86 करोड़, मेसर्स ओकासगंगा एग्रीटेक प्राइवेट लिमिटेड दादरी (गौतमबुद्धनगर) के 510.20 करोड़ एवं वुडपेकर ग्रीनएग्री न्यूट्रिएंट्स प्राइवेट लिमिटेड फर्रुखाबाद के 570 करोड़ के निवेश प्रस्ताव को मंजूरी दी गई।

निवेश प्रस्तावों को मंजूरी के बाद जल्द ही लेटर ऑफ कंफर्ट जारी किया जाएगा। मंत्री नन्दी ने कहा कि इन निवेश से प्रदेश को वन ट्रिलियन डालर की इकोनामी की ओर ले जाने में सहायता मिलेगी और वृहद रोजगार के अवसर उपलब्ध होंगे।

आईआईटी, आईआईएम करेंगे वैश्विक बाजार का अध्ययन

- लखनऊ : सरकार ने नीति में पहली बार मार्केट रिचर्स के लिए आइआइटी व आइआइएम जैसे संस्थानों में निर्यात चेयर की स्थापना का भी प्रविधान किया है। इनके जरिए दुनियाभर के बाजारों का अध्ययन करके उसकी रिपोर्ट सरकार को सौंपी जाएगी। पांच वर्षों में इस कार्य पर पांच करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। नीति में निर्यात प्रधान जिलों में मर्चेडाइज्ड ट्रेड फैसिलिटेशन केंद्र (एमटीएफसी) की स्थापना की जाएगी। इन केंद्रों की स्थापना पर 7.5 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। साथ गी गौतमबुद्ध नगर में सर्विसेस ट्रेड फैसिलिटेशन केंद्र की स्थापना पर 2.5 करोड़ रुपये खर्च करने का प्रविधान है।

स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन अब सेवारत विभाग में शामिल

- मंत्रिपरिषद बैठक में सरकार ने फैसला लेते हुए स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन विभाग को उत्तर प्रदेश सरकार के सेवारत विभाग में सम्मिलित कर दिया गया है। स्टाम्प एवं पंजीयन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रवींद्र जायसवाल ने बताया कि स्टाम्प एवं रजिस्ट्रेशन विभाग प्रदेश का एक अत्यंत महत्वपूर्ण विभाग है, जो हर वर्ष लगभग 40 लाख विलेखों का पंजीकरण करता है और जिसके माध्यम से दो करोड़ से अधिक लोग प्रत्यक्ष रूप से सेवाएं प्राप्त करते हैं। विभाग किसी प्रकार की वाणिज्यिक गतिविधि नहीं करता, बल्कि सरकार का संवैधानिक दायित्व निभाता है। इसे सेवारत विभाग का दर्जा मिलने से विभागीय कार्यालयों के लिए सरकार की अन्य सेवा विभागों की भांति नि:शुल्क भूमि उपलब्ध हो सकेगी। इससे निजी भवनों के किराये पर होने वाले व्यय में कमी आएगी और जनता के लिए पंजीकरण सेवाएं और सुलभ हो सकेंगी।

पुलिस का गैरकानूनी इस्तेमाल कर रही भाजपा सरकार: सपा

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव से मंगलवार को पार्टी के प्रदेश मुख्यालय लखनऊ में विभिन्न जिलों आए उलेमा-ए-इकराम के एक प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। उलेमा-ए-इकराम ने अखिलेश यादव को दोबारा मुख्यमंत्री बनने की दुआ की।

इस मौके पर उलमा-ए-इकराम में एक स्वर में कहा कि हम सभी लोग पूरी ताकत से सपा के साथ है। अखिलेश ने सभी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि सपा का सभी से एक भावनात्मक रिश्ता है। सपा प्रमुख ने कहा कि भाजपा सरकार अपने राजनीतिक फायदे के लिए पुलिस का गैरकानूनी

प्रदेश कार्यालय में उलेमा-ए-इकराम के एक प्रतिनिधिमंडल के साथ सपा प्रमुख अखिलेश।

- अखिलेश से उलेमा-ए-इकराम के प्रतिनिधिमंडल ने की मुलाकात

इस्तेमाल कर रही है।

अखिलेश ने कहा कि लोकसभा चुनाव की तरह विधानसभा चुनाव में भी सपा के नेताओं, कार्यकर्ताओं की बड़ी जिम्मेदारी है। लोकतंत्र, संविधान और वोट का अधिकार बचाने के लिए भाजपा से सावधान रहना होगा। इस मौके पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष किरनमय नंदा राष्ट्रीय सचिव राजेन्द्र चौधरी, प्रदेश अध्यक्ष श्याम लाल पाल और तेजंदर विर्क मौजूद रहे।

कांग्रेस-आरजेडी ने किया लोकतंत्र को भी कलंकित: बेबी रानी

- अमृत विचार, लखनऊ : भारतीय जनता पार्टी की वरिष्ठ नेत्री व बाल विकास पुष्टाहार एवं महिला कल्याण मंत्री बेबीरानी मौर्य ने मंगलवार को कहा कि कांग्रेस की तथाकथित वोट अधिकार यात्रा में बिहार के दरभंगा में जिस तरह से कांग्रेस-आरजेडी के मंच से प्रधानमंत्री मोदी की दिवंगत पूज्य माताजी को गाली दी गई, वह घोर निंदनीय और भर्त्सनीय है। हमारे लोकतंत्र को भी कलंकित करने वाला है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस की राजनीति अपने निम्न स्तर पर आ पहुंची है। यह अभद्रता की सारी सीमा लांघ चुके दो शहजादों का बिहार की धरती से बिहार की संस्कृति का अनादर भी है। बेबी रानी मौर्या ने प्रश्न किया कि क्या राहुल गाँधी तू-तड़ाक की भाषा का प्रयोग करके और अपने मंच से ऐसी गालियों को प्रोत्साहित करके, देश की मातृशक्ति को अपमानित करके अपना राजनैतिक स्वार्थ साधना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि यह केवल देश के प्रधानमंत्री की माताजी को गाली नहीं दी गई है, बल्कि यह गरीबी में मेहनत की पराकाष्ठा कर, अथक परिश्रम कर अपने बच्चों को पालने वाली, उन्हें अच्छा संस्कार देने वाली हर माँ का अपमान है।

महिला निवेशकों की भागीदारी से औद्योगिक परिदृश्य सशक्त

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- यूपीसीडा के आयोजित मेगा ई-नीलामी में औद्योगिक निवेश को नई गति मिली

अमृत विचार: उप्र. राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) के आयोजित मेगा ई-नीलामी में 15 महिला उद्यमियों, निवेशकों ने भागीदारी रही। विभिन्न जिलों के औद्योगिक क्षेत्रों में महिलाओं द्वारा की गई यह निवेश पहल, राज्य में नारी शक्ति मिशन के प्रभाव और आर्थिक सशक्तिकरण का प्रत्यक्ष उदाहरण है। यह दर्शाता है कि महिलाएं अब राज्य के औद्योगिक परिदृश्य में निर्णायक भूमिका निभा रही हैं।

दरअसल, यूपीसीडा द्वारा 29 अगस्त को आयोजित मेगा ई-नीलामी में औद्योगिक निवेश को एक नई गति मिली। इस मेगा ई-नीलामी के अंतर्गत कुल 46 औद्योगिक भूखंड 14 जिलों में आवंटित किए गए हैं। इन जिलों में हाथरस (1), बरेली (2), फिरोजाबाद (1), गाजियाबाद (1), हरदोई (2), अमेठी (4), कानपुर नगर (1), कानपुर देहात (1), हमीरपुर (5), मैनपुरी (3), मथुरा (20), फतेहपुर (2), बांदा (1) तथा झांसी (2) शामिल हैं।

इस नीलामी के माध्यम से राज्य को प्रस्तावित निवेश प्राप्त होगा, जिससे विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में नए उद्योग स्थापित होंगे और

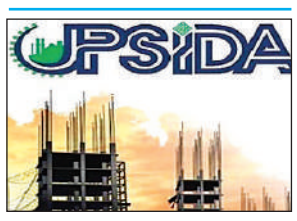

वेयरहाउस, पेट्रोल पंप और एक विद्यालय बनेंगे

- उप्र. राज्य औद्योगिक विकास प्राधिकरण (यूपीसीडा) औद्योगिक ढांचे को मजबूत और आधुनिक बनाने की दिशा में अग्रसर है। मंशा राज्य को 1 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य साधने की है। इस कड़ी में निवेश और औद्योगिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कुल 4 वाणिज्यिक भूखंड आवंटित किए गए हैं। इन भूखंडों पर 2 अत्याधुनिक वेयरहाउस, एक पेट्रोल पंप और एक विद्यालय की स्थापना की जाएगी।

राज्य के विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों में हजारों लोगों के लिए प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसर सृजित होंगे। यह परिणाम दर्शाता है कि उत्तर प्रदेश का औद्योगिक माहौल निवेशकों के लिए लगातार आकर्षण का केंद्र बन रहा है।

राजस्व मामलों के निस्तारण में लखनऊ अव्वल

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- अगस्त माह की रिपोर्ट: प्रयागराज दूसरे, गोरखपुर तीसरे और जौनपुर रहा चौथे स्थान पर
- कलेक्ट्रेट के न्यायालयों से जुड़े मामलों के निस्तारण में जौनपुर रहा सबसे आगे

अमृत विचार: राजस्व न्यायालय कंप्यूटरीकृत प्रबंधन प्रणाली (आरसीसीएमएस) द्वारा अगस्त माह की जारी रिपोर्ट में पूरे प्रदेश में सबसे अधिक राजधानी लखनऊ में मामलों को निस्तारित किया गया है, जबकि जिला स्तरीय न्यायालय में राजस्व के मामले निपटाने में एक बार फिर जौनपुर ने बाजी मारी है।

प्रदेश में राजस्व मामलों के त्वरित निस्तारण की दिशा में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की सख्त मॉनीटरिंग से बड़ा सुधार देखने को मिला है। जिला स्तरीय न्यायालयों में राजस्व वादों के निस्तारण में पिछले 10 माह से जौनपुर टॉप फाइल जिलों में बना हुआ है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के स्पष्ट निर्देश हैं कि राजस्व विवादों के मामलों को प्राथमिकता के आधार पर सुलझाया जाए।

राजस्व परिषद की आरसीसीएमएस की अगस्त माह की रिपोर्ट के अनुसार पूरे प्रदेश में कुल 3,69,293 राजस्व मामलों का निस्तारण किया गया। लखनऊ जिलाधिकारी विशाख जी अय्यर ने

बताया कि राज्य में सबसे अधिक राजधानी लखनऊ में 19,178 मामले निस्तारित किए गए। इसके बाद दूसरे स्थान पर प्रयागराज में कुल 10,693 मामले, तीसरे स्थान पर गोरखपुर में 9,560 मामले और चौथे स्थान पर जौनपुर ने 8,779 मामले निस्तारित कर चौथा और बाराबंकी ने 8,615 मामलों का निस्तारण कर पांचवां स्थान प्राप्त किया है।

जौनपुर के डीएम डॉ. दिनेश चंद्र सिंह ने बताया कि जौनपुर की पांच राजस्व न्यायालयों ने बोर्ड के निर्धारित मानक निस्तारण से अधिक मामलों का निस्तारण किया है। जिला न्यायालय में राजस्व मामलों के निस्तारण में प्रदेश में जौनपुर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

दूसरे स्थान पर लखीमपुर खीरी और तीसरे स्थान पर आजमगढ़ है। भू राजस्व संबंधित मामलों के निस्तारण में भी जौनपुर अव्वल है। इसी तरह अगस्त में मऊ के जिलाधिकारी न्यायालय ने निर्धारित 30 मामलों के मानक के मुकाबले 91 मामलों का निस्तारण कर 303.33 प्रतिशत की उपलब्धि हासिल की, जो की प्रदेश भर में सबसे अधिक है।

आरक्षण शासनादेश रद्द करने पर फैसला 4 को

अमृत विचार, लखनऊ (विधि संवाददाता): अम्बेडकर नगर, कन्नौज, जालौन व सहारनपुर के सरकारी मेडिकल कॉलेजों में आरक्षण के सम्बंध में पारित शासनादेशों को रद्द करने के एकल पीठ के निर्णय के विरुद्ध राज्य सरकार की विशेष अपील पर मंगलवार को सुनवायी पूरी होने के पश्चात हाईकोर्ट की लखनऊ बेंच ने अपना फैसला सुरक्षित कर लिया है। न्यायालय 4 सितम्बर को अपना फैसला सुनाएगी।

न्यायमूर्ति राजन रॉय व न्यायमूर्ति मंजीव शुक्ला की खंडपीठ के समक्ष मंगलवार को राज्य सरकार की अपील पर सुनवाई हुई।

रिश्वत लेने के आरोप में महोबा के जिला आबकारी अधिकारी सस्पेंड

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

- आबकारी मंत्री ने की कार्रवाई सोशल मीडिया पर वायरल हुआ का रिश्वत लेने का वीडियो

अमृत विचार : आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेंस नीति के तहत सख्त कदम उठाते हुए महोबा के जिला आबकारी अधिकारी राजेंद्र प्रसाद वर्मा को मंगलवार को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया है। वर्मा द्वारा रिश्वत लिए जाने से संबंधित वीडियो 26 अगस्त को सोशल मीडिया पर वायरल हुआ था।

वायरल वीडियो का संज्ञान लेते हुए आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने महोबा के जिलाधिकारी से जांच कराई। इसमें महोबा के जिला आबकारी अधिकारी राजेंद्र प्रसाद वर्मा प्रथम दृष्टया दोषी पाए गए हैं। आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने निलंबित किए जाने की पुष्टि करते हुए बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में प्रदेश सरकार जीरो टॉलरेंस नीति के तहत कार्य कर रही है। योगी सरकार भ्रष्टाचार के खिलाफ कठोर कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है। भ्रष्टाचारियों के लिए प्रदेश में कोई जगह नहीं है। जो भी भ्रष्टाचार करते हुए पाया जाएगा उसे सख्त से सख्त सजा दी जाएगी।

ई-खसरा पड़ताल | खरीफ सर्वे के लिए 5.49 करोड़ गाटे लंबित, चार दिन शेष, इस बार सर्वे से लेखपालों को मुक्त करने से कार्य प्रभावित

प्रदेश के 65,286 गांवों में अभी शुरू नहीं हुआ क्रॉप सर्वे

प्रशांत सक्सेना, लखनऊ

अमृत विचार : प्रदेश में डिजिटल क्रॉप सर्वे से मुक्त किए गए लेखपालों की कमी से खरीफ फसलों का आकलन संकट में पड़ गया है। ज्यादातर जिलों में कृषि विभाग के कर्मी, पंचायत सहायक व ग्राम रोजगार सेवकों के लिए सर्वे करना मुश्किल बना हुआ है। खासकर ग्राम रोजगार सेवकों ने पहले का बकाया भुगतान, पुराने मोबाइल, राजस्व की जानकारी न होना समेत तमाम समस्याएं बताकर हाथ खड़े कर दिए हैं।

ई-खसरा पड़ताल के तहत 15 अगस्त से शुरू हुए सर्वे में 6

सितंबर तक कुल 92,237 राजस्व ग्रामों के मैप 6,08,68,989 गाटा (प्लाट) में खड़ी फसलों का डिजिटल सर्वे होना है। इसके सापेक्ष 2 सितंबर तक 2,6951 ग्रामों में सर्वे शुरू हुआ है और 2,059 में सर्वे पूर्ण हो पाया है। 65,286 ग्रामों में कर्मियों ने सर्वे शुरू तक नहीं किया है। गाटों की बात करें तो 58,90,515 का सर्वे पूर्ण हुआ है। अभी भी 5,49,78,474 गाटे सर्वे करने के लिए लंबित हैं और चार दिन शेष बचे हैं। कुल प्रगति 2.23 फीसदी है।

मिर्जापुर, औरैया, बरेली टॉप पर, बलिया सबसे पीछे

- किसी भी जिले में 100 फीसदी क्रॉप सर्वे पूर्ण नहीं हो पाया है। सबसे खराब प्रगति गाजीपुर 8.34 फीसद, बस्ती 7.70 फीसदी, हाथरस 6.98 फीसद और बलिया की 6.94 फीसदी है। फिर भी इन हालात में मिर्जापुर 91.22 फीसदी प्रगति से पहले स्थान पर, अंबेडकनगर 90.74 फीसदी से दूसरे स्थान, औरैया 85.70 फीसद से तीसरे, बरेली 72.25 फीसद से चौथे व भदोही 71.75 फीसदी प्रगति से पांचवें स्थान पर है। लखनऊ 16.67 फीसदी प्रगति से 53वें स्थान पर है।

डिजिटल सर्वे ये मुख्य फायदे

- फसल का एरिया पता चलेगा, कौन-कौन सी फसलें होती हैं उसी आधार पर किसान क्रेडिट कार्ड बनेंगे और उसी अनुपात में फसली ऋण दिया जाएगा। बोई गई वास्तविक फसल का बीमा होगा। इसी आधार पर क्षतिपूर्ति मिलेगी। कोई योजना लांच करना, रिसर्ज करना या एफपीओ गठित करने में सही स्थिति का पता चलेगा।

लेखपालों को इस कार्य का अनुभव होता है। उन्हें सर्वे से मुक्त करने की वजह से प्रक्रिया प्रभावित हुई है। फिर भी अन्य कर्मियों से सर्वे कराया करा रहे है। समय बढ़ाया जा सकता है।

-अनिल कुमार सागर, स्टेट नोडल ऑफीसर, डिजिटल एग्रीकल्चर

मनरेगा एक्ट के अनुसार रोजगार सेवकों ने अन्य कार्य नहीं ले सकते हैं। इसे जॉब चार्ट में जोड़कर कराया जाए। अच्छे मोबाइल देकर प्रोत्साहन राशि बढ़ाएं। सुरक्षा की दृष्टि से बीमा भी कराया जाए।

-भूपेश कुमार सिंह, प्रदेश अध्यक्ष, ग्राम रोजगार सेवक संघ

न्यूज ब्रीफ

एनडीआरएफ का सर्च ऑपरेशन

रसूलाबाद। सोमवार दोपहर लगभग डेढ़ बजे ढकपुरवा निवासी सेवानिवृत्त रोडवेज बस चालक गोविंद सिंह (75) पुत्र पिंटू उर्फ जैनेंद्र सिंह के साथ खाद लेकर खेत पर खाद डालने जा रहे थे। निचली रामगंगा नहर पर बिना रेलिंग की रपटा पुलिया से गुजरते समय पैर फिसलने से उफनाती नहर में गिर गए थे। मंगलवार को एसडीआरएफ की टीम ने सर्च ऑपरेशन चलाया, मगर उनका पता नहीं चल सका। गोविंद सिंह की पत्नी विमला, पुत्र ज्ञानेंद्र सिंह, जैनेंद्र सिंह, जितेंद्र सिंह, पुष्पेंद्र सिंह, शैलेंद्र सिंह का बुरा हाल है। थाना प्रभारी हरमीत सिंह ने कहा कि तलाश की जा रही है।

अलमारी से नकदी जेवर ले गए चोर

कानपुर देहात। रनियां के मालवर निवासी कृष्ण कुमार तिवारी कस्बे की एक फैक्टरी में काम करते हैं। उनका पुत्र दीपक तिवारी भी प्राइवेट नौकरी करता है। सोमवार रात कृष्ण कुमार तिवारी बरामदे में सो रहे थे। बेटा गैलरी में सो रहा था। मां तारा अपनी बेटी के यहां गई थी। रात में चोर पीछे के रास्ते से आए। आंगन के कमरे का ताला तोड़ा और अलमारी का ताला खोलकर 20 हजार नकद और एक मंगलसूत्र, पायल सहित सवा लाख रुपये जेवरात ले गए। पुलिस ने छानबीन की। पुलिस जांच के लिए ताला ले गई है। थानाध्यक्ष एसएन सिंह ने बताया कि घटना की तहरीर नहीं मिली है। तहरीर मिलने के बाद कार्रवाई की जाएगी।

बयान से मुकरने पर गवाह पर जुर्माना

कानपुर देहात। रूरा थाने में दर्ज दुष्कर्म के मामले की सुनवाई के दौरान गवाह के बयान से मुकरने पर फास्ट ट्रैक कोर्ट ने 500 रुपये अर्थदंड लगाया है। सहायक शासकीय अधिवक्ता अजय कुमार त्रिपाठी ने बताया कि रूरा थाने में पिछले वर्ष दर्ज दुष्कर्म के मामले में फास्ट ट्रैक कोर्ट प्रथम सुरेन्द्र सिंह की अदालत में अभियोजन गवाही पर चल रही है। मंगलवार को पीड़िता ने अपने बयान दर्ज कराते हुए घटना का समर्थन किया, लेकिन आरोपी की ओर बचाव पक्ष की जिरह में वह घटना से मुकर गई। अदालत ने उस पर पांच सौ रुपए अर्थदंड लगाया वहीं अर्थदंड अदा न करने पर तीन दिन के कारावास की सजा सुनाई है।

मारपीट व छेड़खानी का मुकदमा दर्ज

रूरा। क्षेत्र के एक गांव की महिला ने गांव के ही चार लोगों के विरुद्ध पुत्री के साथ मारपीट व छेड़खानी का मुकदमा दर्ज कराया है। महिला ने बताया कि 27 अगस्त की रात पति घर पर नहीं थे। रात्रि करीब नौ बजे उसे तेज बुखार आ गया। पुत्री साइकिल से दवा लेने जा रही थी, तभी रास्ते में गांव के ही संतोष सिंह, सत्येंद्र सिंह, भोला कोरी, राजेंद्र ने पुत्री के साथ मारपीट व गलत नियत से बदतमीजी की। थानाध्यक्ष अमित शुक्ला ने बताया कि मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है।

मारपीट का मुकदमा

रूरा। क्षेत्र के गहलों गांव की रहने वाली गीता देवी ने थाने में तहरीर देकर बताया कि सोमवार की रात्रि करीब 8 बजे अपने घर के बाहर बैठी थी, तभी गांव का मनीष कुशवाहा नशे में आया और गालीगलौज करते हुए धारदार हथियार से हमला कर दिया। थानाध्यक्ष अमित शुक्ला ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर जांच की जा रही है।

शोभायात्रा की धूम

मैथा बाजार में बुढ़वा मंगल पर महावीर हनुमान और श्रीराम दरबार, राधा-कृष्ण, शंकर-पार्वती, राजा मकरध्वज की शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा के दौरान अघोरियों का नृत्य आकर्षण का केंद्र रहा। ठाकुरद्वारा से निकली शोभायात्रा पोस्ट ऑफिस, मैथा बाजार, ब्लॉक रोड होते हुए मांडा से शिव के तालाब मंदिर पहुंचकर समाप्त हुई। इस यात्रा का आयोजन बुढ़वा मंगल सेवा समिति की ओर ले किया गया, जिसमें हजारों की संख्या लोग शामिल हुए। शोभायात्रा के दौरान जय श्री राम के जयकारे गूंजते रहे। लोगों में उत्साह दिखा। ● अमृत विचार

बुढ़वा मंगल पर हनुमान मंदिरों में उमड़ी आस्था

संवाददाता, रसूलाबाद

अमृत विचार: भाद्रपद मास के अंतिम मंगलवार यानी बुढ़वा मंगल को कस्बे में जगह-जगह लोगों ने भंडारों का आयोजन किया, जिसमें पूड़ी-सब्जी के रूप में महाप्रसादी वितरित की गई। श्रद्धालुओं ने श्रद्धापूर्वक महाप्रसादी ग्रहण की।

बुढ़वा मंगल पर श्रद्धालु सुबह से ही बजरंगबली के मंदिरों में पहुंच गए और कतार लगाकर दर्शन और पूजन-अर्चन किया। हनुमान जी को घी और चमेली तेल से मिला हुआ चोला भेंट कर मालपुआ व लड्डुओं का भोग लगाया और प्रसादी वितरित की। कस्बे के मुख्य चौराहे आजाद चौक स्थित नागेश्वर महादेव मंदिर के समीप क्षेत्रीय व्यापारियों की ओर से विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। वहीं कानपुर रोड पर केशव नगर स्थित पुरानी टॉकीज के समीप श्रद्धालु भक्तों शरद मिश्रा, मनु गुप्ता, नीरज गुप्ता, अजय शर्मा, मोहन गुप्ता, अश्विनी चौहान, बृजनंदन गुप्ता, राज कुशवाहा आदि लोगों ने भंडारे का आयोजन किया, जिसमें लोगों ने महाप्रसादी के रूप में सब्जी-पूड़ी ग्रहण की।

धनीरामपुर के बालाजी मंदिर में सुरक्षा व्यवस्था देखतीं एसपी। अमृत विचार

एसपी ने मंदिरों में देखी सुरक्षा व्यवस्था

■ **कानपुर देहात।** बुढ़वा मंगल पर सुबह से ही हनुमान मंदिरों में आस्था उमड़ पड़ी। पुलिस अधीक्षक श्रद्धा नरेन्द्र पाण्डेय ने बुढ़वा मंगल पर रूरा क्षेत्र के धनीरामपुर स्थित बालाजी जी धाम और विभिन्न मंदिरों का दौरा कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने मंदिर परिसरों में तैनात पुलिस को सतर्कता बरतने के निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस बल की ड्यूटी, श्रद्धालुओं की सुरक्षा, यातायात व्यवस्था का निरीक्षण किया। पुलिस अधीक्षक ने अधीनस्थ पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिए कि श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा में किसी भी तरह की लापरवाही नहीं होनी चाहिए। उन्होंने श्रद्धालुओं से भी अपील की कि वे शांतिपूर्वक कतार में लगकर दर्शन-पूजन करें और सुरक्षा व्यवस्था दुरुस्त रखने में पुलिस प्रशासन का सहयोग करें। उन्होंने यह भी अपील की कि किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी होने पर तत्काल पुलिस को सूचना दें।

इसी प्रकार सुभाष नगर स्थित महादेवन मंदिर में भी भंडारे का आयोजन पूर्व प्रधान बाबूलाल चौहान ,गदन मिश्रा, बब्बन पांडेय, गंगाचरन दीक्षित, छान बाजपेई, शशिकांत मिश्रा, आदि लोगों के सहयोग से भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें आने जाने वाले रहागीरों के अतिरिक्त श्रद्धालु भक्तों ने सब्जी-पूड़ी ग्रहण की।

पोस्टमार्टम रिपोर्ट से उलझी मामी-भांजे की मौत की गुत्थी

आखिर दोनों का कातिल कौन सुराग लगाने में जुट गई पुलिस

मामी का घोटा गया गला, भांजे की हैंगिंग से हुई मौत, दोनों की मौत में 2 घंटे का अंतर

अमृत विचार Follow UP

संवाददाता, रसूलाबाद

मंगलवार को बहेलियनपुरवा की गलियों में पसरा रहा सन्नाटा। अमृत विचार

अमृत विचार: क्षेत्र के बहेलियन पुरवा मजरे बिरहुन में सोमवार सुबह घर में एक साथ मिले मामी-भांजे के शवों के मामले में नया मोड़ आ गया है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद मौत की गुत्थी उलझ गई है। दरअसल, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद यह बात साफ हो गई है कि मामी को गला घोटकर मारा गया, जबकि भांजे की मौत हैंगिंग से हुई। दोनों की मौत दो घंटे के अंतराल में हुई। जहर की पुष्टि के लिए बिसरा सुरक्षित किया गया है।

रविवार की शाम 5 बजे कन्नौज जिले के छिबरामऊ थाना क्षेत्र के निगोह गांव का इंद्रेश कुमार अपने मामा सुखराम के घर बहेलियन पुरवा पहुंचा था। गांव के किनारे नए मकान में सुखराम की पत्नी मीना उर्फ मन्नू (35) और उसके बच्चे बड़ी बेटी वर्षा (11), श्रेजल (9) अर्पित (6) और ऋतिक (3) थे। रात में खाना खाकर बच्चे सो गए। सोमवार सुबह पहले उठी बड़ी बेटी वर्षा ने मां को जगाने का प्रयास किया था, लेकिन काफी देर तक हिलाने पर भी जब वह नहीं उठी तो उसने गांव वालों को बताया था।

मौके के हालात बयां कर रहे थे कि रात में किसी बात को लेकर झगड़ा होने पर इंद्रेश ने ही मामी मीना की गला घोटकर हत्या कर दी और फिर खुद जहर खाकर जान दे दी। मीना का शव चारपाई पर पड़ा था। उसके गले में दुपट्टा भी कसा था, जबकि इंद्रेश दीवार के सहारे बैठे हालत में मिला था। इन परिस्थितियों से पहले मामी का गला घोटने और फिर खुद आत्महत्या के कयासों को मजबूती मिल रही थी, लेकिन मंगलवार को आई पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पूरा घटनाक्रम ही बदल गया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के मुताबिक मीना की गला घोटकर हत्या की गई, जबकि भांजे इंद्रेश की मौत हैंगिंग यानी फांसी पर लटकने से हुई है। दोनों की मौत के बीच 2 घंटे का अंतराल रहा। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद पुलिस भी मौत की गुत्थी सुलझाने में उलझ गई है। थाना प्रभारी हरमीत सिंह ने पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मीना की गला दबाकर हत्या किए जाने और भांजे इंद्रेश की हैंगिंग से मृत्यु होने की पुष्टि होने की बात स्वीकार की है। उनका कहना है कि पुलिस ने पूरे मामले की गहराई से तहकीकात शुरू कर दी है।

तफ्तीश शुरू

संवाददाता, रसूलाबाद

अमृत विचार: पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद यह बात साफ हो गई है कि भांजे ने मामी की हत्या करने के बाद खुदकुशी नहीं की, बल्कि दोनों की हत्या की गई है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में दोनों की हत्या की पुष्टि होने के बाद पुलिस अब कातिल तक पहुंचने के लिए गहराई से मामले की तफ्तीश में जुट गई है। पुलिस का कहना है कि जल्द खुलासा होगा।

मीना उर्फ मन्नू।

यह भी माना जा रहा है कि दोनों की हत्या में एक नहीं, बल्कि कई लोगों का हाथ है। कोई एक व्यक्ति दो लोगों की हत्या नहीं कर सकता। रात में खाना खाने के बाद बच्चे सो गए थे, इसलिए इंद्रेश के अलावा किसी और के घर आने के बारे में वे कुछ नहीं बता पा रहे हैं। सीओ सौरभ वर्मा का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट चौंकाने वाली है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर मामले की जांच की जाएगी। यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि आखिर रात में घर कौन पहुंचा और किसने दो हत्याएं कीं।

● मकान के ऊपर से गुजरी बिजली की लाइन से हुआ हादसा

● हादसे की सूचना पर अस्पताल पहुंची मुस्करा पुलिस

पोस्टमार्टम कराने का हुआ था विरोध

■ सोमवार को घर में एक साथ मामी-भांजे के शव मिलने के बाद पोस्टमार्टम कराने का विरोध हुआ था। गांव के कुछ लोगों ने शवों का पोस्टमार्टम कराने का खुला विरोध किया था, लेकिन पुलिस ने गांव वालों को समझा-बुझाकर पंचनामा भरने के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था। अब मामला सीधे दोनों की हत्या से जुड़ा होने का सामने आने के बाद पुलिस की नजर उन लोगों पर टिक गई है, जो दोनों शवों का पोस्टमार्टम नहीं करवाने का दबाव बना रहे थे। माना जा रहा है कि पोस्टमार्टम नहीं कराने का दबाव बनाने वालों का इस हत्याकांड में हाथ हो सकता है।

इंद्रेश का शव कन्नौज ले गए परिवार वाले

■ मामी के साथ इंद्रेश की मौत की खबर सुनकर उसके पिता मानसिंह यहां पहुंचे। पोस्टमार्टम होने के बाद इंद्रेश का शव उसके परिवार वाले अपने गांव निगोह (कन्नौज) ले गए, जबकि मामी मीना का शव परिवार वाले गांव लाए और फिर नानामऊ घाट पर उसका अंतिम संस्कार किया गया। मीना की हत्या से सुखराम के भाई रामा, राधेश्याम और मानसिंह स्तब्ध हैं। ये सभी भाई गांव के पुराने वाले मकान में रहते हैं। मीना की सास विद्यावती घटना वाली रात अपनी बड़ी बहू के यहां सोई थी।

किशोरी से दुराचार में युवक को 10 वर्ष कैद

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

● अकबरपुर थाना क्षेत्र में 4 मार्च 2018 को हुई थी वारदात

अमृत विचार: अकबरपुर क्षेत्र के एक गांव से किशोरी को बहलाकर ले जाने व दुष्कर्म करने के मामले की सुनवाई करते हुए पॉक्सो कोर्ट ने आरोपी युवक को दोषी ठहराते हुए उसे दस साल कठोर कारावास की सजा सुनाई इसके साथ ही उसपर अर्थदंड भी लगाया है।

विशेष लोक अभियोजक विकास सिंह ने बताया कि अकबरपुर क्षेत्र के एक गांव निवासी पीड़िता के पिता ने पुलिस में रिपोर्ट दर्ज कराई थी इसमें बताया था कि 4 मार्च 2018 को वह अपनी पत्नी के साथ खेतों में काम करने गया था। उसकी पुत्री घर पर अकेले थी उसी दौरान उसके गांव में रघुवीर के मकान में रहने वाला किरायेदार कौशांबी क्षेत्र के अड़हरा करारी निवासी राजेश उसकी पुत्री को बहला फुसलाकर भगा ले गया है। पुलिस ने मामले की विवेचना करते हुए किशोरी की तलाश कर आरोपी युवक राजेश को जेल भेज दिया था इसके साथ ही उसके खिलाफ दुष्कर्म व पॉक्सो एक्ट में आरोपपत्र अदालत में पेश किए थे। मामले की सुनवाई अपर जिला जज 13/पॉक्सो एक्ट शरद कुमार त्रिपाठी की अदालत में चल रही थी मंगलवार को अदालत ने मामले की सुनवाई करते हुए दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद आरोपी युवक को दोषी करार देते हुए उसे दस साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई इसके साथ ही उस पर बीस हजार रुपये अर्थदंड भी लगाया है। वहीं अर्थदंड अदा न करने पर एक माह का अतरिक्त कारावास काटने के आदेश दिए हैं।

डीजल-पेट्रोल चोर गिरोह हत्थे चढ़ा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचार: अकबरपुर और रूरा पुलिस की संयुक्त टीम ने डीजल व पेट्रोल चोरी करने वाले एक संगठित गिरोह का पर्दाफाश किया है। पुलिस ने गिरोह के पांच सदस्यों को धर दबोचा, जिनके कब्जे से भारी मात्रा में तेल और चोरी में इस्तेमाल होने वाले उपकरण भी बरामद किए गए।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार यह गैंग लंबे समय से हाईवे पर खड़े ट्रकों को निशाना बना रहा था। आरोपी रात के समय मौके का फायदा उठाकर वाहनों के टैंकों का ताला तोड़ते और उसके बाद पाइप व पंप के जरिए डीजल और पेट्रोल निकालकर अपने वाहनों में भर लेते थे। चोरी का माल बाद में औने-पौने दाम पर डीजल पंप संचालकों और ठेकेदारों को बेच दिया जाता था। इससे न केवल ट्रक ड्राइवरों को नुकसान उठाना पड़ता था, बल्कि अवैध कारोबार से बदमाशों की अच्छी कमाई भी हो रही थी।

पुलिस की संयुक्त टीम के हत्थे चढ़े गिरोह के पांच सदस्य। अमृत विचार

छापेमारी के दौरान पुलिस ने इनके पास से एक डीसीएम वाहन, पंप, पाइप, पेचकस सहित लगभग 215 लीटर डीजल बरामद किया है। पकड़े गए आरोपियों की पहचान शाहजाद, मनीष, मुन्नवर, सुभान और इजराइल के रूप में हुई है।

पूछताछ में सामने आया कि यह सभी आरोपी पेशेवर अपराधी हैं और इनके खिलाफ विभिन्न जनपदों में चोरी, लूट और आर्म्स एक्ट के कई गंभीर मामले दर्ज हैं। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि गिरोह की गतिविधियों पर काफी समय से नजर रखी जा रही थी। मुखबिर से मिली सूचना के बाद संयुक्त टीम ने घेराबंदी कर सभी को गिरफ्तार कर लिया। फिलहाल आरोपियों से और पूछताछ की जा रही है, ताकि पूरे नेटवर्क का खुलासा किया जा सके। एसपी श्रद्धा नरेंद्र पांडेय ने कहा कि यह कार्रवाई पुलिस की सतर्कता और बेहतर समन्वय का परिणाम है। आरोपियों को जेल भेजा जा रहा है। इनके आपराधिक इतिहास की भी गहन पड़ताल की जा रही है। उन्होंने कहा कि इस तरह के अपराधों पर सख्त कार्रवाई आगे भी जारी रहेगी।

मुठभेड़ में दो ट्रैक्टर ट्रॉली चोर गिरफ्तार

संवाददाता, राजपुर

● राजपुर और सिकंदरा क्षेत्र से चोरी हुई थीं तीन ट्रॉलियां

अमृत विचार: पुलिस ने सोमवार देर रात मुठभेड़ के दौरान दो शातिर टैक्टर ट्राली चोरों को गिरफ्तार किया, जिनके कब्जे से चोरी की तीन ट्रॉली, एक महिन्द्रा ट्रैक्टर के साथ तमंचा, कारतूस बरामद हुए। पुलिस की गोली लगने से एक शातिर चोर घायल हो गया।

पुलिस के मुताबिक सिकंदरा व राजपुर क्षेत्र में ट्राली चोरी के तीन केस दर्ज थे। पुलिस कई दिनों से संदिग्धों की तलाश में जुटी थी। सोमवार देर रात मुखबिर से सूचना मिली कि खोजा रामपुर गांव के पास जंगल में कुछ लोग ट्रैक्टर व ट्राली जालौन की ओर ले जाने की फिराक में है। पुलिस ने जब पीछा किया तो शातिर जंगल की तरफ भागने लगे। पुलिस ने पीछा कर सिलहरा निवासी गोविन्द तिवारी को पकड़ लिया जबकि दूसरा झांसी जिले के समथर थाने के चिरगांव निवासी राघवेंद्र उर्फ अप्पू ने घिरता देखकर फायरिंग कर दी। मुठभेड़ के दौरान पुलिस की गोली पैर में लगने से राघवेंद्र उर्फ अप्पू घायल हो गया, जिसे गिरफ्तार कर लिया गया।

मुठभेड़ की सूचना पर सीओ प्रिया सिंह पहुंची। पूछताछ में दोनों ने सिकंदरा व राजपुर क्षेत्र से चोरी की तीन ट्रैक्टर ट्रालियां, चोरियों में प्रयुक्त एक ट्रैक्टर, एक तमंचा, तीन जिंदा कारतूस, एक खोखा बरामद हुए हैं। पुलिस ने बताया कि मुठभेड़ में गोली लगने से घायल राघवेंद्र उर्फ अप्पू को मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। अप्पू पर कई मुकदमे दर्ज हैं, जिसकी क्राइम हिस्ट्री खंगाली जा रही है।

गूंजती रहीं तालियां

कुश्ती जीतने वाले पहलवानों को 21 हजार से 51 हजार रुपये तक दिया गया इनाम

दंगल में पहलवानों ने अनोखे दांव लगाकर भरा रोमांच

कार्यालय संवाददाता, कानपुर देहात

अमृत विचार: मलासा ब्लाक के सनाया साल वाहन गांव में दंगल का आयोजन हुआ। स्वर्गीय पच्चू भठीया की स्मृति में आयोजित इस दंगल को लेकर ग्रामीणों में उत्साह देखने को मिला। दंगल में स्थानीय एवं गैरजिलों के पहलवानों ने अपना दमखम दिखाया।

लेवामऊ के बीडीसी सदस्य सल्लू पहलवान ने बताया कि दंगल का शुभारंभ बच्चों की कुश्ती करवाते हुए किया गया। इसके बाद बडे. पहलवानों की कुश्तियां करवाई गईं। कुश्ती दंगल में पहुंचे अतिथियों का माला, पहनाकर प्रतीक चिह्न देते हुए सम्मान किया गया। खेलों से हमारा मानसिक एवं शारीरिक विकास होता है। गांव में आयोजित हुए विशाल कुश्ती दंगल और असामाजिक तत्वों पर नजर बनाए रखी। जहां कुश्ती दंगल में तय समय से ज्यादा चली कुश्ती में बराबरी रहने पर पहलवानों को बराबर इनाम दिया गया। दंगल में 21 हजार रुपये से लेकर 51 हजार रुपये से अधिक इनाम की कुश्तियां करवाई गई। जहां विजेता पहलवानों को उपहार देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर बीडीसी सदस्य सल्लू पहलवान, रवि सिंह मलासा, दीपू सिंह , नेत्रपाल सिंह परिहार, राज वीर गौर सनाया सलवान, विजय सिंह, कल्लू यादव फौजी, प्रधान जफराबाद, लल्लू सिंह फौजी, बलवान सिंह यादव फौजी शंकर सिंह पत्रकार मलासा आदि लोग मौजूद रहे हैं।

सनाया साल वाहन गांव में कुश्ती शुरू कराते आयोजक।

जैनपुर के मेले में चूड़ी-कंगन खरीदतीं महिलाएं। अमृत विचार

चिमचिम और नेपाल के रस थापा ने दी पटखनी

■ रूरा क्षेत्र के काशीपुर हनुमान गढ़ी में बुढ़वा मंगल पर दंगल हुआ। दंगल में कुश्ती के दांव-पेच दिखाते हुए दर्शकों को रोमांचित किया। पहली कुश्ती में सहारनपुर के मौसम अली ने गोल्ता पहलवान मेरठ को हराया। दूसरी कुश्ती में नेपाल के रस थापा ने काला चीता हिमांचल को हराकर 21 हजार रुपये का इनाम जीता। चिम चिम आदिवासी ने लोनी के तूफान को पटखनी दी। आयोजक हेमू सिंह ने बताया कि दंगल में दिल्ली, हरियाणा, झांसी, नेपाल, पंजाब से पहलवान आए है। दर्शकों ने तालियां बजाकर हौसला बढ़ाया।

मेले में महिलाओं ने खरीदी कंगन-चूड़ी

■ **राजपुर।** जैनपुर स्थित हनुमान मंदिर में बुढ़वा मंगल पर एक माह चलने वाला मेला शुरू हो गया। एमएलसी अविनाश सिंह चौहान व विधायक महेश त्रिवेदी के पुत्र शुभम त्रिवेदी ने फीता काटा। मंदिर में क्षेत्रीय लोगों के अलावा जालौन के सैकड़ों भक्तों ने झंडे चढ़ाए और हलुआ पूड़ी व गुलगुलों का भोग लगाया। सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी। ड्रोन कैमरे से निगरानी की गई। यहां अस्थाई पुलिस चौकी स्थापित की गई है। सिकंदरा सीओ प्रिया सिंह ने जायजा लिया। महिलाओं ने पसंद के कंगन और चूड़ियां खरीदीं।

गणपति बप्पा की विदाई में खूब उड़ा अबीर-गुलाल, गूंजते रहे जयकारे

अबीर-गुलाल की फुहार के बीच भक्ति भाव में डूबे श्रद्धालु। अमृत विचार

रथ पर सवार होकर निकले गणपति।

संवाददाता, रसूलाबाद

अमृत विचार: मंगलवार को कहिंजरी बस स्टॉप के पास जय भोले भंडारी सेवा समिति की ओर से चल रहा गणेश महोत्सव सम्पन्न हो गया। गणेश महोत्सव के समापन पर धूमधाम से विसर्जन यात्रा निकाली गई। विदाई यात्रा के दौरान गणपति बप्पा मोरया के जयकारों के साथ अबीर-गुलाल की फुहार हुई। रिंद नदी में गणपति प्रतिमा का विसर्जन किया गया।

गणपति बप्पा की प्रतिमा का जुलूस पूरे कस्बे के प्रमुख मार्गों एवं गलियों से होकर रिन्द नदी के तट पर पहुंचा, जहां लोगों ने नम आंखों के साथ गणपति को विदाई दी और उनकी प्रतिमा का विसर्जन किया गया। रास्ते में डीजे की धुनों पर युवक युवतियां थिरके और गणपति बप्पा मोरया अगले बरस तू आ जाना के उद्घोष करते रहे। इस मौके पर गणेश महोत्सव आयोजन समिति के लोगों में कुंवर सिंह सेंगर ,राघव बाजपेई, सचिन गुप्ता, रमाकांत शुक्ला ,मनीष शुक्ला ,बृजेंद्र यादव, लोकेश यादव, राजेश सिंह, अंकुश चौहान, चौकी इंचार्ज योगेंद्र शर्मा व पुलिस बल बराबर मौजूद रहा।

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार 3 सितंबर 2025

न्यूज ब्रीफ

ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन हुए बरामद

कानपुर। ककवन के कस्बा विषधन में रहीमपुर के कृष्ण मेडिकल हॉल में औषधि निरीक्षक रेखा सचान ने टीम के साथ छापेमारी की। टीम को प्रदीप कुमार के स्वामित्व व संचालन में फर्म कृष्णा मेडिकल हॉल पर जांच में स्टील की बड़ी टंकी में पशुओं का दूध उतरने में प्रयुक्त होने वाला प्रतिबंधित ऑक्सीटोसिन इंजेक्शन बरामद हुआ है, जिसका मूल्य लगभग एक लाख रुपया है। मौके से प्रतिबंधित औषधि को सीज किया गया। चार दवाओं के नमूने जांच व विश्लेषण के लिए संग्रहित किया गया।

छह निरीक्षकों के एसपी ने किये तबादले

कन्नौज। एसपी विनोद कुमार ने छह इंसपेक्टरों के स्थानांतरण कर दिये हैं। पुलिस लाइन से हेमंत सिंह को प्रभारी मीडिया सेल व त्रिनेत्र प्रकोष्ठ की जिम्मेदारी दी गईहै। प्रभारी शिकायत प्रकोष्ठ धर्मराज को अपराध शाखा भेजा गया है। इस के अलावा पुलिस लाइन से दिनेश कुमार को प्रभारी शिकायत प्रकोष्ठ की जिम्मेदारी दी गई है। सचिन कुमार को अपराध शाखा, बीरेंद्रविक्रम सिंह को प्रभारी चुनाव प्रकोष्ठ व रणजीत सिंह को अतिरिक्त निरीक्षक बनाकर कोतवाली तिर्वा भेजा गया है।

सांप के डसने से बच्ची की मौत

कन्नौज। मां व भाईके साथघर में सो रही बच्ची को जहरीले सांप ने डस लिया। परिजन अस्पताल लेकर पहुंचे जहां मौत की पुष्टि की गई। ठठिया थाना क्षेत्र के रूरा गांव निवासी जैनव एक वर्ष अपनी मां कुलसुम व तीन वर्ष के भाई अरकान के साथ घर के अंदर सो रही थी। रात करीव एक बजे जैनम के गले में जहरीले सांप ने डस लिया। बच्ची के रोने की आवाज सुन कर मां जागी तो देखा कि बच्ची के गले में सांप के काटने का निशान था। मकान के कमरे में देखा तो एक सांप तेजी से भाग रहा था। पुष्टि होने के बाद परिजन उसे लेकर अस्पताल पहुंचे जहां डाक्टरों ने जांच के बाद बच्ची के मौत की पुष्टि की।

परिजनों से नाराज युवती ने गटका जहर

हमीरपुर। कस्बे के वार्ड नंबर 10 में परिजनों से नाराज 21 वर्षीय युवती ने जहरीला पदार्थ का सेवन कर लिया। हालत गंभीर होने पर परिजन सीएचसी लाए, जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद हालत नाजुक देख जिला अस्पताल रेफर कर दिया। कस्बे के वार्ड नंबर 10 निवासी राम अवतार कबीर की पुत्री कुमकुम (21) ने मंगलवार की सुबह 9:30 बजे जहरीला पदार्थ का सेवन कर लिया।

दो महीने पहले घर से भागी युवती बरामद

हमीरपुर। कुनहेटा चौकी क्षेत्र के एक गांव की युवती को गांव का ही युवक दो महीना पहले अपने साथ बहला कर ले गया था। युवती के पिता ने युवक के खिलाफ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस दोनों प्रेमी युगल की तलाश में लगी रही। सोमवार को युवती बसवारी मोड़ में आकर खड़ी थी। मुखबिर की सूचना पर कुनहेटा चौकी प्रभारी रविंद्र कुमार उसको बरामद कर थाने ले आए। महिला पुलिस ने युवती के बयान लेने के बाद अदालत में पेश किया। कुनहेटा चौकी प्रभारी ने बताया कि युवक की तलाश की जा रही है। युवती को वन स्टाप सेंटर में रखकर मेडिकल परीक्षण कराया जाएगा।

क्षेत्र के रघुनाथपुर गांव में मंगलवार सुबह हुई घटना, परिजनों का रो-रो कर हाल-बेहाल

बिजली गिरने से पिता-पुत्र की गई जान

संवाददाता, चौबेपुर

अमृत विचार। क्षेत्र के रघुनाथपुर (इंदलपुर जुगराज) गांव में मंगलवार सुबह खेत पर गए पिता पुत्र की बिजली गिरने से उसकी चपेट में आने से मौत हो गई। हादसे की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। वहीं पूरे गांव में शोक की लहर दौड़ गई। सूचना पर थाना पुलिस मौके में पहुंची। पुलिस ने पंचनामा के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। वहीं घटना की जानकारी पर एसडीएम बिल्हौर भी गांव गए और परिजनों को यथासंभव मदद का भरोसा दिया।

रघुनाथपुर गांव निवासी ओमप्रकाश कठेरिया खेती बाड़ी के साथ ट्रैक्टर चलाकर करके परिवार का भरण पोषण करते थे। परिवार में पत्नी रेनू, दो बेटियां रिया व रागिनी के अलावा बेटा अंश (14) तीनों बच्चों में बड़ा था और क्षेत्र स्थित विद्यालय में कक्षा 8 का छात्र था।

मंगलवार सुबह ओमप्रकाश अपने बेटे अंश के साथ कार्यवश खेत पर गए थे। तभी करीब 7 बजे तेज बारिश के दौरान अचानक बिजली गिरने से पिता पुत्र उसकी चपेट में आ गये। काफी देर तक घर वापस न लौटने पर परिजन खेत पर पहुंचे। वहां पर दोनों को अचेत अवस्था में पड़ा देख परिजन उन्हें उपचार के लिए निकट के एक चिकित्सक के पास लेकर गए। चिकित्सक ने उनकी गंभीर हालत देख कर उन्हें हैलट कानपुर रेफर कर दिया लेकिन अस्पताल पहुंचने से पहले ही दोनों की सांसें थम गईं।

घटना की जानकारी से घर में कोहराम मच गया। सूचना पर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और पंचनामा के बाद शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। एक साथ पिता पुत्र की मौत की जानकारी पाकर दोपहर एसडीएम बिल्हौर डॉ संजीव कुमार दीक्षित भी रघुनाथपुर गांव पहुंचे और घटना पर दुख जताया। साथ ही पीड़ित परिवार को शासन स्तर से मिलने वाली यथा संभव मदद का भरोसा दिया। वहीं प्रभारी निरीक्षक राजकुमार सिंह राठौर ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत का कारण स्पष्ट हो सकेगा।

मृतकों के घर के बाहर लगी ग्रामीणों की भीड़ अमृत विचार

पीड़ित परिवार के घर पहुंचे एसडीम बिल्हौर डॉ संजीव कुमार दीक्षित। अमृत विचार

- घर पहुंचे एसडीएम ने सहायता राशि दिलाने का दिया आश्वासन

ओमप्रकाश।

अंश।

घटना से पूरा गांव शोक में डूबा

- **चौबपुर।** रघुनाथपुर गांव में मंगलवार सुबह पिता पुत्र की एक साथ हुई मौत से परिजनों का रो रोकर हाल-बेहाल बना है। मृतक ओम प्रकाश के भाई राम प्रकाश, रामकुमार व हरी लाल ने बताया कि भाई के परिवार में केवल वही कमाने वाले थे। बच्चे अभी छोटे हैं। बेटे को पढ़ा लिखा कर वह काबिल बनना चाहते थे। लेकिन ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था। घटना में पिता पुत्र दोनों की मौत हो जाने से परिवार के समक्ष आर्थिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गई है।घटना से पूरा गांव शोक में डूब गया है। दरवाजे पर रखे पिता -पुत्र के शव व पारिवारिक जनों को बिलखता देख गांव के हर शख्स की आंखें नम थीं।

गणपति विसर्जन में उमड़ी भीड़, डीजे को लेकर बवाल

संवाददाता, बिल्हौर

अमृत विचार। मंगलवार को बिल्हौर तहसील क्षेत्र में गणेश चतुर्थी महोत्सव का धूमधाम से समापन हुआ। इस दौरान बिल्हौर, मकनपुर और हिलालपुर सहित कई कस्बों में गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन किया गया। विसर्जन यात्राओं में भक्तों की भारी भीड़ रही।

बिल्हौर कस्बे में लोगों ने कृष्ण नदी के तट पर प्रतिमाओं का विसर्जन किया। मकनपुर और हिलालपुर में भी विशाल विसर्जन यात्राएं निकाली गईं, जिनमें पूर्व सांसद अंजू बाला समेत कई गणमान्य लोग शामिल हुए। इस मौके पर शंकर कटियार, अनुज द्विवेदी, अश्वनी कटियार, आंनद द्विवेदी रहे।

डीजे पर पाबंदी को लेकर हुआ हंगामा : गणेश विसर्जन के दौरान मकनपुर में डीजे बजाने पर पुलिस द्वारा पाबंदी लगाने से गणेश महोत्सव समिति के लोग भड़क गए। उन्होंने विसर्जन यात्रा को रोक दिया और वरिष्ठ अधिकारियों को बुलाने की मांग करने लगे। इसकी सूचना मिलने पर स्थानीय विधायक राहुल बच्चा सोनकर मौके पर पहुंचे और उन्होंने लोगों को समझा-बुझाकर यात्रा को फिर से शुरू करवाया। समिति के सदस्यों का आरोप था कि पुलिस ने जानबूझकर डीजे बजाने पर रोक लगाई है, जबकि पुलिस अधिकारियों का कहना है कि पीस कमेटी की बैठक में पहले ही यह तय हो चुका था कि विसर्जन यात्रा में डीजे और दो से अधिक साउंड का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा। इस दौरान विधायक राहुल बच्चा सोनकर और पुलिस कर्मियों के बीच बहस हुई, लेकिन प्रशासन के नियमों के अनुसार ही विसर्जन यात्रा को संपन्न कराया गया। विधायक ने कहा कि यात्रा सुचारू रूप से चल रही है और भविष्य में भी नियमों का पालन किया जाएगा।

'नियमों की जानकारी नहीं दी जाती'

- इस घटना पर टिप्पणी करते हुए विधायक राहुल बच्चा सोनकर ने आरोप लगाया कि पीस कमेटी की बैठक में हिंदू समाज के लोगों को ठीक से बुलाया नहीं जाता और न ही उन्हें नियमों की जानकारी दी जाती है। उन्होंने चेतावनी दी कि भविष्य में किसी भी समुदाय के कार्यक्रम में दो से अधिक लाउडस्पीकर मिलने पर वे भारी संख्या में प्रदर्शन करेंगे और मकनपुर कस्बे में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाएगा।

जरिया रोड पर खून से सना मिला बाइक सवार का शव

संवाददाता, सरीला (हमीरपुर)

- स्नातक का छात्र था सरीला कस्बे का रहने वाला युवक

अमृत विचार: जरिया रोड पर 20 वर्षीय बीए के छात्र का शव खून से लथपथ पड़ा मिला। पास में ही उसकी बाइक पड़ी थी। लोगों ने आशंका जताई है कि पेड़ से टकराकर उसकी मौत हुई है। राहगीरों की सूचना पर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

अरुण यादव।

कस्बे के जरिया रोड पर सोमवार देर रात बिलायती बबूल का पेड़ गिर गया था। वहीं पास में मंगलवार सुबह राहगीरों को युवक का शव खून से लथपथ पड़ा मिला, जिससे हड़कंप मच गया। पास में ही युवक का मोबाइल और बाइक भी पड़ी मिली। राहगीरों ने इसकी सूचना पुलिस को दी। पुलिस चौकी प्रभारी दिनेश प्रसाद मौर्य ने मौके पर पहुंच कर जांच-पड़ताल की और वहां मौजूद लोगों से शव की शिनाख्त कराने का प्रयास किया। पुलिस ने नगर पंचायत की जेसीबी मंगवाकर पेड़ हटवाया। लगभग एक घंटे बाद कस्बे के गुरुदेवपुरा मोहल्ला निवासी पवन कुमार ने युवक की शिनाख्त अपने पुत्र अरुण यादव (20) के रूप में की। पवन कुमार यादव ने बताया कि अरुण सोमवार की देर रात लगभग 10 बजे खाना खाने के बाद घर के बाहर दरवाजे पर दोस्तों के साथ बैठा था। इसके बाद वह कब और कहां गया, इसकी जानकारी नहीं है। मंगलवार की सुबह हादसे की जानकारी हुई।

सड़क पर गिरे पड़े पेड़ पर खून लगा था और सड़क पर भी खून फैला था। वहीं पास में बाइक भी पड़ी थी। लोगों ने आशंका जताई कि पेड़ से टकराकर उसकी मौत हुई है। घटना की जानकारी होने पर सीओ राजकुमार पाण्डेय व जरिया थाना प्रभारी मयंक चन्देल ने घटना स्थल पर पहुंचकर मामले की छानबीन की। पिता ने बताया कि अरुण दो भाई थे। एक बहन है। अरुण बड़ा बेटा था। सीओ राजकुमार पाण्डेय ने बताया कि सड़क पर गिरे पेड़ से टकराकर बाइक सवार युवक की मौत हुई है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

पिकअप की टक्कर से महिला की मौत

चौबेपुर। भगवंतपुर गांव निवासी विजय अवस्थी कस्बा स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में संविदा कर्मी हैं। उनकी पत्नी निर्मला (50) भी संगिनी थीं। बताया गया है कि मंगलवार दोपहर करीब 2:30 बजे घर के निकट ही गणेश विसर्जन के जा लिए जा रही एक पिकअप गाड़ी के पास वह पूजन के लिए गई थीं। तभी गाड़ी बैक होने के दौरान टक्कर लगने से वह मौके पर ही गिर गईं। वहां पर मौजूद लोगों ने आवाज देकर गाड़ी को रुकवाना चाहा,लेकिन डीजे की तेज आवाज के चलते चालक सुन नहीं पाया और गाड़ी का पिछला पहिया उनके पेट पर चढ़ गया। घटना के बाद उन्हें उपचार के लिए सीएचसी ले जाया गया, जहां चिकित्सकों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। प्रभारी निरीक्षक राजकुमार सिंह ने बताया कि पिकअप गाड़ी की चपेट में आने से महिला की मौत हुई है। तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

डॉक्टर का धरना चौथे दिन भी जारी

संवाददाता, घाटमपुर

अमृत विचार। घाटमपुर में तहसील परिसर में जमीन कब्जे को लेकर पूर्व जिला पंचायत सदस्य डॉ. ओमप्रकाश त्रिपाठी व डॉ. रवि प्रकाश त्रिपाठी का धरना चौथे दिन भी जारी रहा।

मंगलवार को भी डॉ. ओमप्रकाश त्रिपाठी धरने में समाचार पत्र विक्रेता संघ के कार्यवाहक अध्यक्ष टिंकू बाजपेई के निर्देश पर समाचार पत्र विक्रेता संघ भी मैदान में आ गया। वहीं भाकियू (भानु)के राष्ट्रीय अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह फौजी ओमप्रकाश त्रिपाठी के साथ धरने पर पहले से ही बैठे हुए हैं। किसान यूनियन एवं डॉक्टर दंपती परिवार ने उमाशंकर पर गंभीर आरोप लगाए हैं। वहीं जानकारी मिलने पर मंगलवार को नायब तहसीलदार लक्ष्मीकांत वाजपेई धरने पर पहुंचे और पीड़ित परिवारों की बात सुनी और समझाने का प्रयास किया। परंतु ओमप्रकाश त्रिपाठी व अन्य पीड़ितों ने अपनी समस्या का समाधान न होने तक धरना जारी रखने की बात कही। धरने में समाचार पत्र विक्रेता संघ के कार्यवाहक अध्यक्ष टिंकू बाजपेई भी शामिल हुए। वहीं टिंकू बाजपेई का आरोप है कि उमाशंकर सचान उर्फ राजा सचान गैंग द्वारा 24 फरवरी 2025 को उनकी दुकान भी तोड़ी गई थी। दुकान में लूटपाट करने के साथ साथ दुकान को बुलडोजर से तोड़ दिया गया था। वहीं उमाशंकर सचान के रसूख के चलते इस मामले की आज तक एफआईआर दर्ज नहीं हो पाई है। वहीं पीड़ित डॉ रवि प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि शनिवार तक धरना जारी रहेगा। शनिवार के बाद पैदल मार्च कर मुख्यमंत्री से मिलने लखनऊ रवाना होंगे। माफिया अखिलेश दुबे के सक्रिय सदस्य उमाशंकर सचान के कारनामों की जानकारी मुख्यमंत्री को देंगे।

धरने में बैठे डॉक्टर, भाकियू नेता व अन्य लोग। अमृत विचार

- मकान पर कब्जे को लेकर डॉक्टर के साथ भाकियू व समाचार पत्र विक्रेता संघ भी आगे आये

हादसे में युवक की मौत

कार्यालय संवाददाता,कन्नौज

अमृत विचार। मुरादाबाद जनपद के गांव बहेड़ी थाना भोजपुर निवासी कार चालक रिशु पाल(25) पुत्र विजयपाल अपनी कार लेकर कानपुर गया था। मंगलवार को वह कुणाल यादव (22) पुत्र सुरेंद्र यादव निवासी नहर वाला खाई खेड़ा थाना ठाकुरद्वारा जनपद मुरादाबाद, सुंदरी निवासी मुरादाबाद को बैठा कर कानपुर से मुरादाबाद जा रहा था। सुबह करीव 6:30 बजे कार हाईवे पर पाल चौराहे के निकट पहुंची उसी समय बारिश होने से अनियंत्रित होकर पुल की रेलिंग से टकरा गई। दुर्घटना की जानकारी मिलते ही कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने तीनों घायलों को एंबुलेंस से जिला अस्पताल भेजा। डाक्टर ने जांच के बाद कुणाल को मृत घोषित कर दिया। गंभीर हालत में दो लोगों को मेडिकल कालेज रेफर कर दिया गया। पुलिस ने कार को हाईवे से हटवा कर पाल चौराहा पुलिस चौकी में खड़ी करा दी। मृतक के परिजन जिला अस्पताल पहुंचे।

लखनऊ से बाराबंकी, संडीला, मोहनलालगंज तक चलेंगी ई-बसें

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

लखनऊ। कानपुर और लखनऊ में निजी ई-बसें चलाने का रास्ता साफ हो गया है। इसके तहत 12 साल के लिए प्राइवेट पार्टी को लाइसेंस दिया जाएगा। बसों की पार्किंग और चार्जिंग स्थल सरकार उपलब्ध कराएगी और बिजली कनेक्शन की जिम्मेदारी भी सरकार की होगी। वहीं ड्राइवर और कंडक्टर निजी संचालक को देने होंगे। योजना के अनुसार, हर रूट पर 10-10 ई-बसें चलाई जाएंगी। शुरुआत एक-एक बस से होगी और बाद में संख्या बढ़ाकर कुल 200 बसों तक की जाएगी।

नगर विकास मंत्री एके शर्मा ने बताया कि अभी तक 15 नगर निगमों में 743 इलेक्ट्रिक बसें चलाई जा रही हैं, जिनमें से 700 बसें ग्रॉस कॉस्ट कॉन्ट्रैक्ट (जीसीसी) मॉडल पर हैं। योजना के अंतर्गत लखनऊ और कानपुर नगर समेत आस-पास के कस्बों में 10-10 रूटों पर 9 मीटर लंबी एसी ई-बसें चलाई जाएंगी। प्रत्येक रूट पर कम से कम 10 बसें अनिवार्य होंगी। कॉन्ट्रैक्ट की अवधि 12 वर्ष की होगी। अनुमान है कि प्रत्येक रूट पर करीब 10.30 करोड़ रु. का व्यय आएगा, जिसमें से 9.50 करोड़ रु. बसों की खरीद पर और 0.80 करोड़ रु. चार्जिंग उपकरणों व अन्य आवश्यक साधनों पर खर्च होंगे। बसों का डिजाइन, वित्तपोषण, खरीद, निर्माण, आपूर्ति और अनुरक्षण की जिम्मेदारी निजी ऑपरेटर निभाएंगे। उन्हें 90 दिनों के भीतर प्रोटोटाइप ई-बस उपलब्ध करानी होगी और एक वर्ष के भीतर बस संचालन शुरू करना होगा। सभी किराया एवं गैर-किराया राजस्व का संग्रह निजी ऑपरेटर करेंगे, टैरिफ निर्धारण सरकार करेगी।

लखनऊ में प्रस्तावित रूट

चारबाग – बाराबंकी
चारबाग – देवा
चारबाग – कुर्सी
कमता – एयरपोर्ट
बालागंज – मोहनलालगंज
बालागंज – विराज खंड
घंटाघर – माल थाना
घंटाघर – संडीला
स्कूटर इंडिया – इंजीनियरिंग कॉलेज
दुबग्गा – गंगागंज

कानपुर में प्रस्तावित रूट

घंटाघर – अकबरपुर
रेलवे स्टेशन – बिंदकी
रेलवे स्टेशन – बिठूर
रेलवे स्टेशन – घाटमपुर
रेलवे स्टेशन – आईआईटी
घंटाघर – मूसानगर
कानपुर सिटी सर्कुलर रोड
रामा देवी – जहानाबाद
फजलगंज – रूरा
रेलवे स्टेशन – उन्नाव

भक्ति-भावना

घाटमपुर में बुढ़वा मंगल पर्व को लेकर हनुमान मंदिरों में भोर पहर से ही पहुंचने लगे श्रद्धालु ,जगह-जगह हुए भंडारे

कुड़नी मंदिर में पूजा-अर्चना को उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

संवाददाता, घाटमपुर

अमृत विचार। घाटमपुर क्षेत्र के ऐतिहासिक प्राचीन कुड़नी मंदिर में बुढ़वा मंगल के पावन पर्व पर लाखों भक्तों ने दर्शन किये। रात एक बजे से ही भक्त कतार में खड़े होकर अपनी बारी की प्रतीक्षा करते रहे। वहीं बारिश के बावजूद भी श्रद्धालुओं के उत्साह में कमी नहीं देखी गई। वहीं लाखों भक्त कुड़नी दरबार में पहुंचे।

बुढ़वा मंगल के अवसर पर जय देररात से ही हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचने लगे थे, जैसे ही मंदिर के पट खुले भक्तों ने हनुमान जी के दर्शन पूजन शुरू कर दिया। इस दौरान लोग हनुमान जी के जयकारे भी लगाते रहे। इस दौरान बारिश भी हुई लेकिन लोगों के उत्साह में कहीं कोई कमी नहीं देखी गई। बच्चे, बुजुर्ग, युवा और महिलाओं की भीड़ बढ़ती ही गई। हनुमान सर्वशक्ति संकीर्तन मंडल के द्वारा कुड़नी मंदिर में विशेष रूप से व्यवस्था की गई थी। समिति के साथ अन्य भक्तों के द्वारा क्षेत्र में लगभग 20 से 25 जगहों पर विशाल भंडारों का आयोजन किया गया। जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण करके अपने आप को धन्य किया। हालांकि प्रशासन की तरफ से कोई विशेष इंतजाम नहीं किए गये थे। सुबह से लेकर शाम तक मंदिर परिसर में न तो कोई पुरुष पुलिस कर्मी रहा और न ही महिला पुलिस कर्मी की व्यवस्था रही। इसके चलते सभी श्रद्धालुओं में रोष दिखाई दिया। पुलिस की व्यवस्था न होने से कई महिलाओं के मंगल सूत्र और बाले चोरी हो गए। इस विषय में साढ़ थाना प्रभारी ने अपना पल्ला झाड़ते हुए बोले कि चोरी की सूचना नहीं मिली तहरीर मिलने पर सीसीटीवी कैमरा फुटेज से जानकारी जुटाई जाएगी। वहीं मंदिर की व्यवस्था में मंदिर समित के हरिओम सैनी, प्रियांशु कश्यप ,हिमांशु कश्यप ,मान सिंह ,छोटू महाराज, गजेंद्र सिंह सुंदरम रहे।

कुड़नी मंदिर दरबार में मौजूद श्रद्धालु। अमृत विचार

हनुमान जी का हुआ भव्य श्रृंगार।

मंदिर में लगी भक्तों की कतार। अमृत विचार

संकट मोचन के दरबार में भी रही भक्तों की भीड़

- **घाटमपुर।** नगर में बुढ़वा मंगल के अवसर पर मां कुष्मांडा देवी मंदिर परिसर में हनुमान मंदिर के दर्शनों के लिये सुबह से ही भक्तों की भीड़ जुट गई। साथ ही भक्तों द्वारा मंदिर में सुंदरकांड का आयोजन भी किया गया। हनुमान मंदिर को फूलों से सजाया गया व हनुमान जी का भव्य श्रृंगार किया गया। मंदिर प्रशासन द्वारा भक्तों को पंक्तिबद्ध करके बाबा के दर्शन कराए गए। भक्तों ने जय हनुमान, जय श्री राम के जयकारे का उद्घोष किया। भंडारा पूरे दिन चलता रहा और भक्तों ने प्रसाद चखा। सुन्दरकाण्ड के दौरान आशीष पांडे, गौरव तिवारी, शुभम शौर्य अग्निहोत्री बजरंग दल, अवधेश, कुमार शुक्ला, केशव शुक्ला मौजूद रहे।

ककवन में ऑटो पलटने से तीन लोग हुए घायल

संवाददाता, बिल्हौर

अमृत विचार। बिल्हौर- ककवन थाना क्षेत्र में एक ऑटो अनियंत्रित होकर पलट गया, जिसमें तीन लोग घायल हो गए। घायलों को तुरंत स्थानीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां से एक गंभीर रूप से घायल महिला को कानपुर रेफर कर दिया गया।

अरौल थाना क्षेत्र के गूजेपुर गांव का एक परिवार रसूलाबाद थाना क्षेत्र के धरमपुर में आयोजित एक छठी के कार्यक्रम में शामिल होने जा रहा था। तभी उनका ऑटो अनियंत्रित होकर पलट गया। हादसा होते ही ऑटो में सवार लोगों में चीख-पुकार मच गई। सूचना मिलते ही एंबुलेंस मौके पर पहुंची और सभी घायलों को ककवन के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया गया। घायलों की पहचान ददिखा निवासी अंजली पुत्र भगवानदीन, ऑटो चालक मन्नू पुत्र चन्द्र, रूपा पुत्री श्रवण कुमार के रूप में हुई।

पलटा पड़ा ऑटो।

घायलों में अंजली की हालत गंभीर बताई गई, जिसके कारण उन्हें प्राथमिक उपचार के बाद कानपुर के हैलट अस्पताल रेफर कर दिया गया। अन्य दो घायलों - मन्नू और रूपा - का इलाज ककवन सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ही चल रहा है। वहीं जानकारी मिली है कि पांच दिन पहले भी इसी स्थान पर ककवन व फत्तेपुर के दो लोगों की दुर्घटना में मौत हुई थी, जिसके बाद लगातार लोक निर्माण विभाग की ओर से सफाई अभियान चलाया जा रहा है।

सुविचार

मेरा अनुभव है कि हमेशा आशा की कोई न कोई किरण आती है, जो हमें जीवन से दूर भटकने नहीं देती।

-नेताजी सुभाष चंद्र बोस

अमृत विचार

कानपुर महानगर

www.amritvichar.com

कानपुर के प्रमुख समाचार

- घरों-बाजारों में भरा पानी, सड़कों पर नहर सा नजारा- II
- रेव मोती तिराहे से अब वाहन रावतपुर जा सकेंगे- III
- बारिश के बीच मंदिरों में गूंजा जय हनुमान-जय श्रीराम- IV

कानपुर, बुधवार 3 सितंबर 2025

अनुराग हेल्थ केयर प्रा.लि.
•ICU •NICU DIALYSIS
• MODULAR OT
दूरबीन विधि से आपरेशन अब कम खर्च में
सीजीएचएस, मेडीक्लेम व आयुष्मान कार्ड मान्य
117/क्यू/702, शारदा नगर, कानपुर
9889538233, 7880306999

तीन महीने पहले प्रेम विवाह अब साथ लगा ली फांसी

बाजार से घूमकर लौटे नवविवाहित दंपती ने एक ही फंदे से फांसी लगा जान दी

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- मछरिया बूढ़पुर में दिल दुखाने वाली घटना, परिजनों में मची चीख-पुकार
- शव पोस्टमार्टम के लिए भेजने पर परिजन भड़के, पुलिस ने समझाकर सबको शांत कराया

अमृत विचार। नौबस्ता में बाजार से घूमकर घर लौटे नवविवाहित दंपती ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। दोनों के शव चौखट से दुपट्टे के सहारे एक ही फंदे पर लटके मिले। घटना की खबर पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल की। फॉरेंसिक टीम ने साक्ष्य जुटाए। शव पोस्टमार्टम भेजने पर परिजन भड़क गए। इस पर पुलिस को करीब ढाई घंटे मशक्कत करनी पड़ी। परिजनों को किसी तरह समझाकर शवों को पोस्टमार्टम भेजा गया। परिजनों के अनुसार आत्महत्या का कारण स्पष्ट नहीं है।

मछरिया बूढ़पुर निवासी मो. सईद का 20 वर्षीय बेटा साजिद खुद का आटो चलाता था। पिता के अनुसार बेटे का क्षेत्र की रहने वाली 20 वर्षीय सूफिया से प्रेम प्रसंग था। इसकी जानकारी परिजनों को होने पर बीती 17 जून को उनका निकाह करा दिया गया था। पिता सईद ने बताया कि उनके छह बेटों में साजिद चौथे नंबर पर था। शारिक, ताज, आसिफ, साजिद, सैफ व बेटी सबा बूढ़पुर मछरिया में उमेश सिंह चौहान के दो मंजिला मकान में किराये पर रहते हैं। है। दो बेटे सैफ व सूफियान अलग रहते हैं। उन्होंने बताया कि साजिद बूढ़पुर में चार माह से रह रहा था। मंगलवार दोपहर करीब दो बजे साजिद पत्नी के साथ बाजार जाने की बात कहकर घर से निकला था, लेकिन 15 मिनट में ही दोनों घूमकर वापस आ गए और कमरे में चले गए थे। करीब चार बजे वह पानी पीने के लिए कमरे से बाहर निकले तो दोनों के शव लोहे की चौखट से लटकते देखा। उनकी चीख निकल गई। आवाज सुनकर परिवार के अन्य लोग कमरों से बाहर आए। इसके बाद पुलिस और सूफिया के परिजनों को घटना की जानकारी दी गई। सूफिया के भाई चांद ने पुलिस को बताया कि दोनों की शादी बड़े धूमधाम से की गई थी। दोनों एक-दूसरे को बेहद चाहते थे। ससुराल वाले भी अच्छे थे। पता नहीं ऐसा क्या हुआ कि दोनों ने जान दे दी। नौबस्ता थाना प्रभारी शरद तिलारा ने बताया कि दोनों के आत्महत्या करने की वजह स्पष्ट नहीं है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। किसी ने कोई आरोप नहीं लगाया है।

घर में जांच करती पुलिस। अमृत विचार

आईआईटी में व्यवस्थाएं देखते पुलिस कमिश्नर-जिलाधिकारी और अन्य अधिकारी। अमृत विचार

आज मुख्यमंत्री आईआईटी आएंगे

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- बुधवार सुबह 9 बजे कार्यक्रम में पहुंचेंगे, अधिकारियों ने देखी व्यवस्थाएं

अमृत विचार। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को सुबह 9 बजे आईआईटी कानपुर में आयोजित समन्वय कार्यक्रम शामिल होंगे। यहां उद्योग जगत की आवश्यकताओं के अनुरूप आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सस्टेनेबल टेक्निक विकास विषय पर कार्यक्रम किया जा रहा है। जिसमें शोधकर्ता और स्टार्टअप उद्यमी शामिल होंगे।

टीसीएस के टेक्नोलाजी हेड हैरिक विन कार्यक्रम के मुख्य वक्ता होंगे। इस अवसर पर टीसीएस और एक स्टार्टअप कंपनी के बीच एमओयू भी किया जाएगा। मुख्यमंत्री के प्रस्तावित कार्यक्रम को लेकर पुलिस प्रशासन और नगर निगम के अधिकारियों ने व्यवस्था को परखा। नगर आयुक्त सुधीर कुमार ने रूट के विभिन्न मार्गों एवं स्थलों का निरीक्षण किया। कानपुर आईआईटी परिसर और उसके आसपास के क्षेत्रों को देखा। नगर आयुक्त ने जलभराव को देखते हुए विशेष टीम गठित की।

नगर निगम ने परिसर एवं आसपास के मार्गों पर स्वच्छता, प्रकाश व्यवस्था तथा नालों की सफाई की विशेष व्यवस्था की है। पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार, जिलाधिकारी जितेंद्र प्रताप सिंह ने भी आईआईटी का निरीक्षण किया और आईआईटी निदेशक के साथ व्यवस्थाओं पर चर्चा की। इस दौरान अपर जिलाधिकारी डॉ. राजेश सिंह, महाप्रबंधक जलकल एके त्रिपाठी व पुलिस के अधिकारी मौजूद रहे।

सिटी ब्रीफ

17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा

कानपुर। प्रधानमंत्री मोदी के जन्मदिवस पर भाजपा सेवा पखवाड़ा का आयोजन करेगी। नवीन मार्केट में क्षेत्रीय टोली एवं क्षेत्रीय मॉनिटरिंग टीम की एक बैठक हुई। प्रकाश पाल ने 17 सितंबर से 2 अक्टूबर तक सेवा पखवाड़ा के अंतर्गत वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, रक्तदान शिविर, नि :शुल्क स्वास्थ्य शिविर, पोषण अभियान, डिजिटल साक्षरता एवं विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों का आयोजन होगा। बैठक में क्षेत्रीय उपाध्यक्ष अनीता गुप्ता, क्षेत्रीय महामंत्री रामकिशोर साहू, शिव महेश दुबे, सुनील तिवारी, आलोक शुक्ला, वीरेंद्र तिवारी, पवन पांडे, जितेंद्र सचान, मलय पांडे, दिनेश मौर्या, शोभा श्रीवास्तव रहे।

41.31 किमी. पेयजल लाइन बिछवाई

कानपुर। शहरवासियों को शुद्ध पेयजल मुहैया कराने के लिए पिछले एक साल में कुल 41,315 मीटर (करीब 41.31 किमी) पेयजल लाइन बिछवाई गई। साथ ही सीवरेज नेटवर्क को मजबूत करने का कार्य भी किया गया है। नगर आयुक्त सुधीर कुमार ने बताया कि अधिकतर कार्य पूरे हो गए है, कुछ कार्य अपने अंतिम स्टेज पर हैं।

नहर में उतराता मिला महिला का शव

कानपुर। गुजैनी की रामगंगा निचली नहर में मंगलवार को 40 वर्षीय महिला का शव उतारात मिलने से इलाके में हड़कंप मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को बाहर निकलवाया और शिनाख्त का प्रयास किया। महिला के गले में दुपट्टा फंसा होने से लोगों ने हत्या कर फेंके जाने की आशंका जताई है। गुजैनी थाना प्रभारी अमर नाथ विश्वकर्मा ने बताया कि महिला के शरीर पर कोई भी चोट के निशान नहीं मिले हैं। शव बहकर आने की आशंका है। शव पोस्टमार्टम के लिए भेजकर पहचान का प्रयास किया जा रहा है।

दरोगा ने सीपीआर देकर बचाई जान

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

सीपीआर देता दरोगा।

अमृत विचार। मूलगंज चौराहा पर मंगलवार दोपहर एक राहगीर को हार्ट अटैक पड़ा। वह जमीन पर गिर गया। इसी बीच वहां से गुजरे एक दरोगा की नजर पड़ी और उन्होंने रुककर उसे समीप की दुकान में बेंच पर लिटाया। सीपीआर देनी शुरू की। हालत में सुधार होने पर उर्सला और फिर कार्डियोलॉजी में भर्ती कराया। राहगीर का इलाज चल रहा है। पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार ने दरोगा की सराहना की।

घटना मंगलवार दोपहर मूलगंज चौराहा की है। एक दंपती ऑटो का इंतजार कर रहे थे। तभी फुटपाथ पर खड़े व्यक्ति के सीने में दर्द होने लगा। अचानक वह वहीं सड़क पर गिर पड़ा। मूलगंज थाने में तैनात दरोगा रोहित तिवारी ने उसे गिरते देख लिया तो मामला समझ गए। इस पर तत्काल वहां पहुंचे और उस व्यक्ति को समीप की दुकान में बेंच पर लिटाया और सीपीआर देने लगे। उसकी पत्नी को मुंह से सांस देने को कहा। इससे उसके शरीर में हलचल होने लगी। कुछ ही देर में हालत सामान्य होने पर उसे एंबुलेंस से उर्सला अस्पताल ले जाया गया। जहां प्राथमिक इलाज के बाद उसे कार्डियोलॉजी ले जाया गया। पति की जान बचने पर महिला ने दरोगा को धन्यवाद दिया। इसकी जानकारी होने पर पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार ने जान बचाने वाले दरोगा की सराहना की है।

ये है सीपीआर

- सीपीआर का मतलब कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन है। यह एक जीवन-रक्षक प्रक्रिया है, जो तब दी जाती है जब किसी व्यक्ति का दिल धड़कना बंद कर देता है या सांस रुक जाती है। सीपीआर में व्यक्ति की छाती पर दोनों हथेलियों को जोड़कर दबाव डाला जाता है और मुंह से सांस दी जाती है। जिससे मस्तिष्क और अन्य महत्वपूर्ण अंगों तक ऑक्सीजन युक्त रक्त पहुंचता रहता है, जब तक कि आपातकालीन चिकित्सा सहायता उपलब्ध न हो।

बिना हेलमेट पेट्रोल लेने आए 123 लोगों के चालान

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- नो हेलमेट-नो फ्यूल अभियान 30 सितंबर तक

अमृत विचार। पेट्रोल पंपों पर बिना हेलमेट पेट्रोल लेने आए 123 दो पहिया वाहन चालकों का मंगलवार को चालान किया गया। प्रदेश में नो हेलमेट-नो फ्यूल अभियान चलाया जा रहा है जो 30 सितंबर तक जारी रहेगा।

संभागीय परिवहन अधिकारी प्रवर्तन राहुल श्रीवास्तव की अगुवाई में एआरटीओ आकांक्षा सिंह, कहकशां खातून, आरआई संतोष कुमार ने कई पेट्रोल पंपों पर छापेमारी की। जिसमें बिना हेलमेट पेट्रोल लेने आए 123 दो पहिया वाहन सवारों के चालान किए गए। संभागीय परिवहन अधिकारी प्रवर्तन ने बताया कि नौबस्ता, बारादेवी, किदवई नगर, पनकी, दादा नगर, जाजमऊ, नारामऊ समेत कई पेट्रोल पंपों पर नो हेलमेट नो फ्यूल अभियान चलाया गया। दूसरी ओर सागर हाईवे, नौबस्ता हाईवे, रामादेवी हाईवे, फर्रुखाबाद हाईवे पर आरटीओ की टीम ने ओवरलोड वाहनों के खिलाफ चेकिंग अभियान चलाया जिसमें 85 वाहनों के चालान किए गए।

चकेरी इंस्पेक्टर, चौकी प्रभारी पर रिपोर्ट

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। चकेरी थानाप्रभारी संतोष कुमार शुक्ला के खिलाफ उन्हीं के थाने में एक महिला ने उनकी जमीन पर पुलिस बल समेत अन्य साथियों के साथ तोड़फोड़ कर कब्जा करने व उनके पति समेत अन्य लोगों पर शांतिभंग की कार्रवाई कर देने का आरोप लगाकर रिपोर्ट दर्ज कराई है। तत्कालीन सनिगवां चौकी इंचार्ज, एक बिल्डर व एक अन्य के अलावा 40 अज्ञात पर भी डकैती, घर में अवैध रूप से घुसकर तोड़फोड़ करने समेत सात धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कराई है।

लालबंगला के चंद्र नगर निवासी संगीता जायसवाल के मुताबिक उनके प्लॉट में दुकानें बनी हैं। इस जमीन के स्वामित्त का विवाद सुशील वाष्णेय व अभिषेक वाष्णेय से कोर्ट में है। एक वाद हाईकोर्ट में भी विचाराधीन है। इसके बाद भी चकेरी थानाप्रभारी संतोष कुमार शुक्ला, तत्कालीन सनिगवां चौकी प्रभारी अंकित खटाना, योगी बिल्डर व धर्मेन्द्र यादव के साथ करीब 40 अज्ञात व पुलिस बल बीती 29 मार्च को जमीन पर पहुंचे। जमीन की दीवार और मेनगेट तोड़कर कब्जा करवा दिया। पुलिसकर्मियों ने उनके भतीजे अभिषेक जायसवाल, भतीजी ज्योति, ललित, आशीष, बुआ विनीता को लाठी डंडों से मारापीटा। सभी पर शांतिभंग की कार्रवाई कर दी। उक्त जमीन में उनके पति संजय जायसवाल का डेढ़ करोड़ का माल भी रखा था। जिसे गायब कर रहे हैं। छह लाख की कीमत के जेवरात व अन्य सामान समेत एक मवेशी भी लूट लिया है। पीड़िता ने हाईकोर्ट के आदेश पर रिपोर्ट दर्ज कराई।

हवाई अड्डे के प्रस्ताव पर सम्मान किया

कानपुर। चकेरी हवाई अड्डे का नाम पूर्व राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद के नाम होने पर मंगलवार को भाजपा पार्षद दल के नेता नवीन पंडित का सम्मान किया गया। नवीन पंडित ने ही यह प्रस्ताव कार्यकारिणी में पेश किया था। जूही मंडल अध्यक्ष दीपू पासवान, मोहम्मद जीशान, तारीख, नीरज कुरील, विकास साहू, संजय बाथम ने सम्मान किया। नवीन पंडित ने कहा की महापौर शहर से बाहर गई हैं उनका आने पर सम्मान किया जाएगा।

In Remembrance Of

A visionary, an educationist, and a philanthropist who reshaped education and social change.

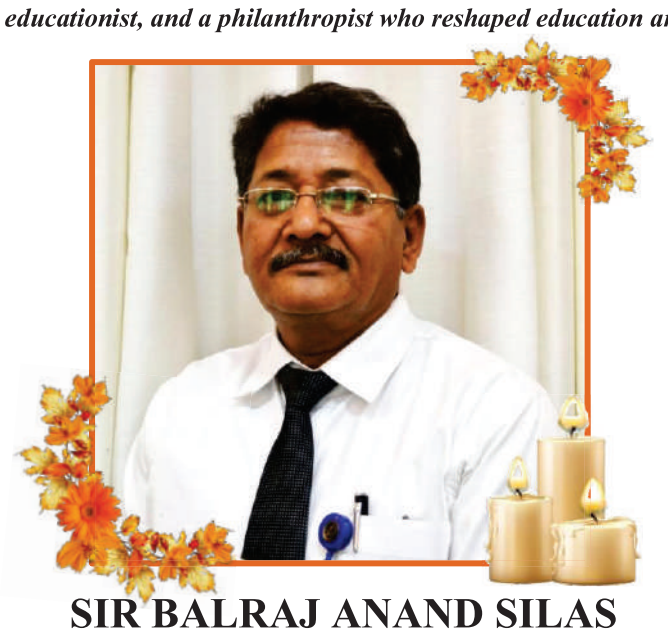

SIR BALRAJ ANAND SILAS

(27.06.1956 - 03.09.2020)

Through the years, your vision has not only established premier institution but also uplifted lives, helped realize dreams and alleviated the sufferings of many. Your vision is our beacon of light that directs us to continuously look for opportunities to transform more lives.

We little knew that morning
That God would call your name,
In life we loved your dearly
In death we do the same.

In broke our hearts to lose you
But you did not go alone,
For part of us went with you
The day God called you home.

You left us beautiful memories
Your love is still our guide
And through we cannot see you
You are always by our side.

Our family chain is broken
And nothing seems the same.
But as God called us one by one
The chains will link again.

Fondly remembered by:
Dr. Veena Silas (Wife)

Mr. Yash Raj Silas and Mrs. Deeksha Silas (Son and Daughter-in-Law) | **Elisha, Ketrah and Angelina** (Grand daughters) | **Mrs. Misha Furtado and Mr. Nilesh Furtado** (Daughter and Son-in-Law)

&

All the believers of the Church of Christ, Pandu Nagar and Kidwai Nagar, Kanpur

Mother Teresa Mission Higher Secondary School

Kidwai Nagar | Koyla Nagar | Krishna Nagar

Mother Teresa Education Centre Pandu Nagar, Kanpur. | Kanpur Public Inter College Double Puliya, Kanpur. | Kanpur Public Inter College Pandu Nagar, Kanpur. | Mother Teresa Scholar Academy Guba Garden, Kanpur.

Mother Teresa Education Centre Ishwari Ganj | Mother Teresa Higher Secondary School Keshav Nagar, Kanpur. | Mother Teresa Mission School Panki, Kanpur. | Mother Teresa Mission School Shukla Ganj, Kanpur.

बाजार का हाल सोना 1,0,7,150 रुपये का 10 ग्राम तो चांदी 1,26,300 रुपये किलो

सोना-चांदी ने मचाई सराफा बाजार में सनसनी

शैलेश अवस्थी, कानपुर

- 20 साल में एक लाख रुपये बढ़ गए सोने के दाम और 10 साल में चार गुना, आठ महीने में बढ़े 19 हजार
- निवेशकों को मुनाफा, पर आभूषण बाजार हुआ बेजार, वैश्विक बाजारों में तगड़ी मांग

अमृत विचार। मंगलवार को कानपुर सराफा बाजार में सोना 1,0,7,150 रुपये का 10 ग्राम तो चांदी 1,26,300 रुपये किलो रही, जो सर्वोच्च है। इतनी तेजी से सोने और चांदी के भाव कभी नहीं बढ़े। खास बात यह कि अभी भी तेजी जारी रहने की संभावना है।

चांदी अपने पहले के सभी रिकार्ड तोड़ती हुई 1,26,300 रुपये किलो पर जा पहुंची, तो सोना नए शिखर 1,0,7,150 रुपये का 10 ग्राम पर जा चढ़ा। बीते 20 अगस्त को सोना 1,01,350 और चांदी 1,14,600 रुपये थी। इसके बाद बढ़त लगातार बनी है।

इस तेजी से दाम पहले कभी नहीं बढ़े। यही चाल रही तो दीवाली तक चांदी 1,40,000 किलो तो सोना 1,15,000 के 10 ग्राम तक पहुंच सकता है। यह तथ्य भी है कि दस साल में सोने के दाम चार गुना और 20 साल में एक लाख रुपये बढ़े हैं। पिछले आठ महीने में सोने के दाम में 19 हजार तो चांदी में लगभग 37 हजार की बढ़ोतरी है। आभूषण बाजार में बिल्कुल सन्नाटा पसरा है और निवेशक दांव लगाकर मुनाफा काटने की होड़ में हैं।

उत्तर प्रदेश सराफा एसोसिएशन के मंत्री राम किशोर मिश्र का कहना है की जबरदस्त औद्योगिक मांग के कारण चांदी के भाव बढ़े हैं। टैरिफ की अनिश्चितता, बढ़ती वैश्विक मांग और सुरक्षित निवेश के कारण सोना भाव की ऊंचाई की नित नई कहानी बना रहा है।

आभूषण कारोबारी राजेंद्र शुक्ला और अमित वाजपेई का कहना है कि अभी दाम और तेजी से बढ़ने का अनुमान है। अजीत गुप्ता का कहना है कि अगले महीने सहालगी मांग के साथ दाम और बढ़ेंगे।

चांदी की चमक पर गौर करें

- बीते 20 अगस्त 1,14,600, 21 अगस्त 1,16,350, 22 अगस्त 1,17,500, 23 अगस्त 1,19,000, 25 अगस्त को 1,19,800, 27 अगस्त 1,20,000, 30 अगस्त को 1,24,200 अब 2 सितंबर को 1,26,300 रुपये प्रति किलो। 1 जनवरी 2025 को चांदी 88600 रुपये किलो थी।

सोना की चाल बेहद तेज

- 20 अगस्त 1,0,1,350, 21 अगस्त 1,0,1,800, 22 अगस्त 1,0,1,900, 23 अगस्त 1,0,3,000, 25 अगस्त को 1,0,3,100, 27 अगस्त 1,0,4000, 30 अगस्त को 1,6,350 अब 2 सितंबर को 1,0,7,150 रुपये का 10 ग्राम। 1 जनवरी 2025 को सोना था 78600 रुपये का 10 ग्राम। ये भाव कानपुर सराफा बाजार के मुताबिक हैं।

सिटी ब्रीफ

साइबर ठगों ने खाते से पार किए 96 हजार

कानपुर। नवाबगंज में ओएलक्स पर किताब बेचने के नाम पर युवक के खाते से साइबर ठगों ने 96 हजार रुपये पार कर लिए। पीड़ित ने पुलिस से शिकायत कर रिपोर्ट दर्ज कराई है। मैनावती मार्ग श्रीराम कृपा स्टेट निवासी अनुज श्रीवास्तव के अनुसार बीती चार जुलाई को उन्होंने एक किताब बेचने के लिए ओएलक्स पर विज्ञापन दिया था। उसी शाम को एक व्यक्ति ने उन्हें किताब खरीदने के लिए व्हाट्सएप कॉल किया। बातचीत के दौरान युवक ने पैसे के लिए एक क्यूआर भेजा। जिसको स्कैन करते ही उनके दो खातों से 96 हजार रुपये निकल गए। ठगी का अहसास होने पर पीड़ित ने मामले की शिकायत साइबर सेल व थाने में की। थाना प्रभारी नवाबगंज केशव कुमार तिवारी ने बताया कि रिपोर्ट दर्जकर मामले में साइबर सेल की मदद ली जा रही है।

घर के बाहर टहल रहे युवक से मोबाइल लूट

कानपुर। सनिगवां में घर के बाहर टहलकर मोबाइल से बात कर रहब युवक से बाइक सवार लुटेरों ने मोबाइल लूट लिया। पीड़ित ने चकेरी थाने में मामले की शिकायत की है। सनिगवां निवासी वीरेंद्र कुमार प्राइवेट कर्मी हैं। उनके अनुसार बीते सोमवार की रात करीब 9 बजे वह घर के बाहर टहल रहे थे और अपने मोबाइल से बात कर रहे थे। तभी बाइक सवार लुटेरे आये और उनका मोबाइल लूटकर भाग निकले। घटना के बाद वह शोर मचाते आरोपियों के पीछे दौड़े, लेकिन आरोपी भागने में कामयाब रहे। थाना प्रभारी संतोष कुमार शुक्ला ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर कार्रवाई की जाएगी।

फुटपाथ पर मिला बुजुर्ग का शव

कानपुर। जाजमऊ के वाजिदपुर में मंगलवार को फुटपाथ पर एक बुजुर्ग का शव पड़ा मिला। क्षेत्रीय लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शिनाख्त कराकर शव पोस्टमार्टम भेजा। थाना प्रभारी जितेंद्र सिंह ने बताया कि वाजिदपुर में नमामि गंगे प्लॉट के सामने एक शव पड़ा देख लोगों ने खबर दी। पुलिस ने भीड़ की मदद से उसकी पहचान बलिया के थाना हल्दी निवासी 65 वर्षीय राम निशांत सिंह के रूप में की। थाना प्रभारी ने बताया कि इलाके में पूछताछ करने पर पता चला कि राम निशांत राइड हाउस क्लब में चौकीदार था, लेकिन एक साल पहले बीमारी के चलते काम छूट गया था। इसके बाद राम निशांत सिद्धनाथ घाट के आसपास ही भीख मांगने लगा। थाना प्रभारी ने बताया कि बुजुर्ग के परिजनों को सूचना दी गई है।

बुजुर्ग ने फांसी लगाकर दी जान

कानपुर। कल्याणपुर में अवसादग्रस्त बुजुर्ग ने भांजे की दुकान के बाहर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। काकादेव के शास्त्रीनगर निवासी हरप्रीत सिंह की कल्याणपुर के पनकी रोड आवास विकास-एक में लकड़ी-प्लाइवुड की दुकान है। हरप्रीत के अनुसार अमृतसर में रहने वाले उनके 64 वर्षीय मामा रविंदर सिर शराब के लती थे। करीब 25 साल पहले पत्नी के न रहने के बाद से वह अकेले थे। बच्चे भी नहीं हैं। इसी कारण वह उनके पास रहने आ जाते थे। कुछ दिनों से वह उनके पास ही रह रहे थे। दुकान पर काम देखने के साथ रात में वहीं सो जाते थे। सोमवार रात भी दुकान के बाहर तख्त पर सोए थे। भोर पहर तक उनको टहलते देखा गया है। इसके बाद उन्होंने दुकान के बाहर ही फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

गोविंदनगर-परमपुरवा रोड पर जलभराव में पलट गया ई रिक्शा। अमृत विचार

आरटीओ रोड पर भी जलभराव हुआ। अमृत विचार

घरों-बाजारों में घुसा पानी, सड़कों पर नहर सा नजारा

झमाझम बारिश से कई सड़कों पर भरा तीन फीट तक पानी, गोविंद नगर, सर्वोदय नगर, मोतीझील की हालत ज्यादा खराब

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। सोमवार से शुरू हुई बारिश मंगलवार सुबह तक हुई। लगातार हो रही बारिश से शहर की सड़कें तालाब बन गईं। सुबह कार्यालय जाने को निकले शहरवासी जलभराव और जाम के फेर में फंस गए। जगह-जगह जलभराव हो गया। प्रमुख बाजारों में पानी भर गया, इससे दुकानें देर से खुल पाईं और अंदर रखा सामान खराब हो गया। अर्मापुर के भी कई घरों में बारिश का पानी घुस गया। जिले लोग निकालते रहे।

सोमवार पूरे दिन दिन छिटपुट बारिश हुई। इसके बाद देर रात से शुरू हुई तेज बारिश मंगलवार सुबह करीब 11 बजे तक होती रही। इससे शहर में जगह-जगह जलभराव हो गया और लोग परेशान रहे। सबसे ज्यादा दिक्कत ऑफिस और काम पर जाने वालों को हुई। जलभराव में कई लोगों के वाहन बीच पानी में ही बंद हो गए। बहुत से लोग अपने वाहन घसीटते नजर आए। मुख्य मार्गों और कॉलोनियों में पानी भर जाने से वाहन चालकों और पैदल आने-जाने वालों को परेशान होना पड़ा। कहीं-कहीं तो दो से तीन फीट तक पानी भरा।

अर्मापुर में घरों में घुस गया पानी। अमृत विचार

गोविंदनगर बाजार में घुटने तक पानी भरा। अमृत विचार

दो दिन में हुई 41.2 मिमी. बारिश

- कानपुर। शहर में मंगलवार को सुबह से तेज बारिश हुई। मौसम विभाग के अनुसार दो दिन में 41.2 मिलीमीटर बारिश रिकॉर्ड की गई है, इसमे मंगलवार को 34 .6 मिलीमीटर बारिश हुई है। सीएसए विश्वविद्यालय के मौसम विभाग के अनुसार पांच सितंबर तक शहर में बारिश होने की संभावना बरकरार रहेगी। इसके अलावा 15 सितंबर तक शहर में रुक-रुककर बारिश होने की संभावना जताई जा रही है। मौसम वैज्ञानिक डॉ .एसएन सुनील पांडेय ने बताया कि शहर में दक्षिण पूर्वी हवाओं के साथ बारिश अपना असर दिखा रही है। पांच सितंबर तक यह सिस्टम एक्टिव रहेगा।

दो दिन की बारिश में उखड़ा पैचवर्क

- कानपुर। बारिश में जीटी रोड और कालपी रोड के अलावा शहर के अन्य इलाकों के छोटे-बड़े गड्ढे भी परेशानी का सबब बने। दो दिन पहले पीडब्ल्यूडी ने जीटी रोड पर पैचवर्क करा गड्ढे भरवाए थे लेकिन बारिश से जगह-जगह यह फिर उखड़ने लगा। गड्ढों में जलभराव से वाहन सवारों को दिक्कत हुई। जीटी रोड पर सिटी क्लब से लेकर जरीबचौकी के तक जगह-जगह गड्ढे हो गए। पैच वर्क की बजरी भी उखड़ पर सड़क पर बिखर गई। कालपी रोड पर जरीब चौकी क्रॉसिंग के दोनों तरफ भी गड्ढे हैं। इनसे वाहन सवारों को दिक्कत उठानी पड़ी। पानी भरने से उन्हें गड्ढों का अंदाजा नहीं रहा और कई बार तो दुपहिया वाहन सवार गिरते-गिरते बचे। इसके अलावा, हैलट से हर्षनगर तक सड़क के दोनों ओर भी गड्ढों और सड़क उखड़ने से बजरी पड़ी है। जिससे लोग परेशान होते रहे।

इन इलाकों में हुआ जलभराव

- जूही खलवा पुल पूरी तरह से भर गया। इससे इस मार्ग पर यातायात ठप हो गया। सुबह से ही बैरिकेडिंग लगा दी गई जिस कारण ऑफिस जाने वालों को दिक्कत हुई और उन्हें घूमकर टाटमिल से होकर आना-जाना पड़ा। इसके अलावा, लाजपतनगर, सरोजनीनगर, आचार्यनगर, लेनिन पार्क, वीआईपी रोड, विजयनगर सब्जी मंडी, शास्त्रीनगर, टाटमिल नया पुल के नीचे, गोविंदनगर, बर्रा, नंदलाल चौराहा, किदवईनगर आदि इलाकों में भी जलभराव हुआ।

उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक से मुलाकात करते डॉक्टर्स। अमृत विचार

राष्ट्रीय सम्मेलन में डिप्टी सीएम को आमंत्रित किया

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। सोसाइटी फोर प्रिवेंटेशन एंड अवेयरनेस ऑफ डायबिटिज व टाईअप ऑर्गनाइजिंग कमेटी के सदस्यों ने मंगलवार को प्रदेश के उप मुख्यमंत्री व स्वास्थ्य मंत्री ब्रजेश पाठक से मुलाकात की। उन्हें टाइप-1 डायबिटीज पर होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन टाईअप में आमंत्रित किया, जिसमें देशभर के टाइप -1 डायबिटीज के विशेषज्ञ डॉक्टर, शिक्षाविद और आहार विशेषज्ञ शामिल होंगे। यह सम्मेलन शहर में 5, 6 व 7 दिसंबर को आयोजित होगा। उपमुख्यमंत्री ने आमंत्रण के लिए स्वीकृति दी है।

आयोजन अध्यक्ष डॉ. ऋषि शुक्ला के मुताबिक टाइप 1 डायबिटीज के बारे में अधिकांश लोग नहीं जानते हैं। यह डायबिटीज बच्चों को बहुत छोटी उम्र में हो जाती है और जीवन भर उनके साथ रहती है। टाइप -1 डायबिटीज के बारे में जागरूकता बढ़ाने और इसके प्रबंधन में सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है। कानपुर में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय सम्मेलन के लिए टाईअप नाम चुना गया है, जो इस मुद्दे पर चर्चा और ज्ञान साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करेगा। इस संबंध में कमेटी के सदस्य डॉ. ऋषि शुक्ला, डॉ. प्रवीण कटियार, डॉ. सौरभ मिश्रा, लखनऊ के आरएसएसडीआई के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनुज माहेश्वरी और डॉ. अजय तिवारी ने उपमुख्यमंत्री से मुलाकात की और उन्हें सम्मेलन में आमंत्रित किया। अवगत कराया कि कार्यक्रम के संयोजक डॉ. दीपक याग्निक व उपाध्यक्ष डॉ. संगीता शुक्ला हैं। यह कार्यक्रम सीएसजेएमयू के कुलपति प्रो. विनय पाठक के नेतृत्व में होना तय किया गया है। बताया गया कि कार्यक्रम के आयोजन अध्यक्ष डॉ. ऋषि शुक्ला , वैज्ञानिक अध्यक्ष डॉ.अनुराग बाजपेयी हैं।

युवक की पिटाई का वीडियो वायरल

कानपुर। युवक ने ब्रेकअप के बाद प्रेमिका को फोन किया तो परिजनों ने जमकर मारा-पीटा। मारपीट का वीडियो वायरल होने पर इसका रायपुरवा पुलिस ने संज्ञान लिया। थाना प्रभारी के अनुसार अभी तक कोई पक्ष थाने नहीं आया है। युवक की पिटाई का सीसीटीवी फुटेज वायरल होने पर रायपुरवा पुलिस ने जानकारी की। दस सेकेंड के फुटेज में आधा दर्जन से अधिक लोग युवक की जमकर पिटाई करते दिख रहे हैं। युवक ने एक डायग्नोस्टिक सेंटर में घुसकर किसी तरह खुद को सुरक्षित किया। रायपुरवा में स्थित पेशेंट केयर डायग्नोस्टिक सेंटर के बाहर का पूरा वीडियो है। इस बारे में रायपुरवा थाना प्रभारी संतोष गौड़ ने बताया कि वायरल वीडियो संज्ञान में आया है। जांच में पता चला कि युवक का प्रेम प्रसंग था।

हैलट में आर्थो ओपीडी शिफ्ट होगी दंत रोग में

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। हैलट में सभी जांचें एक जगह-एक ही छत के नीचे हो सकें, इसके लिए इमरजेंसी के सामने डायग्नोस्टिक हब का निर्माण किया जाना है। इसकके लिए पुराना रैन बसेरा तो तोड़ा जाएगा, यूजर काउंटर और आर्थो विभाग के ओपीडी का कक्ष भी ध्वस्त किया जाएगा। आर्थो ओपीडी को दंत रोग विभाग में शिफ्ट किया जाएगा।

जीएसवीएम मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य प्रो.संजय काला और हैलट अस्पताल के प्रमुख अधीक्षक डॉ.आरके सिंह ने मंगलवार को ओपीडी का निरीक्षण किया। आर्थो विभाग में मरीजों की संख्या देखी और कमरों का स्पेस देखा। इसके बाद वह दंत रोग विभाग की ओपीडी पहुंचे, यहां पर उन्होंने दंत रोग के कक्षों को देखा और तय किया कि आर्थो विभाग की ओपीडी का संचालन कुछ समय के लिए दंत रोग के कक्षों में किया जाएगा। डायग्नोस्टिक हब के निर्माण के लिए पुराना रैना बसेरा तो ध्वस्त किया जाएगा, इसके साथ ही यूजर चार्ज काउंटर, आर्थों ओपीडी व प्लास्टर कक्ष को भी ध्वस्त किया जाएगा। इसके साथ पैथोलॉजी को भी शिफ्ट करना पड़ सकता है। प्राचार्य डॉ.संजय काला ने बताया कि डायग्नोस्टिक हब के लिए चिन्हित क्षेत्र में आने वाले कक्ष ध्वस्त कर नई इमारत तैयार की जाएगी। आर्थो की ओपीडी दंत रोग के कम उपयोगी वाले कक्ष में शिफ्ट की जाएगी। डायग्नोस्टिक हब बनने से मरीजों की सभी प्रकार की जांचें एक ही जगह व एक ही छत के नीचे हो सकेंगी।

हैलट ओपीडी का निरीक्षण करते प्राचार्य प्रो .संजय काला व साथ में हैलट के प्रमुख अधीक्षक डॉ .आरके सिंह। अमृत विचार

- मेडिकल कॉलेज प्राचार्य व प्रमुख अधीक्षक ने किया निरीक्षण

इन जांचों की भी मिलेगी यहां पर सुविधा

प्रो .संजय काला ने बताया कि हैलट अस्पताल और मेडिकल कॉलेज में जो जांचें अभी हो रही हैं, वो सभी जांचें डायग्नोस्टिक लैब हब में होंगी। इसके अलावा और भी जांचों की सुविधा यहां पर बढ़ेगी। लैब में हार्मोनल एनेलेसिस, कैंसर मारकर, एफएनएसी जांच, रीनल जांच, टिशू मारकर, वेन बयोप्सी समेत आदि जांचों की भी सुविधा बढ़ेगी। जांच के बाद रिपोर्ट लेने सेंटर नहीं आना होगा और मोबाइल पर ही रिपोर्ट पहुंचेगी।

यह मिलेंगी सुविधाएं

- बेसमेंट में मिलेगी रेडियोलॉजी की सुविधा
- ग्राउंड फ्लोर पर होगा सैंपल कलेक्शन कक्ष
- प्रथम तल में होगी जांच आदि की सुविधा
- द्वितीय तल में लैब टेक्नीशियनों का प्रशिक्षण आदि।

ऋषिकेश की हत्या का मुख्य आरोपी पवन लोकेशन बदल दे रहा चकमा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। शिवकटरा के कार चालक ऋषिकेश उर्फ सोना की हत्या का चकेरी पुलिस ने खुलासा किया। चार आरोपियों को जेल भेजा, जबकि मुख्य आरोपी पवन मल्लाह सहित चार आरोपी अभी भी फरार चल रहे हैं। पुलिस की छह टीमें लगातार दबिश दे रही हैं, लेकिन शातिर पवन मल्लाह लोकेशन बदल-बदलकर पुलिस को चकमा दे रहा है। पुलिस ने गोरखपुर और शहर में कई ठिकानों पर दबिश दी, लेकिन कामयाबी नहीं मिली।

चकेरी के शिवकटरा, कच्ची बस्ती निवासी 22 वर्षीय कार चालक ऋषिकेश बीते शुक्रवार की रात गणेश महोत्सव से लापता हुआ था। परिजनों की अपहरण व हत्या की शिकायत पर पुलिस ने गंगा में सर्च अभियान चलाया तो महाराजपुर के गौशाला घाट पर उसकी सिर कटी लाश मिली थी। पुलिस ने आशनाई में हत्या का खुलासा कर ऋषिकेश के दोस्त मोगली उर्फ प्रिंस, निखिल, आकाश उर्फ आलू और रिशु वर्मा को जेल भेज दिया। घटना में मुख्य आरोपी पवन मल्लाह, उसका छोटा भाई बॉबी, सत्यम गौतम, डौनी अभी भी फरार हैं। उसकी तलाश में पुलिस की छह टीमें लगी हैं। शातिर पवन लोकेशन बदल-बदलकर पुलिस को चकमा दे रहा है। उसकी लोकेशन इटावा में मिली थी। इससे आशंका जताई गई कि इटावा के रास्ते वह दिल्ली, फरीदाबाद की ओर भागने की कोशिश कर सकता है। पुलिस की एक टीम उसको तलाशते गोरखपुर भी पहुंची। शहर में भी पुलिस लगातार दबिश दे रही है। पकड़े गए आरोपियों ने पुलिस को बताया कि हत्या का वीडियो पवन ने अपने फोन में बनाया था। यह वीडियो पवन मल्लाह के मोबाइल में रिकार्ड है।

- फरार हत्यारोपियों की तलाश में लगीं छह टीमें, गोरखपुर भी पहुंचीं

खत्म होगा जाम | कानपुर मोबिलिटी प्लान के लिए एनएचएआई ने कराया सर्वे, प्रदूषण भी कम हो जाएगा

रिंग रोड बनने से कम होगा 40 प्रतिशत ट्रैफिक लोड

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। आउटर रिंग रोड बनने के बाद शहर के अंदर का 40 फीसदी ट्रैफिक लोड कम हो जाएगा। इसके अलावा प्रदूषण भी कम हो जाएगा। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआई) के सर्वे में यह बात सामने निकल कर आई है।

कानपुर शहर से होकर कई वाहन सवार लोगों को हाईवे की ओर जाना पड़ता है, जिसकी वजह से शहर के अंदर जाम के हालात रहते हैं। हाईवे से गुजरने वाले वाहन शहर में न आ सकें, इसलिए कानपुर शहर के चारों तरफ करीब 93 किलोमीटर लंबी रिंग रोड का निर्माण किया जा रहा है। रिंग रोड के बनने से दावा किया जा रहा है कि शहर में 40 फीसदी तक ट्रैफिक लोड कम हो जाएगा। जो ट्रैफिक लोड अभी शहर के बीच से गुजर कर गैरजनपदों की ओर जाता है, वह रिंग रोड से होकर गुजर जाएगा।

ट्रैफिक लोड के संबंध में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण ने एक सर्वे कराया है। कानपुर मोबिलिटी प्लान और कई अन्य ट्रैफिक स्टडी के मुताबिक शहर में प्रतिदिन डेढ़ लाख वाहन प्रवेश करते हैं और बाहर निकलते हैं। इनमें 60 प्रतिशत वाहनों को कानपुर में रुककर बाहर जाना होता है। जबकि करीब 60 हजार वाहन वैकल्पिक रूट न होने से शहर में आते हैं, जिनकी वजह से जाम लगता है। शहर में प्रतिदिन दो लाख से अधिक वाहन आवागमन करते हैं। एनएचएआई के एक अधिकारी के मुताबिक कानपुर मोबिलिटी प्लान के तहत कराए गए सर्वे में कानपुर का पीसीयू 205102 रिकार्ड किया गया है।

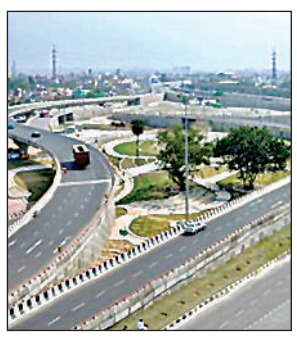

93 किलोमीटर लंबी रिंग रोड का निर्माण

02 लाख से अधिक वाहन आवागमन रोज

65 हजार वाहन रोज गुजरते हैं जीटी रोड से

35 प्रतिशत ट्रैफिक लोड कम होगा जीटी रोड पर

हाईवे से गुजरने वाले वाहनों की संख्या

- फतेहपुर-प्रयागराज हाईवे-27762
- कानपुर-हमीरपुर हाईवे-28542
- उन्नाव-लालगंज हाईवे-12020
- कानपुर-दिल्ली हाईवे-35323
- कानपुर-कन्नौज हाईवे- 17389
- कानपुर-लखनऊ हाईवे-30312

सभी नेशनल और स्टेट हाईवे से जुडेगी रिंग रोग

- एनएचएआई अधिकारियों के मुताबिक यह आउटर रिंग रोड कानपुर नगर से जुड़े सभी नेशनल और स्टेट हाईवे से जुड़ेगी। कानपुर-लखनऊ सिक्सलेन एक्सप्रेस वे और रिंग रोड का उन्नाव के आटा में जंक्शन बनेगा। रूमा के पास और कानपुर एयरपोर्ट से कनेक्टिविटी होगी। कन्नौज-कानपुर हाईवे से मंधना के पास रिंग रोड जुड़ेगी। कानपुर-हमीरपुर मार्ग पर रमईपुर के पास मगरसा से जुड़ेगी। दिल्ली-कानपुर हाईवे से यह सचेंडी के पास कनेक्ट होगी। इन सभी जगहों पर रिंग रोड पर चढ़ने और उतरने के लिए सर्विस लेन और अप्रोच रोड बनेगी।

जीटी रोड पर भी कम हो जाएगा लोड

- जीटी रोड पर अभी प्रतिदिन 65 हजार कार, बस और ट्रक शहर से होकर गुजरते हैं, लेकिन रिंग रोड बनने से जीटी रोड़ पर 35 प्रतिशत ट्रैफिक लोड कम हो जाएगा। इसके अलावा दिल्ली और हमीरपुर रूट से शहर आने वाले 45 प्रतिशत हैवी वाहन कम हो जाएंगे। राहगीरों को भी दिक्कत नहीं होगी और शहरवासियों को जाम की समस्या से बहुत राहत मिल जाएगी।

बुद्धा पार्क में नहीं होगा कोई परिवर्तन

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। इंदिरा नगर स्थित बुद्धा पार्क में कोई परिवर्तन नहीं होगा। महापौर प्रमिला पांडेय ने यहां शिवालय पार्क बनाने पर रोक लगा दी है। शहर से लेकर प्रदेश तक शुरू हुए विरोध के बाद महापौर ने मंगलवार को प्रस्ताव को रद्द कर दिया। महापौर ने नगर निगम अधिकारियों से कहा कि इन्दिरा नगर स्थित बुद्धा पार्क में शिवालय पार्क बनाये जाने का कोई प्रस्ताव अब तैयार नहीं किया जाएगा। उन्होंने बताया कि मैंने अधिकारियों को निर्देशित कर दिया है कि बुद्धा पार्क के स्वरूप में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया जाए। उन्होंने शिवालय पार्क के लिये अन्य भूमि का चयन करने के निर्देश दिए।

कल्याणपुर में स्थापित बुद्धा पार्क को परिवर्तित कर शिवालय पार्क बनाने को लेकर रविवार को बसपा प्रमुख मायावती और भीम आर्मी, असपा प्रमुख और सांसद चंद्रशेखर ने आपत्ति जताई थी। बुद्धा पार्क में 12 ज्योर्तिलिंग (प्रोटोटाइप) स्थापित करने का उन्होंने विरोध किया। मायावती ने अपने एक्स अकाउंट पर लिखा था कि कानपुर के बुद्धा पार्क में दूसरे धर्म के पूजा स्थल का निर्माण प्रस्तावित है, यह कतई भी उचित नहीं है। सरकार इसे तत्काल रोके, वरना यहां लोगों के बीच अशांति एवं घृणा फैल सकती है। वहीं, सांसद चंद्रशेखर ने भी मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखकर बुद्धा पार्क को शिवालय पार्क में परिवर्तित करने की योजना पर आपत्ति जताई थी।

नगर निगम ने शिवालय पार्क बनाने के लिए बुद्धा पार्क को चुना था। नगर निगम करीब 15 करोड़ रुपये खर्च करने जा रहा था। पिछले गुरुवार को नगर आयुक्त सुधीर कुमार ने अधिकारियों के साथ बुद्धा पार्क का स्थलीय निरीक्षण किया था। मायावती और चंद्रशेखर के विरोध के बाद नगर निगम बैकफुट पर आया और सोमवार देर रात एक्स पर जवाब देते हुए ऐसे किसी भी प्रस्ताव के होने पर मना किया था। क दिन पहले कुछ पार्षदों ने भी इसका विरोध किया था। बता दें कि शिवालय पार्क के लिए इससे पहले शताब्दी पार्क पनकी, रूमा स्थित पार्क को चुना गया था।

इंदिरा नगर स्थित बुद्धा पार्क में लगी भगवान बुद्ध की प्रतिमा। अमृत विचार

- इंदिरा नगर के बुद्धा पार्क में शिवालय पार्क बनाने की थी योजना, फैसला बदला

अमृत विचार

www.amritvichar.com

सिटी ब्रीफ

भर्ती के पदों की अर्हता में छेड़छाड़ का आरोप

कानपुर। सीएसए में कृषि विषय विशेषज्ञों के पदों के लिए साक्षात्कार की प्रक्रिया शुरू होने वाली है। छह सितंबर से आठ सितंबर तक साक्षात्कार प्रक्रिया के लिए अभ्यर्थियों को शामिल होने के लिए आमंत्रण पत्र भेजे गए हैं। सीएसए कृषि विश्वविद्यालय के अधीन संचालित 15 केंद्रों पर विज्ञानियों की भर्ती की जानी है। अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलावा पत्र भी भेजा जा रहा है। दूसरी ओर शिकायतकर्ताओं के अनुसार भर्ती के लिए पदों की अर्हता में छेड़छाड़ की गई है, लेकिन इस शिकायत पर अभी तक कोई ठोस कार्रवाई नहीं हो सकी है।

पांच दिवसीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण

कानपुर। नर्वल के जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में पांच दिवसीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण संपूर्ण का आयोजन हुआ। यह प्रशिक्षण डायट में संचालित प्रशिक्षणों में अब तक का सबसे बड़ा प्रशिक्षण हैं। यह प्रशिक्षण 15 बैचों में संचालित किया गया। निपुण भारत मिशन, एनईपी-2020, एनसीईआरटी द्वारा संचालित नई पाठ्यपुस्तकों, विद्यालय नेतृत्व एवं प्रबंधन, समावेशी शिक्षा, विभिन्न विषयों की नई शिक्षण विधियां, नवाचारी शिक्षण विधायें, आईसीटी के उपयोग, आपदा प्रबन्धन, साइबर क्राइम आदि विषयों में सत्र संचालित कर प्रशिक्षण प्रदान दिया गया।

राघवेंद्र दास बने मंडलेश्वर

कानपुर। कैनाल रोड स्थित शक्ति दुर्गा मंदिर में मंगलवार को महंत कथावाचक राघवेंद्र दास को श्री श्री 108 श्री मंडलेश्वर की उपाधि प्रदान की गई। अंतरराष्ट्रीय सप्तऋषि अखाड़ा परिषद ने उन्हें इस उपाधि से प्रमाण पत्र देते हुए सम्मानित किया। परिषद की उम्मीद है कि वह अपनी सेवा, भक्ति और साधना से सनातन धर्म की ध्वजा देश-विदेश में फहराकर धर्म की रक्षा करेंगे।

प्रतिभावान दिव्यांग दिखाएंगे अपना हुनर

कानपुर। दिव्यांग डेवलपमेंट सोसायटी के सचिव मनप्रीत कौर ने बताया कि दिव्यांग बच्चों की प्रतिभा को निखारने एवं हुनर को दुनिया के सामने लाने के लिए सोसायटी द्वारा रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। जिसमें देशभर के 100 से अधिक दिव्यांग बच्चे अपनी कला, आत्मविश्वास और सपनों के साथ मंच पर उतरेंगे। ऐसे आयोजनों से उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और प्रेरणा मिलती है।

रेव मोती तिराहे से अब वाहन रावतपुर जा सकेंगे

डीसीपी यातायात के साथ व्यापारियों ने किया निरीक्षण, व्यापारियों ने जाम से निजात दिलाने के लिए दिए कई सुझाव

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। शहर में जगह-जगह लग रहे जाम की वजह से आम जनता भी काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। मंगलवार को फीटा उद्योग व्यापार संघ, हर्ष नगर व्यापार मंडल व द इंडस्ट्रियल एस्टेट मैन्युफैक्चरर एसोसिएशन के पदाधिकारियों और सदस्यों ने उपायुक्त यातायात के साथ प्रमुख चौराहों व मार्गों का भ्रमण किया, जहां पर जाम लगता है। जाम से बचाव के लिए व्यापारियों ने अपने-अपने सुझाव दिए। फैसला हुआ कि रेव मोती तिराहे से वाहन सीधे रावतपुर की ओर जा सकेंगे।

उपयुक्त यातायात रविंद्र कुमार ने फीटा उद्योग व्यापार संघ के महासचिव उमंग अग्रवाल, हर्ष नगर व्यापार मंडल के अध्यक्ष अनूप जैन व द इंडस्ट्रियल एस्टेट मैन्युफैक्चरर एसोसिएशन के अध्यक्ष शिव कुमार गुप्ता, अंकित जैन, विशाल जिंदल, कौशल बेहरानी आदि के साथ मोतीझील चौराहे से नरेंद्र मोहन सेतु जाने वाले मार्ग का निरीक्षण किया। मुख्य चौराहों पर जाम लगने के कारणों को समझा। महासचिव उमंग अग्रवाल ने सुझाव दिया कि तुरंत ही दो ट्रैफिक उप निरीक्षक और 8 कांस्टेबलों की पूरे क्षेत्र में ड्यूटी लगाई जाए, जो यातायात को रुकने न दें और लगातार आवागमन जारी रखें। यह ड्यूटी रोजाना सुबह नौ से दोपहर तीन बजे तक और शाम को छह बजे से रात 10 बजे तक रहे। हैलट गेट से दवा मार्केट तक सड़क के नीचे से एक सबवे बनाने का सुझाव दिया, जिसपर उपायुक्त ने सहमति जताई। मांग हुई कि रेव मोती और रिजेंसी अस्पताल वाली रोड पर वाहनों को सीधे जाने दिया जाए। इसपर उपायुक्त ने सहमति जताई। रेव मोती तिराहे से वाहन रावतपुर जा सकेंगे।

उपयुक्त यातायात रविंद्र कुमार के साथ भ्रमण करते फीटा उद्योग व्यापार संघ के महासचिव उमंग अग्रवाल व अन्य। अमृत विचार

जगह-जगह सड़कों पर गड्ढे और खुले मैनहोल बन रहे जाम की वजह

- गोल चौराहा होते हुए कार्डियोलॉजी, गुटैया, रावतपुर तक सड़क पर कई जगह मैनहोल और गड्ढे मिले, जो खुले हुए थे, जिनकी वजह से ही यातायात में बाधित उत्पन्न हो रही थी। इसके अलावा जगह-जगह पर कूड़ा और कीचड़ भी पड़ा था। सड़क पर सामान रखकर के अतिक्रमण किया गया था। वाहन सड़क पर बेतरतीब ढ़ग से खड़े थे, सड़क में कई स्थान पर जल भराव था। सभी विभागों की कमियों को इंगित करते हुए तत्काल यातायात की कमियों को ठीक करने के लिए पत्र भेजने का निर्णय हुआ।

गुटैया क्रासिंग से बैरीकेड हटाए व हैलट से दुकानें

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- हैलट के पास जाम में फंसकर दो मरीजों की मौत के बाद जागी ट्रैफिक पुलिस
- हैलट से लेकर पुल तक ट्रैफिक टीम लगी रही, आटो-टेंपो खदेड़े अतिक्रमण हटाया

अमृत विचार। सोमवार को हैलट मेट्रो स्टेशन के पास जाम में फंसने से दो मरीजों की मौत हो गई थी, उसके बाद मंगलवार को ट्रैफिक पुलिस जागी और मोतीझील से हैलट पुल तक ट्रैफिक की टीम लगी रही और किसी भी वाहन को रुकने नहीं दिया। फुटपाथ पर फैली दुकानों को भी हटा दिया गया जिससे आसानी से यातायात चलता रहा।

ट्रैफिक पुलिस ने हैलट गेट के सामने ऑटो, टेंपो खदेड़ दिए। टेंपो, ऑटो को अपने निर्धारित स्थानों पर स्टापेज लेने की हिदायत दी गई। हैलट के आसपास अतिक्रमण करके लगाई गई दुकानों और खोमचों को हटवा दिया गया। उन्हें आइंदा से दुकानें लगाने पर एफआईआर और जब्तीकरण की चेतावनी दी गई। मेडिकल स्टोरों के आसपास खड़े वाहनों का भी ट्रैफिक पुलिस ने चालान किया जिसपर मेडिकल स्टोर संचालकों और ट्रैफिक पुलिस कर्मियों से तीखी झड़प हुई। हंगामा होने की जानकारी मिलने पर डीसीपी ट्रैफिक रविंद्र कुमार भी मौके पर पहुंचे और मेडिकल स्टोर संचालकों को यातायात नियम समझाए। इसके अलावा राहगीरों को हो रही परेशानी को देखते हुए गुटैया क्रासिंग के आसपास लगे बैरीकेडिंग को हटा दिया गया। सर्वोदय नगर व्यापार मंडल के अध्यक्ष अजय सिंह, विजय दत्त शुक्ला, मीडिया प्रभारी सिराज अहमद ने ट्रैफिक पुलिस के इस कदम की सराहना की।

मन की बात सुनने में प्रदेश में दक्षिण रहा प्रथम

कानपुर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मन की बात कार्यक्रम को भाजपा दक्षिण में शत प्रतिशत बूथों पर सुना गया। ग्रामीण दूसरे और उत्तर तीसरे स्थान पर रहा। कानपुर दक्षिण में कुल बूथ 1145 में 1145 , ग्रामीण में कुल 1217 में 1216 और उत्तर में कुल 1258 में 1142 बूथों पर मन की बात कार्यक्रम सुना गया। संख्या के हिसाब से दक्षिण जिला पहले स्थान पर है।

ग्रामीण दूसरे और उत्तर जिला तीसरे स्थान पर रहा। भाजपा जिला मीडिया प्रभारी मनीष त्रिपाठी ने यह जानकारी दी। केशव नगर स्थित भाजपा दक्षिण पार्टी कार्यालय में सुंदर कांड का आयोजन किया गया। पार्टी कार्यकर्ताओं ने ग्यारह बार सुंदर कांड का पाठ किया। कार्यक्रम में भाजपा दक्षिण जिलाध्यक्ष शिवराम सिंह आईटी एवं सोशल मीडिया विभाग एवं मॉनिटरिंग टीम के कार्यकर्ताओं को सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि जहां दक्षिण जिले की सभी विधान सभाओं में शत प्रतिशत बूथों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के मन की बात कार्यक्रम सुना गया। वहीं उत्तर जिला मन की बात सुनने वालों में पीछे रह गया।

बाबा साहब के नाम पर हो एयरपोर्ट

कानपुर। कानपुर एयरपोर्ट का नाम वीरांगना झलकारी बाई या बाबा साहब के नाम पर रखा जाए। एयरपोर्ट के नामकरण को लेकर राजनीति बर्दाश्त नहीं की जाएगी। कानपुर महानगर कांग्रेस कमेटी ने मंगलवार को आपात बैठक में यह कहकर वीरांगना झलकारी बाई और बाबा साहब के नाम का प्रस्ताव रखा।

मंगलवार को तिलक हाल में कानपुर महानगर कांग्रेस के अध्यक्ष पवन गुप्ता की अगुवाई में कांग्रेसियों की बैठक हुई जिसमें प्रस्ताव पारित हुआ कि कानपुर एयरपोर्ट का नाम वीरांगना झलकारी बाई या बाबा साहब भीम राम अंबेडकर के नाम पर रखा जाए। महानगर अध्यक्ष ने बताया कि प्रस्ताव को राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, गृह मंत्री और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी को भेजा जाएगा। पवन गुप्ता ने कहा कि दलित समाज के सम्मान को कांग्रेस ने हमेशा प्राथमिकता दी है।

जाम का झाम

हैलट अस्पताल के पास सोमवार को जाम में फंसकर दो मरीजों की मौत हो गई थी। इसके बाद मंगलवार को ट्रैफिक टीम सड़क पर उतरी लेकिन जाम की अराजकता खत्म न हो सकी। इस रोड पर कई बार जाम लगा। अमृत विचार

कैंसर दवाओं पर मूल्य नियंत्रण नहीं

कानपुर। नवीन मार्केट स्थित सपा कार्यालय में मंगलवार को पीडीए थिंक नीति निर्धारण समिति की बैठक हुई, जिसमें सपाइयों ने नकली दवाओं की बिक्री से हो रहे मरीजो के नुकसान को लेकर मंथन किया। नगर अध्यक्ष हाजी फजल महमूद ने कहा कि जीवन रक्षक कई दवाएं नकली बिकने से मरीजों का दर्द कम नहीं हो रहा है जिसकी वजह से न सिर्फ मरीज, बल्कि उसका पूरा परिवार परेशान हो रहा है। शासन को नकली दवाओं पर तत्काल रोक लगानी चाहिए। कहा कि राज्यसभा की एक समिति ने कैंसर की दवाओं के बढ़ते हुए मूल्यों पर चिंता व्यक्त की थी, लेकिन आज तक कैंसर की दवाओं के मूल्यों पर नियंत्रण नहीं किया गया है। जिसके कारण कैंसर के रोगी महंगा इलाज कराने को मजबूर हैं। इस दौरान केके शुक्ला, शैलेंद्र यादव, संजय सिंह बंटी सेंगर, फखरे आलम, शबाब अबरार रहे।

लकी ड्रा में दिए गये पुरस्कार। अमृत विचार

लकी ड्रा में अमन को मिली एक्टिवा स्कूटी

कार्यालय संवाददाता,कानपुर

अमृत विचार। प्रीमियम तारपुलिन की निर्माता फ्लेक्सी शील्ड प्लास्ट कंपनी ने अपने डिस्ट्रीब्यूटर्स व डीलर्स के लिए लकी-ड्रा का आयोजन किया। लकी ड्रा में प्रथम पुरस्कार एक्टिवा स्कूटी, द्वितीय पुरस्कार 11 टीवी, तृतीय पुरस्कार में 21 केतली, टोस्टर, सैंड विच मेकर, चतुर्थ पुरस्कार में 116 अरिस्टो क्रैट ट्राली बैग और पंचम पुरस्कार में 51 अरिस्टो क्रैट बैग शामिल था। मां तारा ट्रेडर्स गाजीपुर के अमन गुप्ता को एक्टिवा स्कूटी मिली। पुरस्कार पाकर डिस्ट्रीब्यूटर्स व डीलर्स के चेहरे खिल उठे। इस दौरान जीतेंद्र गुप्ता, मिथलेश गुप्ता, राहुल गुप्ता, गौरव गुप्त, सोनम गुप्ता, कृति गुप्ता आदि लोग रहे।

जरीब चौकी में 364.88 लाख से हटेंगी लाइनें

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। जरीब चौकी पर प्रस्तावित 4 लेन उपरिगामी सेतु के निर्माण कार्य के लिए यहां पेयजल लाइनें हटाने का प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है। 364.88 लाख से पेयजल लाइनों को शिफ्ट किया जाएगा। जलनिगम ने एस्टीमेट तैयार कर लिया है।

जरीब चौकी पर प्रस्तावित आरओबी के लिए यूटिलिटी शिफ्टिंग को लेकर नगर आयुक्त सुधीर कुमार ने पिछले दिनों सेतु निर्माण निगम, जलनिगम और जलकल अधिकारियों के साथ बैठक की थी। नगर आयुक्त ने जलनिगम और जलकल के साथ नगर निगम के अधिकारियों से भी शिफ्ट करने वाली पाइप लाइनों का विवरण मांगा। जलनिगम ने बताया कि 48 इंच की सीवर लाइन विजय नगर से होते हुए जरीब चौकी के पास से निकली है। इसे हटाया जाना है। इसके साथ ही जलकल की 10 इंच की पेयजल लाइन को भी हटाया जाना है। नगर आयुक्त ने अधिकारियों से सीवर व पेयजल लाइनों को हटाने का प्रस्ताव मांगा था। जलनिगम नगरीय के अधिशाषी अभियंता प्रवीन यादव ने बताया कि पेयजल लाइनों को हटाने के लिए 364.88 लाख का एस्टीमेट बनाया गया है।

कई वीडीओ कॉल सेंटर के जाल में फंसे वेतन कटा

कानपुर। विकास भवन में विकास कार्यों की मानीटरिंग एवं अधिकारियों की उपस्थिति चेक करने के लिए कॉल सेंटर शुरू किया गया है। कॉल सेंटर से अधिकारियों को फोन करके लोकेशन ली जा रही है। जो गैरहाजिर रहा उसका वेतन काटा गया।

सीडीओ दीक्षा जैन द्वारा विकास भवन में कॉल सेंटर की स्थापना की गई है, जहां से मोबाइल पर विकास कार्यों की समीक्षा की जा रही है। मंगलवार को विकास खंड ककवन में तैनात ग्राम विकास अधिकारी (वीडीओ) समीर गुप्ता को फोन किया गया लेकिन जवाब नहीं मिला। सचिव प्रदीप कुमार अनुपस्थित पाए गये। इन पर कार्रवाई के आदेश दिए गए हैं। विकास खंड पतारा से ग्राम पंचायत अधिकारी प्रिया बाजपेई कार्य क्षेत्र से गायब मिलीं।

डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर की तर्ज पर फोरलेन सड़क

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- विजन-2051 के तहत प्रस्ताव को किया गया शामिल, 1450 करोड़ रुपये खर्च होने का अनुमान
- भारी व अन्य वाहन शहर के अंदर एंट्री किए बगैर ही बाहर निकल जाएंगे

अमृत विचार। शहर में विजन-2051 के तहत रेलवे के डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर की तर्ज पर पीडब्ल्यूडी फोरलेन रोड बनाएगा। इसमें करीब 1450 करोड़ रुपये खर्च होंगे। ग्रीन फील्ड फ्रेट कॉरिडोर भौंतीखेड़ा शालीबार बाग से पतरस, नौबस्ता आवास विकास, परसौली व नगवां होते हुए रूमा इंडस्ट्रियल क्षेत्र तक बनेगा। फ्रेट कॉरिडोर रोड आउटर रिंग रोड से कनेक्ट होगी। जिससे भारी व अन्य वाहन शहर के अंदर एंट्री किए बगैर ही बाहर निकल जाए। इसके बनने से भौंती-रामादेवी बाईपास पर ट्रैफिक लोड कम हो जाएगा। ऐसा दावा मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सामने भी प्रजेंटेशन भी किया जा चुका है।

शहर के विस्तारीकरण के लिए केडीए ने प्रस्ताव तैयार किया है। इसमें कई बड़े प्रोजेक्ट को शामिल किया गया है। इसी के तहत रेलवे ने डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर प्रोजेक्ट के अंतर्गत न्यू भाऊपुर व हाथीपुर में स्टेशन बनाए हैं।

इनसे लिंक रोड नेटवर्क तैयार किया जा रहे हैं। जिससे ट्रक व अन्य व्हीकल आसानी से आ-जा सकेंगे। इसके साथ ही अफसर इस वजह से बढ़ने वाले ट्रैफिक लोड को लेकर माथापच्ची भी कर रहे हैं। जिससे सिटी के अन्दर ट्रैफिक अराजकता व जाम की स्थिति न रहे। बिना वजह ऐसी गाड़ियों की एंट्री न हो सके। इसी वजह से भौंतीखेड़ा से रूमा इंडस्ट्रियल एरिया तक नई फोरलेन चौड़ी रोड बनाने की तैयारी हो रही है। फ्रेट कॉरिडोर पर आउटर रिंग रोड, न्यू ट्रांसपोर्ट नगर व इटावा-कानपुर नेशनल हाईवे से आसानी से गाड़ियां पहुंच सकेंगी। अधिकारियों के अनुसार इटावा-कानपुर और आउटर रिंग रोड के बीच से होकर यह फ्रेट कॉरिडोर गुजरेगा। इस फ्रेट कारिडोर की लंबाई लगभग 22 किलोमीटर होगी। इसके लिए जमीनों को चौड़ीकरण होना है।

हो चुकी है विजन को लेकर बैठक

केडीए में कानपुर विजन 2051 को लेकर बैठक हो चुकी है। जिसमें तैयार कराये गये वीजन, इंपलीमेनटेशन, स्ट्रेटजी और इंट्रीग्रेटेड इंफ्रास्ट्रक्चर प्लान को लेकर मंथन हुआ है। केडीए उपाध्यक्ष मदन सिंह ने बताया कि नया कानपुर बनाने को लेकर लगातार कार्य जारी हैं। मुख्यमंत्री के आदेश 50 हजार करोड़ रुपये के कार्यों को लेकर भी तैयारी शुरू की गई है। जिसमें सड़कों के चौड़ीकरण के साथ ही एलिवेटेड सड़कें, न्यू जेनरेशन इंडस्ट्री, आईटी पार्क, पुल, पार्किंग व्यवस्था सभी कुछ होगा।

एक्वॉयर किया जाएगा। कमिश्नर के.विजयेन्द्र पांडियन की ओर से इस फ्रेट कॉरिडोर पर आने वाले खर्च की जानकारी शासन को दी है। पीडब्ल्यूडी ग्रीनफील्ड फ्रेट कॉरिडोर बनाने के साथ ही सड़कों को चौड़ा करने का काम भी करेगा। फाइनेंशियल ईयर 2025-26 का वर्क प्लान तैयार किया है। इसमें शहर क प्रमुख सड़कों जिसमें घंटाघर से डिप्टी पड़ाव, लालइमली से एमजी कालेज होते हुए वीआईपी रोड, विजय नगर चौराहा से बाईपास, डबल पुलिया आदि रोड्स शामिल की गई है। अधिकारियों ने बताया कि कल्याणपुर-बिठूर रोड, पनकी मंदिर-पड़ाव क्रॉसिंग, विजय नगर-बाईपास सड़क का

वाहे गुरु

नगर कीर्तन में बोले सो निहाल-सतश्री अकाल के जयकारे, जगह जगह स्वागत

न किसी को डराओ और न डरो, निर्भय होकर जीवन जियो

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

असम से शहर आया नगर कीर्तन। अमृत विचार

शबद-कीर्तन सुनने के लिए आई संगत। अमृत विचार

- सजी-धजी पालकी में विराजमान श्री गुरु ग्रंथ साहिब के समक्ष मत्था टेका

अमृत विचार। करतारपुर के युद्ध में श्री गुरु तेग बहादुर साहिब ने तलवार से अभूतपूर्व शौर्य का परिचय दिया। गुरु का कहना था कि मानव को इस संसार में निर्भय होकर जीना चाहिए। उसे न तो किसी को डराना चाहिए और न ही किसी से डरना चाहिए। मानव को श्री गुरु तेग बहादुर साहिब का यही पैगाम देने के लिए असम से नगर कीर्तन निकाला गया है जिसका कानपुर में जोरदार स्वागत किया गया। झमाझम बारिश के दौरान नगर कीर्तन पर पुष्पवर्षा की गई और जगह जगह लंगर किया गया। बोले सो निहाल-सतश्री अकाल के जयकारे गूंजते रहे।

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा खालसाई परंपराओं के अनुसार गुरुद्वारा साहिब पातशाही नौवीं धोबरी साहिब गुवाहाटी (असम) से ऐतिहासिक नगर कीर्तन सोमवार की देर रात कानपुर पहुंचा। इस नगर कीर्तन का रामादेवी, गुरुद्वारा भाई बन्नो साहिब, गुरुद्वारा कीर्तनगढ़, गुमटी नंबर पांच, संतनगर चौराहा समेत विभिन्न क्षेत्रों में जोरदार स्वागत किया गया। इस मौके पर गुरुद्वारों को रंगबिरंगी लाइटों से सजाया गया। श्री गुरु सिंह सभा के चेयरमैन सरदार हरविंदर सिंह लार्ड, सुखविंदर सिंह लाडी आदि की देखरेख में मंगलवार को गुरुद्वारा रणजीत नगर से नगर कीर्तन लखनऊ के लिए रवाना हुआ। इस नगर कीर्तन का शास्त्रीनगर, गोविंद नगर, किदवई नगर एवं गौशाला, गुरुद्वारा रतनलाल नगर में स्वागत किया गया। नगर कीर्तन में हरगोबिंद सिंह जी, श्री गुरु तेग बहादुर साहब, गुरु गोविंद सिंह जी के शस्त्र एक वाहन में रखे थे जिसका संगत ने दर्शन किया। इस मौके पर गुरदीप सिंह छाबड़ा, मीतू सागरी, हरमिंदर सिंह लोंगोवाल, करमजीत सिंह, जसबीर सिंह सलूजा, गगन ढींगरा, अडजीत सिंह भाटिया, मनमीत सिंह, राजू पहलवान, जयदीप सिंह राजा, चरणजीत सिंह, इंदरजीत सिंह सलूजा, महेंद्र सिंह भाटिया आदि थे। हरविंदर सिंह लार्ड, सोनू रेखी, रविन्दर सिंह एडवोकेट, मनमीत सिंह, टीपी सिंह सोनू, गगनदीप सिंह, हरजीत सिंह, दविन्दर सिंह ने संगत की सेवा की।

साउथ में दो घरों से नकदी-जेवर पार

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। दक्षिण के नौबस्ता और बर्रा थानाक्षेत्र में सोमवार रात चोरों ने चोरी की वारदातों को अंजाम दिया। दोनों जगह से नगदी और माल समेट ले गए। भागते समय आहट पाकर पीड़ित ने पीछा किया तो तमंचा दिखाकर धमकाया। पुलिस आसपास के सीसीटीवी कैमरे खंगाल रही है।

नौबस्ता केस्को सबस्टेशन के पास कच्ची बस्ती में रहने वाले सुशील द्विवेदी की घर में ही चाय की दुकान हैं। सुशील के अनुसार बीती देर रात उनके घर में चोर घुसा आया। चोरी करने के बाद वह भाग रहा था, तभी आहट होने पर उनकी आंख खुल गई। इस पर चोर को पकड़ने का प्रयास कर पीछा किया तो उसके साथियों ने तमंचा दिखाकर जान से मारने की धमकी दी। तमंचा देख वह डरकर भाग और चोर फरार हो गए। सुशील ने बताया कि चोर अलमारी में रखे पत्नी के गले का लाकेट, अंगूठी, पायल समेत एक लाख रुपये का जेवर और 2200 रुपये ले गए हैं। वहीं बर्रा के वैदेही विहार जरौली फेस-टू निवासी रामजी पुरवार की घर में ही परचून की दुकान है। देर रात चोरों ने दुकान का ताला तोड़कर गुल्लक में रखे 25 हजार रुपये ले गए। रामजी ने बताया कि छह महीने में चोरों ने दूसरी बार चोरी की है। इससे पहले दो मार्च को चोरों ने दुकान के ताले तोड़े थे। डीसीपी दक्षिण दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया कि चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए गश्त बढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं।

सिटी ब्रीफ

इंटर स्कूल जिम्नास्टिक प्रतियोगिता में दिखाया दम

कानपुर। स्वरूपनगर स्थित एलेन किड्स स्कूल में नेशनल स्पोर्ट्स डे पर इंटर-स्कूल जिम्नास्टिक प्रतियोगिता हुई। जिसमें शहर के 16 स्कूलों के सैकड़ों बच्चों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता 4 से 10 वर्ष के आयु वर्ग में आयोजित हुई। परिणाम स्वरूप डीपीएस कल्याणपुर 16 अंक प्राप्त कर ओवरऑल जिम्नास्टिक चैंपियन रहा। एलेन हाउस ने 12 अंक प्राप्त कर दूसरे व एलेन किड्स स्कूल ने तीसरा हासिल किया। इस मौके पर नलिनी भार्गव, यूपी टेबल टेनिस एसोसिएशन के अध्यक्ष संजीव पाठक, श्याम मिश्रा, नरेंद्र प्रताप सिंह, संजय मिश्रा, संजय तिवारी, अरविंद त्रिपाठी, आशुतोष सत्यम झा, रचना अवस्थी आदि मौजूद रहीं।

छात्रावासों में पोषण मूल्यांकन शिविर

कानपुर। सीएसजेएमयू परिसर स्थित गंगा महिला छात्रावास में मानव पोषण विभाग (स्वास्थ्य विज्ञान विद्यालय) के सहयोग से राष्ट्रीय पोषण सप्ताह की शुरुआत की गई है। इसके तहत छात्रावासों में पोषण मूल्यांकन शिविर का शुभारंभ किया गया, जो सात सितंबर तक चलेगा। इस पखवाड़े में छात्रावास में छात्र व छात्राओं का उनके पोषण की स्थिति के लिए मूल्यांकन किया जाएगा। छात्रावास की मेस में परोसे जाने वाले भोजन की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया जाएगा। इस दौरान डॉ. अनामिका दीक्षित, डॉ. आमना जैदी, चीफ वार्डेन डॉ. सर्वेश मणि त्रिपाठी, सहायक चीफ वार्डेन डॉ. सोनी गुप्ता व छात्र-छात्राएं मौजूद रहीं।

सफाई आधा ईमान का हिस्सा

कानपुर। एमएमए जौहर फैन्स एसोसिएशन के द्वारा मनाये जा रहे जश्ने आमदे रसूल सप्ताह के अंतर्गत नादिया हाउस सुजातगंज में शाहिद शाह अलवी के संयोजन में कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसकी सरपरस्ती करते हुए मुफ्ती डॉ. युनूस ओवैसी ने कहा कि सफाई आधा ईमान का हिस्सा है। ईमानदारी से जीवन गुजारें। मौलाना मोहम्मद हस्सान कादरी नक्शबंदी ने अध्यक्षता की। हयात जफर हाशमी ने विचार रखे। मुफ्ती कासिम अमजदी, सैय्यद अब्दुल बारी, रफी खान, मोहम्मद सईद, चांद, मोहम्मद तौफीक, डॉ जीशान, शहनवाज अंसारी आदि मौजूद रहे।

बुढ़वा मंगल पर पनकी हनुमान मंदिर में लाखों भक्तों की भीड़ रही। अमृत विचार

बारिश के बीच मंदिरों में गूंजा जय हनुमान और जय श्रीराम

बुढ़वा मंगल पर पंचमुखी पनकी हनुमान मंदिर के साथ अन्य मंदिरों में उमड़ी भीड़

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। मंगलवार को बुढ़वा मंगल पर बारिश पर श्रद्धा भारी दिखी। शहर के पंचमुखी पनकी हनुमान मंदिर के साथ ही अन्य मंदिरों में भी श्रद्धा का सैलाब उमड़ा। पनकी मंदिर में पंचमुखी हनुमान के दर्शन के लिए भारी वर्षा के बीच सोमवार रात से मंगलवार रात तक लंबी लाइन लगी रही। दिनभर में यहां 5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने दर्शन किए। लंबी-लंबी लाइन के बीच भक्तों ने अपनी बारी का घंटों खड़े होकर आस्था और उत्साह के साथ भगवान प्रभु श्रीराम और हनुमान बाबा के जयकारे लगाए। मंदिरों में उमड़े श्रद्धालुओं ने हनुमान चालीसा का पाठ भी किया। जय-जय हनुमान गोंसाई, कृपा करहु गुरुदेव की नाही और नासे रोग, हरे सब पीरा की पंक्तियां बोलते हुए बाबा से अपने मन की बात साझा की। जीटी रोड स्थित दक्षिणेश्वर हनुमान मंदिर, कंपनी बाग चौराहा स्थित संकटमोचन मंदिर, मौनीघाट, श्री बालाजी मंदिर नेहरूनगर, किदवईनगर स्थित सोटेबाबा हनुमान मंदिर, चकेरी स्थित हनुमान मंदिर, घाटमपुर स्थित कुढ़नी मंदिर में देर रात से ही भक्तों की कतारें लगी रहीं। महिला व पुरुष भक्तों को अलग-अलग लाइन में लगकर दर्शन करने की व्यवस्था के लिए बैरिकेडिंग की गई है। लाइनों में बीच-बीच में पवन सुत हनुमान की जय के जयकारों से वातावरण गुंजायमान हो रहा था। शहरभर के अन्य हनुमान मंदिरों में भव्य श्रृंगार के साथ सुंदरकांड पाठ हो रहे हैं। सुबह से ही मंदिरों व आस-पास लोगों ने भंड़ारे भी कराए।

पनकी मंदिर में हनुमान जी की आरती की गई। अमृत विचार

- सुबह से ही जगह-जगह हुए भंडारे, मंदिरों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन

सीसीटीवी से निगरानी तैनात रही पुलिस

मंदिरों में सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की गई। पार्किंग स्थल पर ही वाहन खड़े कराए जा रहे थे। जीटी रोड स्थित दक्षिणेश्वर मंदिर, किदवई नगर स्थित सोटे वाले बाबा के मंदिर, पी रोड स्थित बालाजी मंदिर समेत शहर भर के हनुमान मंदिरों में भीगते हुए सुबह से ही श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंचते रहे। महाराजपुर के सलेमपुर स्थित बालाजी मंदिर में सुबह मंगला आरती के बाद भगवान के दर्शनों के लिए भक्तों की भीड़ उमड़ी।

बाबा को सवा मन लड्डू का भोग

पंचमुखी हनुमान मंदिर पनकी में सोमवार रात से श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंच गए थे। रात 12:30 बजे सवा मन लड्डू का भोग लगाने के बाद हनुमान जी का स्वर्ण श्रृंगार किया गया। रात एक बजे श्रद्धालुओं के लिए पट खोले गए। गेट एक पर महिलाओं और पुरुषों की अलग-अलग लाइन लगाई गई थी।

हनुमान जी की झांकी ने मन मोहा

कानपुर। श्रीराधा कृष्ण मंदिर शारदा नगर में 21 वें बुढ़वा मंगल महोत्सव का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने हनुमान जी का श्रृंगार किया और दर्शन पूजन कर सुख समृद्धि की कामना की। इस दौरान संगीतमय सुंदरकांड व भजन का आयोजन किया गया। राधा कृष्ण व हनुमान जी की झांकी ने श्रद्धालुओं के मन मोह लिए।

इस अवसर पर मुख्य रूप से डाक्टर अशोक कटियार, रमाकांत मिश्रा, प्रमोद पाण्डेय, अभिषेक द्विवेदी, दिनेश त्रिपाठी, अशोक दुबे, शशिकांत, योगेंद्र कटियार, अजय श्रीवास्तव, शांतनु मिश्रा, संजय शर्मा, प्रमोद सोनकिया आदि लोग उपस्थित रहे।

शारदा नगर में संगीतमय सुंदरकांड हुआ। अमृत विचार

कलक्टरगंज में बाबा का श्रृंगार।

हनुमान जी से मांगी सुख और समृद्धि

कानपुर। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की बैठक स्थली प्राचीन बजरंगबली मंदिर कलक्टरगंज में बुढ़वा मंगल पर संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन किया गया। श्रद्धालुओं ने 100 किलो लड्डू का भोग हनुमान जी को लगाया। मंदिर प्रमुख सोमदत्त अग्निहोत्री ने प्रभु का श्रृंगार किया। विधायक अमिताभ बाजपेई, शिवम दीक्षित, गीता शुक्ला, वेद प्रकाश अग्निहोत्री, संजय अग्निहोत्री, रवि अग्निहोत्री, आयुष अग्निहोत्री, प्रज्ज्वल अग्निहोत्री, मधुबन बिहारी गुप्ता, सुरेंद्र यादव, अशोक केसरवानी, मान पांडे, अवधेश गुप्ता, संदीप यादव, अरुण गुप्ता, चंदाकर दीक्षित रहे।

अंजनी पुरम सेवा समिति ने किया विशाल भंडारा

कानपुर। पनकी एफ ब्लाक अंजनी पुरम सेवा समिति ने बुढ़वा मंगल पर 24वें विशाल भंडारा का आयोजन किया। समिति के मुख्य भंडारा व्यवस्थापक दुर्गेश कुमार गौड़ ने बताया कि भंडारा देर रात तक चला। समिति के प्रचार प्रसार व्यस्थापक करुणेश श्रीवास्तव ने बताया कि 30 हजार से अधिक श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। इस दौरान बीपी श्रीवास्तव, दिनकर द्विवेदी, रवि चतुर्वेदी, रमाकांत तिवारी, रिंकू शुक्ला, प्रशांत द्विवेदी, कपिल, अविनाश, बाल युवा मंजुल, शोभन, शिवम, अभिषेक, वरुण, मोनू, अनुज, अर्चित, ऋषि, यश, शिवा आदि रहे।

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार

क्लासीफाइड

विज्ञापन हेतु अमृत विचार कार्यालय में सम्पर्क करें

सूचना

मैं जमालुददीन, Jamaluddin पुत्र अब्दुलसत्तार निवासी:– ग्राम बढ़या माफ़ी पो. सेमरियावन बढ़या माफ़ी सन्त कबीरनगर का हूँ, मैंने अपना नाम Mohammad Jamal से बदल कर Jamaluddin रख लिया हैं स आज से मुझे इसी नाम से जाना व पहचाना जाये।

सूचना

में दुखरन पुत्र बाला प्रसाद, निवासी सोनौरागाउपुर परगना पश्चिम राठ थाना कोतवाली तारून, तहसील बीकापुर जिला अयोध्या, मेरा सही व शुद्ध नाम दुखरन है जो कि सत्य एवं सही है। मेरे आधार कार्ड में दुखी उर्फ दुखीराम हो गया है जो कि त्रुटिपूर्ण है। अतः मेरे आधार कार्ड में मेरा नाम दुखी उर्फ दुखीराम के स्थान पर सही नाम दुखरन अंकित किया जाय।

सूचना

त्रुटिवश मेरी पुत्री का नाम स्कूल अभिलेखों में AFNAN AHMAD लिख गया है, जबकि उसका सही नाम AFNAN AFAQ है। अब AFNAN AHMAD को AFNAN AFAQ के नाम से लिखा-पढ़ा एवं जाना-पहचाना जाये। शेख आफाक अहमद-252/107, रकाबगंज करीम, नजदीक चट्टान राजेन्द्र नगर, लखनऊ, उ.प्र.226004

सूचना

मैं Maiser Jahan पत्नी जमालुददीन निवासिनी:– ग्राम बढ़या माफ़ी पो. सेमरियावन बढ़या माफ़ी सन्त कबीरनगर की हूँ, मैंने अपना नाम Maisher से बदल कर Maiser Jahan रख लिया हैं। आज से मुझे Maiser Jahan के नाम से जाना व पहचाना जाये।

सूचना

मेरा नाम ड्राइविंग लाइसेन्स में गलती से MOHAN YADAV अंकित हो गया है। जबकि मेरे आधार कार्ड पैनकार्ड एवं सभी शैक्षिक अभिलेखों में MOHAN दर्ज है अब भविष्य में मुझे MOHAN के नाम से लिखा, पहचाना व जाना जाए। Mohan S/O Yogendra निवासी– 2/100 रुचि खण्ड–I शारदा नगर लखनऊ यूपी (226002)

सूचना

मैंने अपना नाम ZAFIRAH से बदलकर ZAFIRAH WAMIK रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। W/0-WAMIK SHAKEEL ADD-27, MALHOR ROAD NEAR ELDECO COLONY BIHARI PURAM PO-CHINHAT DIST-LUCKNOW-226028 (U.P.)

सूचना

मैने अपने (माइनर) पुत्र का नाम UZAIR MOHAMMAD MUSTAK PENDARI से बदलकर MOHAMMED UZAIR PINDARI रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। MOTHER'S NAME-NIKHAT PINDARI ADD-529A/239, MATEEN PURWA, NEAR FATIMI MASJIT, KHURRAM NAGAR, DIST-LUCKNOW-226022 (U.P.)

सूचना

मैंने अपना नाम NIKHAT MOHAMMED MUSTAK से बदलकर NIKHAT PINDARI रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। W/0-PENDARI MOHAMMED MUSTAK ABDULLAH ADD- 529A/239, MATEEN PURWA NEAR FATIMI MASJIT, KHURRAM NAGAR] DIST-LUCKNOW-226022(U.P.)

सूचना

मैने अपने (माइनर) पुत्र का नाम AZHAAN MOHAMMAD MUSTAK PENDARI से बदलकर AZHAAN PINDARI रख लिया अब इसी नाम से जाना व पहचाना जाये। MOTHER'S NAME-NIKHAT PENDARI ADD- 529A/239, MATEEN PURWA NEAR FATIMI MASJIT, KHURRAM NAGAR, DIST-LUCKNOW-226022 (U.P.)

सूचना

सूचित हो कि चंद्रावती चौहान पुत्री महेश चौहान का नाम आधार और पासबुक में लक्ष्मी है। जबकि एलआईसी पॉलिसी संख्या 217028001 में नाम चंद्रावती अंकित है। दोनों नाम की एक ही महिला है। चंद्रावती चौहान उर्फ लक्ष्मी पुत्री महेश चौहान ग्राम रमवापुर कला नौतला बहराइच, 271851

सूचना

मैने अपनी पुत्रवधु हर्षिता सेंगर पत्नी अभिमन्यु प्रताप सिंह के गलत आचरण से क्षुब्ध होकर संबंध विच्छेद कर लिए हैं उनके द्वारा किए गए कार्यो के स्वयंम जिम्मेदार होंगे। अरुण कुमार सिंह पता भूखंड L 2 294, LIG चन्द्र नगरी स्कीम फेस 2 कानपुर

सूचना

सूचित हो कि मेरा इंटरमीडिएट का अंकपत्र सह प्रमाण पत्र वर्ष 2016 अनुक्रमांक 1889199 वास्तव में खो गया है। करनैल सिंह पुत्र रंजीत सिंह माता कमलजीत कौर, पता–डिहवा धनौली खुर्द पोस्ट मटेरा बाजार थाना व तहसील नानपारा ब्लाक रिसिया जनपद बहराइच

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरा हाईस्कूल परीक्षा का अंक पत्र एवं प्रमाण पत्र अनुक्रमांक 1815896, सन 2005 एवं इंटरमीडिएट परीक्षा अंक पत्र सह प्रमाण पत्र अनुक्रमांक 1086871, वर्ष 2007 खो गया है। कल्प नागेश्वर मिश्र पुत्र गोकरन नाथ मिश्र ग्राम शेखापुर बड़गांव गोण्डा उत्तर प्रदेश।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी हाईस्कूल की अंक पत्र सह प्रमाण पत्र अनुक्रमांक 2767464, वर्ष 2019 खो गया है। लक्ष्मी सिंह चौहान पुत्री सुग्गू लाल निवासी लक्ष्मणपुरी कालोनी जिला गोंडा।

सूचना

मैंने अपना नाम MOHD MUKTADIR से बदल कर MOHAMMAD MUKTADIR रख लिया है अब भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना वा पहचाना जाए। S/O MOHAMMAD MUSATQEEM Resident:- VILL - BADANPUR KHURD POST SHUJAGANJ AYODHYA-224001

सूचना

मैंने अपना नाम MOHAMMAD KALIM से बदल कर MOHD KALEEM रख लिया है अब भविष्य में मुझे इसी नाम से जाना वा पहचाना जाए। S/O NASIR KHAN Resident:- 544C/088/082, HARDOI ROAD ALMAS CITY BEHIND CHARAK HOSPITAL LUCKNOW-226003

सूचना

मैं बब्लू अली पुत्र मुन्ना निवासी 767 निकट प्राइमरी स्कूल हुसैनगंज सीतापुर थाना कोतवाली देहात जिला–सीतापुर, मेरा व मेरे परिवारजनों का आज के उपरान्त अपने पुत्र अमन खॉन उनकी पत्नी श्रीमती उमरा से कोई वास्ता व सरोकार नही है। मैं उन्हें अपनी समस्त चल व अचल अचल सम्पत्ति से उपरोक्त को बेदखल करता हूँ। मेरा व मेरे परिवारजनों की आज के उपरान्त अमन खॉन उपरोक्त व उसके परिवारजनों के कृत्यों की कोई जिम्मेदारी नही है वह अपने कृत्यों के स्वयं जिम्मेदार होगे।

सूचना

मेरा बचत खाता इंडियन बैंक की शाखा सदाशिव में है जिसमें मेरा नाम सत्तन वर्मा लिखा है जबकि समस्त दस्तावेजों में मेरा नाम सत्तन ही है। अत: बैंक में भी मेरा नाम सत्तन वर्मा की जगह सत्तन कर दिया जाए। मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी। सत्तन पुत्र रामहेत, निवासी नकटी, करमडीह कला, परगना, तहसील व जिला–गोंडा

सूचना

मैं, देवांश वर्मा पुत्र श्री महेंद्र नाथ वर्मा निवासी–हरी नगर, जल निगम रोड, बालागंज, लखनऊ, उ०प्र०, घोषणा करता हूँ कि मैं 7 जनवरी 2025 से "मानस गंगा कंसलटेंट एंड सर्विसेज, UGF–20, कल्याण गिरी मंदिर मार्केट, ठाकुरगंज, लखनऊ," से पूर्णत: असंबद्ध हो चुका हूँ तथा मेरा इस संस्थान से कोई लेना देना नहीं है। डॉ० एस०के० सोनी जी की मृत्यु के बाद "मानस गंगा कंसलटेंट एंड सर्विसेज" के किसी भी क्रियाकलाप, किसी भी लेन–देन, किसी भी प्रकार के दस्तावेज़ और एडमिशन इत्यादि कार्य से मेरा कोई वास्ता नहीं है। मानस गंगा केसलटेंट एंड सर्विसेज के किसी भी क्रिया कलापों के लिए मैं जिम्मेदार नहीं हूँ।

सूचना

सर्व साधारण सूचित किया जाता है की मेरे आधार संख्या 690308992435 पर अंग्रेजी के नाम मे ANNAPOONRA SRIVASTAVA है जबकि मेरा सही नाम अंग्रेजी मे ANNPURNA SRIVASTAVA है। यह कि शपथी के बैंक ऑफ इंडिया बैंक रिकार्ड मे नाम ANNPURNA SRIVASTAVA अंकित है। अत: ANNPURNA SRIVASTAVA व ANNAPOONRA SRIVASTAVA दोनों नाम एक ही महिला के है अर्थात दोनों नाम शपथी के ही नाम है जिसे सही नाम ANNPURNA SRIVASTAVA के नाम से जाना व माना जाये।

चाचा नेहरू हॉस्पिटल कोपरगंज में पौधरोपण किया गया। अमृत विचार

यौमे विलादत पर किया हॉस्पिटल में पौधरोपण

कानपुर। पैगंबर मोहम्मद साहब के 1500 वें जन्मदिन पर पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से चाचा नेहरू हॉस्पिटल कोपरगंज में कुल हिंद जमीअत उल आवाम की ओर से पौधरोपण किया गया। मुसलमानों से आह्वान किया गया कि मुल्क को खुशहाल बनाने एवं छायादार, फलदार पौधे लगाने के लिए आगे आएं और जो पौधे लगाएं, उसको लावारिस भी नहीं छोड़ें। उनकी देखभाल भी करें। संस्था के महामंत्री महबूब आलम खान ने बताया कि अपने परिवार के एक एक व्यक्ति के नाम से पौधा जरूर लगाएं। उसका फल लोग इस्तेमाल करेंगे तो इसका सवाब पौधा लगाने वाले को मिलता रहेगा। इस्लाम में ऐसे कार्य को सदका-ए-जारिया कहा जाता है। पार्षद सुशील तिवारी, कारी आरिफ रजा, अलीम खान, कफील खान, महताब रहे।

संयम दिखावे का नहीं, अंतर आत्मा का विषय

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। जनरलगंज स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर में महावीर जैन पंडित ने सुगंध दशमी पर मंगलवार को जिनवाणी के दोहे का अर्थ बताया। कहा कि संयम दिखावे का नहीं अंतर आत्मा का विषय है। उत्तम संयम धर्म के दिन संदीप जैन (तिजारे वाले) के द्वारा प्रथम शांतिनाथ का भक्तों को सौभाग्य प्राप्त हुआ। द्वितीय शांतिधारा कमलेश जैन (डाटा मैन) और तृतीय अनिल जैन चादूंवाड ने कराया।

संदीप जैन ने बताया कि जैन सिद्धांत अनुसार सुगंध दशमी का पर्व अष्ट कर्मों की निर्जरा का पर्व है, आज के दिन जैन समाज में एक परम्परा है कि सभी मंदिरों में सपरिवार जाकर धूप खेनते हैं और मनुष्य जीवन कैसे मोक्षमार्ग पर आगे बढ़े उसके लिए अपने जीवन में संयम का पालन करते हैं, क्योकि मनुष्य बिना संयम जानवर के समान है। समाधिस्थ रत्न मुनिश्री 108 क्षमा सागर जी महाराज अपने प्रवचन में कहते थे कि 84 लाख योनियों में सबसे श्रेष्ठ मनुष्य योनी है, जिसका सबसे बड़ा कारण यह है कि सिर्फ मनुष्य ही अपने जीवन में उत्तम संयम का पालन कर मोक्ष प्राप्त करता है। यह अवसर देवों को भी नहीं प्राप्त है। सुगंध दशमी पर्व पर महिलाओं व बच्चों ने लाल – पीले वस्त्र पहनकर जैन मन्दिरों में सपरिवार धूप खेनी, जिससे मंदिर का वातावरण सुगंधित हो गया। श्री जिन भक्ति सेवा समिति के मंडल ने आरती व भावनृत्य किया। श्री दिगम्बर जैन महिला इकाई ने जैन तम्बोला व प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया। इस दौरान सदस्य अलका, अंजना, मीनू, नीत, पुष्पा, रश्मि, महामंत्री अमित जैन, विशाल जैन, राजीव जैन व वीरेन्द्र जैन आदि रहे।

सुगंध दशमी पर श्री दिगंबर जैन मंदिर में महिलाओं ने पूजन किया और प्रभु का अभिषेक भी किया गया। अमृत विचार

- श्री दिगम्बर जैन मंदिर में सुगंध दशमी का पर्व मनाया

जश्न-ए-चिरागां

पैगंबर मोहम्मद साहब की शान में कलाम पेश किए, जगह जगह जलसे हुए

जुलूस-ए-मोहम्मदी में सियासी नारों, बैनर-पोस्टर पर प्रतिबंध

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

अमृत विचार। पैगंबर मोहम्मद साहब के 1500 वें जन्मदिन पर परेड ग्राउंड समेत शहर के विभिन्न क्षेत्रों से 5 सितंबर को एशिया का सबसे बड़ा जुलूस-ए-मोहम्मदी उठाया जाएगा। जिसमें किसी भी सियासी पोस्टर, बैनर या सियासी नारे लगाने पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

शहर जमीअत उलमा की अगुवाई में जुलूस-ए-मोहम्मदी उठाया जाएगा जिसमें किसी भी प्रकार का सियासी नारा लगाने पर प्रतिबंध है। साउंड भी सुप्रीम कोर्ट के नियमों के अनुसार लगाए जाएंगे। पैगंबर मोहम्मद साहब के जन्मदिन की तैयारियां जोरों पर है। मंगलवार को कुलीबाजार स्थित मदरसा इशाअतुल उलूम में नातिया मुशायरा आयोजित किया गया जिसकी अध्यक्षता शहरकाजी मौलाना हाफिज अब्दुल कुद्दूस हादी ने की। शोरा हजरात ने पैगंबर मोहम्मद साहब की शान में कलाम पेश किये। कार्यक्रम संयोजक मौलाना अबू बकर हादी ने मेहमानों का स्वागत किया। शहर में जश्न चिरागां की तैयारियां जोरों पर है। घंटाघर, फेथफुलगंज, चमनगंज, नाला रोड, बेकनगंज, कंघी मोहाल, कर्नलगंज, कुलीबाजार, बाबूपुरवा, बेगमपुरवा समेत शहर के विभिन्न क्षेत्रों में खुबसूरत सजावट की जा रही है।

मदरसा इशाअतुल उलूम कुलीबाजार में मुशायरा हुआ। अमृत विचार

हजरत और 72 साथियों को याद किया

कानपुर। करबला के मैदान में शहीद हुए हजरत इमाम हुसैन और उनके 72 साथियों का गम 2 माह 8 दिन चलने के बाद सोमवार को खत्म हो गया। सोग का दिन खत्म होते ही शिया समुदाय ने ईद जहरा मनाया और इस मौके पर मिष्ठान वितरण किया गया। मंगलवार को शिया जामा मस्जिद ग्वालटोली, जाजमऊ स्थित मस्जिद अल्लाह-ओ-अकबर के अलावा जूही लाल कालोनी, जूही सफेद कालोनी, छोटे मियां हाता, गम्मू खां हाता, पटकापुर, नवाब दूल्हा हाता समेत शहर के विभिन्न क्षेत्रों में शिया मस्जिदों में ईद जहरा पर उलेमा ने खिताब फरमाया। मौलाना अलमदार हुसैन ने बताया की रबीअव्वल की 9 तारीख को हजरत मुख्तार ने हजरत इमाम हुसैन के कातिलों को सजा दी थी। जब ये खबर इमाम जैनुल आबेदीन को पहुंची तो वो मुस्कुराए। इसीलिए शिया समुदाय के लोग आज के दिन को ईदे जहरा के तौर पर मनाते हैं। इस दिन सभी लोगों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाई और ईदे जहरा की मुबारकबाद पेश की। इस मौके पर शिया समुदाय के लोगों ने अच्छे कपड़े पहने, घर में लोगों को दावत दी। मौलाना ने कहा कि आज का दिन हर उस इंसान के लिए खुशी का दिन है जो हजरत इमाम हुसैन से सच्ची मोहब्बत करता है। इस मौके पर शहाब रिजवी, नायाब आलम, मोहम्मद जकी, जमील हुसैन, शारिब अब्बास, मोहम्मद रजा, दानिश रिजवी, शहादत रिजवी, वहदत काजमी, नजर अब्बास, अबुजर काजमी, आमिर अब्बास, शाहिद अली, आफताब हुसैन, तहसीन हैदर आदि मौजूद थे।

न्यूज ब्रीफ

छात्र-छात्राओं को बांटे गए टैबलेट

उन्नाव। राजकीय महाविद्यालय बक्‌ खेड़ा में स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के अंतर्गत टैबलेट वितरण समारोह आयोजित हुआ। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में सदर विधायक पंकज गुप्ता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ विधायक व महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. मीता अरोड़ा ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप प्रज्वलन कर किया। महाविद्यालय की छात्राओं दामिनी, गुड़िया व मालिनी ने सरस्वती वंदना और स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

गगनीखेड़ा झील का किया निरीक्षण

शुक्लागंज। गणेश प्रतिमा विसर्जन को लेकर मंगलवार को क्षेत्राधिकारी नगर दीपक यादव ने थाना गंगाघाट क्षेत्रांतर्गत गगनीखेड़ा झील का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया और मौके पर तैनात पुलिस कर्मियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान सीओ ने मातहतों को विशेष सतर्कता बरतने और भीड़ पर लगातार निगरानी बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विसर्जन स्थल पर आने वाले श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए पुलिसकर्मी पूरी जिम्मेदारी से अपनी ड्यूटी निभाएं। साथ ही यातायात व्यवस्था दुरुस्त रखने और आपात स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहने की हिदायत दी।

श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की शहीदी वर्षगांठ यात्रा का स्वागत

उन्नाव। श्री गुरु तेग बहादुर साहिब जी की 350वीं शहीदी वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक शहीदी नगर कीर्तन का आयोजन किया गया। गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी में प्रधान सरदार अरविंदर सिंह, कोषाध्यक्ष सरदार जरनैल सिंह, सरदार कुलदीप सिंह, मीट प्रधान सरदार सुखबीर सिंह, सरदार गुरप्रीत सिंह व स्थानीय संगत में जगजीत सिंह, जसमीत सिंह, इंद्रजीत सिंह व अन्य ने नगर कीर्तन का स्वागत किया।

10 कारीगरों को मुफ्त मिलेंगी पॉपकॉर्न मशीन

उन्नाव। उप्र खादी तथा ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा वित्तीय वर्ष 2025-26 में भुर्जी समाज के कारीगर व इस उद्योग में रुचि रखने वाले 10 कारीगरों को नि:शुल्क पॉपकॉर्न मशीन दी जाएंगी। पात्र उद्यमियों व लाभार्थियों का चयन चयन कमेटी करेगी। जिला ग्रामीण उद्योग अधिकारी संजीव सिंह ने बताया कि इच्छुक कारीगर योजना में आवेदन हेतु जाति प्रमाणपत्र, आधार कार्ड, शैक्षिक योग्यता, मूल निवास प्रमाणपत्र, राशन कार्ड या परिवार आईडी संख्या, अनुभव प्रमाणपत्र (तकनीकी, व्यवसायिक), फोटो व मोबाइल नंबर सहित ऑन लाइन पोर्टल पर ऑनलाईन टूल किट्स पंजीकरण व आवंटन सेलेक्ट कर अपना आवेदन 8 सितंबर तक करते हुये पंजीकृत आवेदन की एक प्रति जिला ग्रामोद्योग कार्यालय में 9 सितंबर तक जमा कर सकते हैं।

जलसे में की गई नेक इंसान बनने की अपील

बांगरमऊ। नगर के मोहल्ला गोल कुआं स्थित हुसैनी मस्जिद में बीती रात ईद मिलादुन्नबी पर जलसे का आयोजन किया गया। इसमें मोहम्मद साहब के बताए रास्ते पर चलकर अच्छा व नेक इंसान बनने की अपील की गई। जलसे को खिताब करते हुए मौलाना मोहम्मद जीशान ने कहा कि अल्लाह पाक ने हजरत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा। जलसे में हुसैनी मस्जिद के पेश इमाम मौलाना जियाउल हक व हाफिज युसूफ मलिक, फजलुर्रहमान, अब्दुल कादिर रहमती आदि ने नाते पाक पेश की। जिसे सुनकर पूरा मजमा झूम उठा। इस मौके पर हाफिज मोहम्मद आसिफ, हाफिज मोहम्मद गुलफाम, हबीबुलरहमान बाबूजी, आशिक अली, जान मोहम्मद, अजीजुर्रहमान आदिल, चांद, नईमुल्लाह आदि मौजूद रहे।

हंगामे के बाद पुलिस ने वितरित कराई खाद

औरास, अमृत विचार। साधन सहकारी समिति में खाद लेने पहुंचे किसानों ने जमकर हंगामा किया। इस पर बिचौलियों को हटाकर एसओ ने फोर्स के साथ पहुंचकर किसानों की लाइनें लगवाकर खाद का वितरण कराया गया। अधिकांश किसानों को खाद मिलने पर उनके चेहरे पर मुस्कान लौटी।

किसानों की लाइन लगवाकर खाद वितरित कराते एसओ। अमृत विचार

औरास ब्लॉक के सामने स्थित साधन सहकारी समिति में खाद वितरण को लेकर काफी समय से जद्दोजहद चल रही है। समिति के सचिव आलोक कुमार ने वितरण शुरू किया तो हंगामा शुरू हो गया। मंगलवार को किसानों ने समिति पर बिचौलियों द्वारा कालाबाजारी को लेकर हंगामा किया गया। हंगामे की सूचना एसओ ज्ञानेंद्र सिंह तक पहुंची तो वे फोर्स के साथ साधन सहकारी समिति पहुंचे और किसानों को समझाकर लाइन लगवाई। इसके बाद खाद का वितरण किया गया। इसमें अधिकांश किसानों को एक-एक बोरी खाद वितरित की गई। साधन सहकारी समिति इनायतपुर बर्रा गांव में यूरिया का वितरण एक सप्ताह से नहीं हुआ और समिति पर खाद होने के बावजूद ताला लगा हुआ है। इनायतपुर बर्रा समिति में खाद वितरण न होने से किसानों में काफी आक्रोश रहा। सुबह से शाम तक किसानों के लंबी लाइनों में खड़े होने के बावजूद अंत तक ताला लगा रहता है।

गणपति बप्पा को दी गई भावभीनी विदाई

संवाददाता, शुक्लागंज (उन्नाव)

- सातवें दिन आयोजित हुए विशेष पूजन और सांस्कृतिक कार्यक्रम

अमृत विचार। नगर में मंगलवार को पोनी रोड, श्रीनगर समेत विभिन्न स्थानों पर स्थापित भगवान गजानन की प्रतिमाओं का विसर्जन धूमधाम से किया गया। सैकड़ों श्रद्धालु ढोल-नगाड़ों की थाप और भक्ति गीतों पर थिरकते हुए गणपति बप्पा मोरया, अगले बरस तू जल्दी आ के जयकारे लगाते हुए अबीर-गुलाल उड़ाते नजर आए। भक्ति और उल्लास के बीच पार्वती नंदन को भावभीनी विदाई दी गई।

फोरलेन पर गणपति विसर्जन करने जाते श्रद्धालु। अमृत विचार

गणेश महोत्सव अपने अंतिम पड़ाव पर पहुंचते ही नगर में सातवें दिन विभिन्न गणेश पंडालों में विशेष पूजन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सुबह से ही पंडालों में बाबा की भव्य आरती हुई, साथ ही सुंदरकांड पाठ का आयोजन कर भक्तों ने आशीर्वाद लिया। माहौल भक्तिमय बना रहा। फत्तेखेड़ा झील में सुबह से देर शाम तक प्रतिमाओं का विसर्जन किया गया। नगर, उन्नाव व कानपुर से भारी संख्या में श्रद्धालु झील तट पर पहुंचे और गणपति की प्रतिमाओं को विसर्जित किया। भक्त जयकारे लगाते हुए नृत्य और भजन-कीर्तन में मग्न दिखाई दिए। पूरे दिन झील तट पर मेले जैसा माहौल बना रहा। वहीं, श्री गणेश नवयुवक सेवा समिति की ओर से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। गंगाघाट के राजा साकेतपुरी में आयोजित नृत्य प्रतियोगिता में बच्चों ने शानदार प्रस्तुति देकर दर्शकों की तालियां बटोरीं। मूर्तियों के विसर्जन के साथ ही नगर गूंज उठा गणपति बप्पा मोरया, मंगल मूर्ति मोरया।

ट्रेन में चढ़ते समय अधेड़ का पैर फिसला, मौत

लखनऊ-कानपुर मेमू में कर रहे थे यात्रा, आखों के सामने हादसा देख कांप उठे मृतक की पत्नी और बेटा

संवाददाता, उन्नाव

- ट्रेन पर चढ़ते समय संतुलन बिगड़ने से छूट गया हैंडल

जिला अस्पताल में बदहवास मां-बेटा। अमृत विचार

अमृत विचार। एलकेएम (लखनऊ-कानपुर मेमू) ट्रेन में चढ़ते समय पैर फिसलने से अधेड़ नीचे गिर गया। यह देख बेटे के शोर मचाने पर ट्रेन रोककर उसे घायल हालत में अस्पताल लाया गया। जहां डॉक्टर ने उसे मृत घोषित कर दिया। यह सुनते ही पत्नी और बेटा बेहाल हो गए। सूचना पर पहुंची जीआरपी ने कार्रवाई शुरू की है।

लखनऊ शहर के बालागंज रस्तोगी नगर मोहल्ला के सराय शेख निवासी संजू अग्रवाल (55) पुत्र ओम प्रकाश प्राइवेट नौकरी करते थे। रविवार को वह पत्नी व बेटे के साथ कानपुर निवासी दोस्त अशोक के घर एक कार्यक्रम में शामिल होने गए थे। जहां से वह कानपुर निवासी बहन रुचि पत्नी नरेंद्र के यहां रुक गए। मंगलवार सभी एलकेएम से कानपुर से लखनऊ जा रहे थे। मगरवारा रेलवे स्टेशन पर ट्रेन में शौचालय न होने से संजू नीचे उतरकर लघु शंका कर रहे थे। तभी ट्रेन चलने पर वह दौड़ कर पावदान पर चढ़े लेकिन संतुलन बिगड़ने से हैंडल हाथ से छूट गया और वह नीचे गिरकर गंभीर घायल हो गया। बेटे शिखर ने पिता को गिरता देख शोर मचाया। इस पर चेन खींचकर ट्रेन को रोका गया। बेटा व पत्नी रुक्मिणि अन्य यात्रियों की मदद से उसे ट्रेन से ही उन्नाव जंक्शन लाई। यहां आरपीएफ ने एंबुलेंस से उसे जिला अस्पताल भेजा। लेकिन वहां इलाज शुरू होने से पहले ही उसकी मौत हो गई। यह सुनते ही पत्नी बेहोश हो गई। बेटा भी पिता के शव से लिपटकर फफक-फफक कर रोता रहा। अस्पताल के मेमो पर शव मोर्चरी में रखवाकर जीआरपी को सूचना दी गई। जिसके बाद उन्होंने कार्रवाई शुरू की है।

परिचालक व यात्री को कंटेनर ने मारी टक्कर

- हादसे में परिचालक की मौत यात्री घायल

बांगरमऊ, उन्नाव, अमृत विचार। बेहटा मुजावर थानाक्षेत्र में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे पर तेज़ रफ़्तार कंटेनर पहले से लेन पर खड़े दूसरे कंटेनर में पीछे से जा घुसा। हरियाणा प्रांत के जिला नूंह अंतर्गत गांव देहाना निवासी अनीस पुत्र अकबर कंटेनर में प्लाई लादकर जिला सीतामढ़ी बिहार से हरियाणा जा रहा था। तभी रास्ते में अचानक कंटेनर का डीजल खत्म हो गया। इस पर चालक ने मंगलवार सुबह बेहटा मुजावर थानाक्षेत्र में आगरा-लखनऊ एक्सप्रेस-वे स्थित गांव शादीपुर के सामने कंटेनर रोड किनारे खड़ा कर दिया और परिचालक सरफराज (24) पुत्र उमर निवासी गांव कुलडेहरा थाना फिरोजपुर जिला नूंह हरियाणा व एक यात्री जैद (21) पुत्र शहीद निवासी गोकुलपुर थाना पुनहाना जिला नूंह हरियाणा नीचे उतरकर कंटेनर के पास खड़े होकर डीजल लाने के लिए वाहन का इंतजार करने लगे। तभी पीछे से तेज गति से आ रहे दूसरे कंटेनर ने टक्कर मार दी। डाक्टरों ने सरफराज को मृत घोषित कर दिया। जबकि जैद को गंभीर देख ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया गया।

जांच में क्लीनिक को किया सीज

- महिला की मौत के बाद जांच करने पहुंचे थे सीएचसी अधीक्षक

फतेहपुर चौरासी, उन्नाव, अमृत विचार। थानाक्षेत्र के एक गांव की महिला का बीती 29 अगस्त को अचानक स्वास्थ्य खराब हो गया था। परिजन उसे तकिया स्थित एक निजी अस्पताल में इलाज को लेकर आए थे। तभी हालत में सुधार न होते देख महिला को बांगरमऊ सीएचसी ले गए थे। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई थी। पारिजनों ने तकिया स्थित निजी अस्पताल पर गलत इलाज का आरोप लगाया था।

जांच करते डॉक्टर संजीव कुमार।

परिजनों के आरोपों के बाद सीएमओ ने सीएचसी अधीक्षक से क्षेत्र में संचालित अवैध अस्पताल व क्लीनिक की जांच करने के निर्देश दिए थे। जिस पर मंगलवार को सीएचसी अधीक्षक डा. संजीव कुमार तकिया स्थित चांद अस्पताल पहुंचे। जहां जांच के दौरान उन्होंने अस्पताल के सभी कागज पूर्ण पाए। इसके अलावा कुछ दूर संचालित चांद क्लीनिक के कागज संचालक नहीं दिखा सके। इस पर अधीक्षक ने उसे सीज कर दिया। वहीं क्षेत्र में संचालित दो अन्य क्लीनिक को नोटिस जारी की। अधीक्षक ने बताया कि सीएमओ के निर्देश पर अस्पताल व क्लीनिक की जांच कर रिपोर्ट जिले पर भेजी गई है। एक क्लीनिक को सीज किया गया है।

पिता की डांट से नाराज हो पानीपत से पहुंचा बच्चा

उन्नाव। पिता की डांट से नाराज होकर आठ का बच्चा ट्रेन में बैठकर घर से भाग आया। यात्रियों से मिली सूचना पर आरपीएफ उसे ट्रेन से उतारकर कार्यालय लाई। जहां परिजनों को सूचना देकर बच्चे को बाल कल्याण समित को सौंप दिया गया। एटा निवासी राकेश परिवार के साथ हरियाणा के पानीपत शहर के हम्मापुर में रहकर मजदूरी करता है। उसने बीते सोमवार कक्षा अपने 7 साल के बेटे दिनेश को पढ़ाई न करने पर डांट दिया। इससे नाराज दिनेश घर से भाग कर रेलवे स्टेशन पहुंचा और वहां से ट्रेन में बैठकर कानपुर आ गया। जहां से मंगलवार सुबह वह लखनऊ जाने वाली मेमो में बैठ गया। यात्रियों को शक हुआ तो उन्होंने इसकी सूचना आरपीएफ को दी।

एसडीएम ने बाढ़ पीड़ितों की जानी समस्याएं

पाटन, उन्नाव, अमृत विचार। तहसील बीघापुर मुख्यालय के पाटन क्षेत्र के जयराजमऊ गांव के मजरे सीता राम खेड़ा, पसनिया खेड़ा व गढ़ेवा में गंगा का जलस्तर बढ़ने से लोगों को आने वाली समस्याओं को लेकर एसडीएम रणवीर सिंह ने मंगलवार दोपहर राहत शिविर व मौके पर पहुंचकर लोगों से बात की।

बाढ़ पीड़ितों से जानकारी लेते एसडीएम। अमृत विचार

स्थानीय लोगों का कहना था कि पसनिया खेड़ा व सीताराम खेड़ा में आवागमन ठप है। वे निजी नाव से आवागमन कर रहे हैं। वही ग्राम प्रधान प्रतिनिधि लल्लन सिंह ने बताया कि उनके द्वारा एक व्यक्तिगत नाव का संचालन कराया जा रहा है। एसडीएम ने बाढ़ राहत केंद्र में मौजूद लोगों से बताया कि आवागमन के लिए दो नावों का संचालन कराया जा रहा है। जयराजमऊ के दोनों मजरों पसनियाखेड़ा, सीताराम खेड़ा व गढ़ेवा के सभी पीड़ितों को राशन सामग्री मुहैया कराई गई है। उन्होंने मौजूद ग्रामीणों से कहा कि किसी प्रकार की समस्या होने पर तत्काल सूचित करें। उन्होंने वहां मौजूद लेखपाल से प्रतिदिन की प्रगति रिपोर्ट देने को कहा।

400 घरों की बिजली 7 घंटे रही गुल

शुक्लागंज। सीताराम कालोनी क्षेत्र में मंगलवार को बिजली विभाग की री-वैंप योजना के तहत जर्जर तार हटाकर नई एबीसी केबल डालने का कार्य किया गया। विभागीय निर्देश पर कार्यदायी संस्था ने सुबह 10 बजे से काम शुरू किया, जिसके चलते बालूघाट क्षेत्र से जुड़े 400 केवीए ट्रांसफार्मर की आपूर्ति शाम 5 बजे तक बंद रही। करीब 7 घंटे की कटौती से सीताराम कालोनी, मनोहर नगर, द्वारिका मोहिनी कंपाउंड व पुल बाजार सहित 400 से अधिक घरों की बिजली गुल रही। अचानक आई इस बाधा से हजारों लोगों को दिनभर परेशानी का सामना करना पड़ा। घरेलू कार्य प्रभावित हुए तो वहीं छोटे व्यापारी भी असुविधा झेलते रहे। कर्मचारियों ने कई पोलों पर एबीसी केबल डालने का काम किया। हालांकि नगर के अन्य हिस्सों में भी मंगलवार को बिजली आपूर्ति बार-बार बाधित होती रही।

हत्या मामले में मुख्य आरोपी समेत दो भेजे गए जेल

शुक्लागंज, अमृत विचार। 10 वर्षीय अजीत की हत्या के मामले में मंगलवार को पुलिस ने मुख्य आरोपी अशोक निषाद और उसके साथी विनोद को न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया। वहीं अन्य आरोपियों से पूछताछ जारी है। मामले की प्रगति और अन्य तथ्यों की जानकारी लेने सीओ सिटी दीपक यादव कोतवाली गंगाघाट पहुंचे और संबंधित दस्तावेजों का निरीक्षण किया। शेष आरोपियों को पकड़ने के लिए पुलिस की तीन टीमें लगातार दबिश दे रही हैं।

27 अगस्त को पुलिस ने अमित, राजकुमार और रामबाबू समेत पांच के खिलाफ पाक्सो और छेड़छाड़ की धाराओं में रिपोर्ट दर्ज की थी। आरोपियों द्वारा पीड़ित पक्ष पर मामला वापस लेने का दबाव बनाए जाने के कारण रविवार की रात पीड़िता के घर पर कई राउंड फायरिंग की गई। इसी दौरान पड़ोस में रहने वाले सोनू का दस वर्षीय बेटा अजीत बाहर आया और गोली लगने से उसकी मौत हो गई। सोनू की तहरीर पर पुलिस ने अशोक निषाद, विनोद, विनोद के भांजे, लल्लू, अमित, सुरेश और दो अज्ञात के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया।

अजीत हत्याकांड

किशोरी के बयान दर्ज

मंगलवार को छेड़छाड़ के मामले में 12 वर्षीय पीड़िता का मजिस्ट्रेटी बयान दर्ज किया गया। पश्चिमी चौकी प्रभारी राजेंद्र सिंह ने बताया कि बीएनएस की धारा-183 के तहत किशोरी के बयान लेकर विवेचना जारी है। आरोपियों के घरों पर दबिश दी जा रही है और आसपास के लोगों से घटना से जुड़े तथ्य जुटाये जा रहे हैं।

युवक की संदिग्ध हालत में हुई मौत

उन्नाव। लकड़ी ठेकेदार के यहां रहकर मजदूरी करने वाले युवक की हालत बिगड़ने के बाद मौत हो गई। भाई ने ठेकेदार पर मारपीट करने व मजदूरी न देने का आरोप लगाया। इस पर पहुंची पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया। जिसमें हार्टअटैक से मौत होने की पुष्टि हुई।

मौरावां थानाक्षेत्र के बिसरा गांव निवासी रवी रावत (22) पुत्र स्व. ईश्वरदीन इसी थानाक्षेत्र के मवई गांव निवासी लकड़ी ठेकेदार राधे श्याम के यहां रहकर कई वर्षों से मजदूरी करता था। वह कभी-कभी ही अपने घर जाता था। इधर कई दिनों से वह बीमार था। बड़े भाई रति पाल ने बताया कि सोमवार को राधेश्याम का बेटा मोहित व भतीजा रोहित बाइक से रवी को बीमार बता उसके घर छोड़ चले गए। देररात उसके भाई की हालत अधिक बिगड़ी और अस्पताल ले जाने से पहले उसकी मौत हो गई।

प्रतिमाओं के विसर्जन से मार्गों पर दिनभर जाम

नवीन पुल पर जाम में फंसे वाहन सवार। अमृत विचार

शुक्लागंज, अमृत विचार। नगर व ग्रामीण क्षेत्रों से मंगलवार को बड़ी संख्या में श्रद्धालु गणेश प्रतिमाओं का विसर्जन करने गगनीखेड़ा झील पहुंचे। इस दौरान सरैयां व सहजनी रेलवे क्रॉसिंग पर गेट बंद होने से जाम की स्थिति बनी रही। वहीं नवीन पुल पर भी शोभा यात्राओं व विसर्जन जुलूस के कारण वाहनों की कतारें लगी रहीं।

सुबह से ही प्रतिमाओं के विसर्जन का सिलसिला शुरू हो गया था। विभिन्न क्षेत्रों से लोडर, ट्रैक्टर, ई-रिक्शा, पिकअप और बाइक पर सवार होकर श्रद्धालु शोभायात्रा के साथ निकले। मरहला से बैराज मार्ग और सहजनी की ओर से लगातार जुलूस निकलने से वाहन रेंगते रहे। स्थिति संभालने के लिए पुलिस को खासी मशक्कत करनी पड़ी।

खोदाई में भूमिगत केबल कटी, शक्तिनगर फीडर 8 घंटे तक रहा ठप

शुक्लागंज। आरओबी निर्माण कार्य के चलते सोमवार रात बड़ी लापरवाही सामने आई। त्रिभुवनखेड़ा सबस्टेशन से जुड़ी 33 केवी लाइन को शिफ्ट करने का काम कर रही विभागीय कार्यदायी संस्था की खोदाई के दौरान शक्तिनगर फीडर की भूमिगत एचटी लाइन कट गई। अचानक आपूर्ति बाधित होने से एक दर्जन मोहल्लों के हजारों घरों की बिजली रातभर गुल रही और लोग बेहाल हो उठे। मरहला चौराहा से आजाद मार्ग देशी ठेका तक 33 केवी लाइन हटाने का काम चल रहा था। सोमवार रात करीब 9 बजे चौराहा के पास केबल डालने के लिए खोदाई शुरू की गई। इसी दौरान रात करीब साढ़े 9 बजे शक्तिनगर फीडर की एचटी लाइन क्षतिग्रस्त हो गई। केबल कटने से शक्तिनगर, मनोहर नगर, इंदिरा नगर, प्रेमनगर, रविदास पार्क, रविदास नगर और अवस्थी फार्म सहित कई क्षेत्रों की आपूर्ति ठप हो गई। क्षेत्रीय लोगों की शिकायत पर बिजली विभाग की टीम ने फॉल्ट खोजने के लिए पैट्रोलिंग शुरू की।

फिर खतरे के निशान की ओर बढ़ा गंगा का जलस्तर

मोहम्मद नगर में मकानों के आस पास भरा बाढ़ का पानी। अमृत विचार

शुक्लागंज (उन्नाव), अमृत विचार। गंगा का जलस्तर एक बार फिर खतरे की ओर बढ़ने लगा है। पिछले दिनों जलस्तर खतरे का निशान पार कर गया था, जिसके बाद कुछ गिरावट दर्ज की गई थी। लगातार बारिश के कारण नदी का रुख फिर तेज हो गया है। तटवर्ती इलाकों में रहने वाले लोगों की परेशानी बढ़ गई है। केंद्रीय जल आयोग के अनुसार सोमवार शाम छह बजे गंगा का जलस्तर 112.640 मीटर था। मंगलवार सुबह आठ बजे यह बढ़कर 112.700 मीटर हो गया और शाम छह बजे 112.790 मीटर पर दर्ज किया गया। यह खतरे के निशान 113 मीटर से महज 21 सेंटीमीटर नीचे है।

आयोजन नगर व ग्रामीण क्षेत्रों के हनुमान मंदिरों में किया गया श्रृंगार, सुंदरकांड पाठ के साथ हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम

बुढ़वा मंगल पर नगर में भक्ति और भंडारों की धूम

संवाददाता, शुक्लागंज (उन्नाव)

अमृत विचार। नगर में मंगलवार को बुढ़वा मंगल पर्व बड़े ही हर्षोल्लास और श्रद्धा के साथ मनाया गया। सुबह से ही विभिन्न मंदिरों में धार्मिक कार्यक्रमों की शुरुआत हुई, जिसमें महाआरती, सुंदरकांड पाठ और भजन-कीर्तन का आयोजन हुआ। पूरे दिन नगर में जगह-जगह भंडारों का सिलसिला चलता रहा, जिसमें श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर पुण्य अर्जित किया।

ऋषि आश्रम हनुमान मंदिर प्रांगण में सुबह से सुंदरकांड पाठ का आयोजन हुआ। देररात तक बाबा के भजनों की गूंज वातावरण में बनी रही। महिलाएं ढोलक की थाप पर भक्ति गीत गाकर श्रद्धालुओं को भावविभोर करती रहीं। मंदिर में हनुमानजी की महाआरती के साथ ही विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें बड़ी संख्या में भक्तों ने प्रसाद चखा। इसी तरह नगर के मिश्रा कॉलोनी, भातू फार्म, कंचन नगर, ऋषि नगर, गांधी नगर, आदर्श नगर व सीताराम कॉलोनी स्थित बालाजी मंदिर में भी श्रद्धालुओं ने भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया। दिनभर मंदिरों में डीजे पर बज रहे भक्ति संगीत से पूरा नगर गूंजता रहा। पोनी रोड तिराहे स्थित श्री संकटमोचन हनुमान मंदिर में सुंदरकांड का आयोजन हुआ, जो देर रात तक चलता रहा। मंदिर में भगवान का विशेष श्रृंगार किया गया और भक्तों ने आरती कर आशीर्वाद लिया।

संकटमोचन हनुमान मंदिर में बाबा का किया गया श्रृंगार। अमृत विचार

रश्मिलोक के सामने भंडारे का प्रसाद लेते लोग। अमृत विचार

वहीं धोबी पुलिया पर पूर्व प्रधान रामनारायण यादव और मुलायम सिंह यूथ बिग्रेड के जिलाध्यक्ष अंकित यादव के नेतृत्व में विशाल भंडारा आयोजित किया गया, जिसमें बच्चा बाजपेई, रजत निगम, गौरव, शिवम समेत बड़ी संख्या में भक्तों की मौजूदगी रही। नगरभर में आयोजित इन धार्मिक आयोजनों ने बुढ़वा मंगल को विशेष और यादगार बना दिया। श्रद्धालुओं की भारी भीड़ और भक्तिमय माहौल से पूरा नगर हनुमान भक्ति में डूबा नजर आया।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि श्रीमती गुड्डी पत्नी रघुवीर उर्फ रणवीर निवासी ग्राम धरम पुर तकिया पोस्ट अटवा कुरसठ परगना मल्लावां तहसील बिलग्राम जिला हरदोई ने पालिका कार्यालय मे दिनाँक 13-08-2025 को अपने आवेदन पत्र के साथ रजिस्टर्ड बैनामा, आधार कार्ड की छायप्रति व शपथ पत्र प्रस्तुत कर यह उल्लेख किया है कि प्रार्थिनी ने मोहल्ला कटरा द्वितीय बाँगरमऊ का एक प्लाट को विक्रेता श्री रतीराम पुत्र रामदीन निवासी मोहल्ला गढ़ी कस्बा व परगना व तहसील बाँगरमऊ जिला उन्नाव से बैनामा दिनांक 22-09-1999 को क्रय क्षेत्रफल पूरब से पश्चिम 58 फिट उत्तर से दक्षिण 20 फिट को खरीद लिया है। भवन का निर्माण करवा लिया है। उक्त भवन की चौहद्दी निम्नलिखित है। पूरब-खेत गोपाल आदि पश्चिम-रास्ता कच्चा मिल्कियत मुकिर उत्तर-प्लाट मुकिर दक्षिण-अराजी मुकिर प्रार्थिनी ने अपने उपरोक्त भवन को नगर पालिका कर पंजिका में कर की अदायगी के लिए अपने नाम से दर्ज किये जाने की मांग की है। पत्रावली पर उपलब्ध साक्ष्यो के आधार पर यदि उक्त नामान्तरण प्रकिया को पूर्ण किये जाने मे किसी को कोई भी आपत्ति है। तो वह प्रकाशन से 30 दिन के अन्दर उक्त भवन से सम्बंधित सर्वमान्य रजिस्टर्ड साक्ष्य सहित मेरे समक्ष उपस्थित हो कर वह अपनी आपत्ति दर्ज करवा सकता है। बाद मियाद गुजर जाने पर किसी भी आपत्ति पर कोई विचार नही किया जायेगा और उपरोक्त नामान्तरण प्रकिया को आवेदनकर्ता के पक्ष मे पूर्ण कर दिया जायेगा तत्पश्चात नगर पालिका परिषद बाँगरमऊ की कोई जिम्मेदारी न होगी।

अधिशाषी अधिकारी
नगर पालिका परिषद, बाँगरमऊ उन्नाव

अमृत विचार

बुधवार, 3 सितंबर 2025

दुनिया जैसी है वैसी ही है। जो लोग कुछ नहीं हैं, जो खुद को कुछ नहीं बनने देते, उनके लिए इसमें कोई जगह नहीं है।

–वीएस नायपॉल, ब्रिटिश लेखक

मारक बनता मानसून

मौसम विभाग के अनुसार अगले दो दिनों में सूबे के दर्जन भर से अधिक जिले अतिवृष्टि की चपेट में आएंगे। मानसून बीते तीन महीनों में सामान्य से पांच फीसदी अधिक बरस चुका है। ऐसे में यह घोषणा चिंताजनक है। सितंबर में पूरे देश में वर्षा का औसत आंकड़ा लगभग 168 मिलीमीटर होता है, पर इस बार इसके 109 फीसदी बढ़ जाने का अनुमान है। सामान्य परिस्थितियों में मानसून एक सुखद अनुभूति है, लेकिन वर्तमान विषम परिस्थितियों में इसकी अचानक बढ़त भयावह है। जलजमाव, खेती-किसानी की बर्बादी, भूस्खलन, फ्लैश फ्लड, बाढ़, जलजनित बीमारियां, सर्पदंश, मनुष्यों और मवेशियों की मौतें, दुर्घटनाएं, साथ ही भारी अवसंरचनात्मक और आर्थिक नुकसान, ये सब अतिवृष्टि की लगभग अनिवार्य परिणतियां हैं। प्रधानमंत्री ने इस पर गहरी चिंता जताते हुए कहा है कि इस मानसून सीजन ने देश की कठिन परीक्षा ली है, पर भारत एकजुट होकर इसका सामना करेगा। प्रश्न यह है, कैसे? दशकों से देश इसी तरह जूझता आ रहा है, पर संघर्ष के साधन वही पुराने हैं। मानसून को रोका नहीं जा सकता। अतिवृष्टि, क्लाउड बर्स्ट या फ्लैश फ्लड की बहुत पहले सूचना और नियंत्रण संभव नहीं। तो क्या हम इनके दुष्परिणामों को कम करने के उपलब्ध उपायों को ईमानदारी और तत्परता से लागू कर रहे हैं? यदि हां, तो हर बार यह प्राकृतिक आपदा गंभीर रूप में क्यों लौट आती है? और यदि नहीं, तो बचाव के उपाय अब कब लागू होंगे?

सभी नगर निगमों को 'स्टॉर्म वाटर मैनेजमेंट मास्टर प्लान' बनाना था। कब बनेगा? हर मकान और अपार्टमेंट में रूफटॉप रेनवॉटर हार्वेस्टिंग अनिवार्य करना था। यह कब तक पूरी तरह लागू होगा? स्मार्ट सिटी परियोजना में ड्रेन मैपिंग और उनका डिजिटलीकरण होना था। भूमिगत नालों और जल निकासी प्रणाली को जीआईएस तकनीक पर मैप करना था, ताकि उनका अतिक्रमण रोका जा सके और समय रहते उनकी मरम्मत हो सके। प्रगति कहां तक पहुंची? नई कॉलोनियों में भूमिगत जलाशय बनाकर वर्षा जल को संचित करने, जलजमाव रोकने की योजना सराहनीय थी, पर उसका क्या हुआ? शहरों में नालों पर स्मार्ट सेंसर और इंटरनेट ऑफ थिंग्स आधारित निगरानी से खतरे की पूर्व चेतावनी मिलती। इस दिशा में कितना काम हुआ? शहरीकरण और सड़कों के जाल से सीमेंटेड सतह बढ़ जाने से वर्षा जल जमीन में नहीं जाता। ग्रीन बेल्ट, पार्क और छिद्रयुक्त सड़कों का विकास आवश्यक है। हमने इस पर कितना ध्यान दिया?

पहले नगरों में तालाब, बावड़ी, पोखर और नहरें हुआ करती थीं, ये सभी जलस्रोत ही नहीं बल्कि बाढ़-नियंत्रण और भूजल पुनर्भरण के साधन भी थीं। आज उनकी सबसे अधिक आवश्यकता महसूस की जाती है, वे लगभग गायब ही हो गई हैं। उन्हें फिर से नहीं लाया जा सकता, लेकिन विकल्पों पर कितना काम हुआ है? कंप्यूटर मॉडलिंग और डिजिटल हाइड्रोलॉजी तकनीक से जल जमाव का पूर्वानुमान लगाने का काम किस हद तक हो रहा है? यह भी स्पष्ट नहीं है। हम इन साधनों का उपयोग कर तो रहे हैं, सवाल यह है कि क्या यह पर्याप्त हैं? अतिवृष्टि सालाना समस्या बन चुकी है, जिसके दुष्परिणाम हर वर्ष और भी पीड़ादायक होते जा रहे हैं। अब इसका स्थायी समाधान तलाशना जरूरी हो गया है।

तियानजिन में भारत का संदेश और सफलता

विवेक सक्सेना

अयोध्या

शंघाई शिखर सम्मेलन में आतंकवाद पर भारत ने जिस मजबूती के साथ पक्ष रखा और सफलता पाई, उससे वैश्विक स्तर पर भारत की साख बढ़ी है।

चीनी बंदरगाह वाला शहर तियानजिन में आयोजित दो दिवसीय शंघाई शिखर सम्मेलन (एससीओ) में आतंकवाद पर भारत को बड़ी कूटनीतिक सफलता के रूप में देखा जा रहा है। आतंकवाद पर भारत के रुख का कूटनीतिक विरोध करने वालों को यहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को गौर से सुनना ही नहीं पड़ा, बल्कि शंघाई सहयोग संगठन ने आतंकवाद पर भारत के रुख का समर्थन करते हुए प्रस्ताव भी पारित किया। शंघाई शिखर सम्मेलन भारत के लिए आपदा में अवसर जैसा रहा, हालांकि इसके खतरे भी कई हैं, लेकिन खतरों की चिंता न करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कूटनीतिक मुद्दे के रूप में इसे मजबूती के साथ आगे बढ़ाने की कोशिश की।

यह अवसर अमेरिकी ट्रंप प्रशासन से भारत पर किए गए टैरिफ हमले से उत्पन्न हुआ। शंघाई शिखर सम्मेलन के नजरिए से देखा जाए तो फौरी तौर पर ही सही, लेकिन वैश्विक स्तर पर इन दिनों अमेरिका थोड़ा अलग पड़ गया है। सम्मेलन में वैश्विक नेताओं के साथ चीन, रूस और भारत का एक साथ खड़ा होना अमेरिका के खिलाफ एक नए मोर्चे जैसा है। वैश्विक स्तर पर यह नया ध्रुव भी हो सकता है, जो वैश्विक परिस्थितियों को अपने हिसाब से साध सकता है। यह तीनों देश किसी न किसी रूप में महाशक्तियां हैं। सबकी अपनी क्षमताएं हैं, लेकिन इसके लिए इन तीनों को अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठना होगा, हालांकि यह बहुत आसान नहीं है।

शंघाई शिखर सम्मेलन में जो एकजुटकता दिखी, इसका जवाब अमेरिका देगा, विशेषज्ञ इसकी उम्मीद करते हैं। कब, कहां और कैसे देगा? इस पर अभी मंथन कर रहे हैं। इसके लिए भी इन तीनों प्रमुख देशों को तैयार रहना होगा। नई परिस्थिति में ट्रंप को व्यक्तिगत रूप से भी झटका लगा है। उनकी भारत से नोबेल पुरस्कार के लिए सहयोग की अपेक्षा खटाई में पड़ गई। वह नोबेल पुरस्कार के लिए पीएम मोदी से समर्थन की उम्मीद रखते थे।

ट्रंप के टैरिफ हमले के बाद भारत के पास दो विकल्प थे। पहला वह अमेरिका का पिछलग्गू बनकर टैरिफ हटवाने के लिए रूस से तेल न लेने की बात मान लेता, दूसरा वह विश्व को अपनी संप्रभुता का अहसास कराए। मोदी शासन ने दूसरा विकल्प चुना। परिस्थितियां किसी हद तक पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेयी सरकार के कार्यकाल की याद दिलाती है, जब मिसाइल मैन डॉ. एपीजे कलाम की अगुवाई में पोखरण परमाणु विस्फोट के बाद अमेरिकी प्रशासन ने भारत पर आर्थिक प्रतिबंध लगा दिया था। अंतर केवल इतना है कि उस समय अमेरिकी प्रशासन ने भारत को झुकाने के लिए विस्फोट के बाद प्रतिबंध लगाया था। इस बार व्यापारिक मुद्दे पर एक बार फिर तेजी से वैश्विक स्तर पर उभर रहे भारत को झुकाने के लिए अमेरिकी प्रशासन ने पहले टैरिफ हमला कर दिया, लेकिन भारत अटल नीति की नक्शे कदम पर आगे बढ़ने लगा। झुकेंगे नहीं, 140 करोड़ का देश जवाब देगा। अमेरिकी के टैरिफ हमले ने भारत को वैश्विक स्तर पर खुलकर कूटनीतिक चालें चलने का मौका जरूर दे दिया। अब भारत ने मित्रता, अर्थव्यवस्था से लेकर आतंकवाद पर कूटनीतिक चालें चलनी शुरू कर दी हैं। शंघाई उसका पहला पड़ाव रहा, जिसका भारत ने लाभ उठाया। टैरिफ हमले के बाद साफ हो गया कि भारत और मित्र देश रूस के साथ रिश्ते पहले जैसे हैं। शंघाई में इसे और मजबूती मिली। इससे पहले भारत को अमेरिका के बहुत करीब देखा जाने लगा था। भारत ने साफ कर दिया कि ऐसा नहीं है। रूस पहले भी सबसे करीबी मित्र था और अब भी है।

चीन पर भारतीय आसानी से विश्वास नहीं कर सकते है। दिल्ली भी यह बात समझती जरूर होगी। चीन जब भी भारत के करीब आता है, वह भारत पर पीछे से छिपा वार करने से नहीं चूकता। उदाहरण के तौर पर वर्ष 2020 में गलवान घाटी में दोनों देशों के सैनिकों के बीच हुआ द्वंद्व है। कई उदाहरण और भी हैं। वर्ष 2020 के पहले भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने लगातार भारत-चीन के रिश्ते मधुर बनाने की कोशिश की थी। इसके लिए देश में कई स्तरों पर पीएम मोदी को आलोचना झेलनी पड़ी थी। परिस्थितियों ने चीन को शंघाई में भारत के साथ खड़े होने के लिए मजबूर किया। इसमें चीन के अपने निजी स्वार्थ भी हैं। अमेरिकी व्यापार नीति के साथ एशिया में बढ़ती अमेरिकी सैन्य शक्ति दूसरा कारण है।

यह वही चीन है, जो आतंकवाद जैसी वैश्विक समस्या पर संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत के प्रस्ताव का विरोध करता रहा है। भारतीय प्रधानमंत्री मोदी ने बगैर मौका गंवाएं, शंघाई शिखर सम्मेलन में जम्मू कश्मीर के पहलगाम हमले के जरिए आतंकवाद पर चीन के साथ पाकिस्तान को घेरने की कूटनीतिक चाल चली। उनके घर में ही एक बार फिर उनके किए का अहसास कराने की कोशिश की। शंघाई में करीब आने के बावजूद भी चीन के प्रति भारतीय रूख को संजीदा रहने की जरूरत इसलिए भी है कि चीन का आंतकवाद पर रूख ठीक नहीं रहा।

चीन 25वें शंघाई शिखर सम्मेलन में साथ रहे देशों के प्रस्ताव पर अमल करेगा और वैश्विक आतंकवाद को रोकने में साथ देगा, परिस्थितिजन्य तो हो सकता है, लेकिन जब तक आतंकवाद पर आगे उसकी रणनीति साफ न हो जाए, विश्वास करना कठिन है। फिलहाल नई परिस्थिति में शंघाई शिखर सम्मेलन में आतंकवाद पर भारत ने जिस मजबूती के साथ पक्ष रखा और सफलता पाई, उससे वैश्विक स्तर पर भारत की साख बढ़ी है। भारत ने आतंकवाद के मुद्दे पर अमेरिका को भी अहसास करा दिया है कि वह अकेले भी अपने मुद्दों पर विश्व का ध्यान ही नहीं खींच सकता, चीन और पाकिस्तान जैसे देशों को उनकी पिच पर बोल्ड करने की कूवत भी रखता है।

आमने

विपक्ष ने सिर्फ मेरी मां को नहीं, बल्कि इस देश की करोड़ों माताओं को गाली दी है। उन्हें छठी मैया से माफी मांगनी चाहिए। मैं लोगों से अपील करता हूं कि वे इंडिया गठबंधन के नेताओं का जहां भी दिखें, विरोध करें।

–नरेंद्र मोदी, प्रधानमंत्री

सामने

हम गांधी के अनुयायी हैं और इसलिए हिंसा का किसी भी रूप में समर्थन नहीं कर सकते हैं, जिस तरह की शाब्दिक हिंसा हुई है, उसका हम विरोध करते हैं। इस मुद्दे पर राजनीतिक लाभ उठाने की कोशिश नहीं होनी चाहिए। राजनीति में शालीनता जरूरी है।

–राजेश राम

अध्यक्ष, बिहार कांग्रेस

आपदाओं से बढ़ती जीडीपी नहीं होती कल्याणकारी

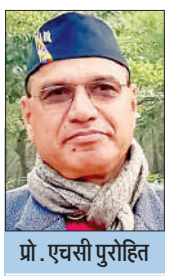

प्रो. एचसी पुरोहित

समन्वयक, हिंदू अध्ययन केंद्र, दून विश्वविद्यालय

केरल में बाढ़ के बाद पुनर्निर्माण में भारी निवेश हुआ। इससे निर्माण क्षेत्र और मजदूरी की मांग बढ़ी। आपदाओं से जीडीपी बढ़ सकती है, लेकिन यह वृद्धि विकास नहीं होती।

आज से लगभग 90 वर्ष पूर्व 1934 में अर्थशास्त्री साइमन कुजनेट्स ने 1930 की विश्वव्यापी मंदी के बाद आर्थिक विकास की गणना के लिए सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) तकनीकी को विकसित करते समय माना था कि जीडीपी को कभी भी विकास का सीधा माप नहीं मानना चाहिए, क्योंकि यह मानव कल्याण की दशा को व्यक्त नहीं करता। जॉन मेनार्ड केंस ने जीडीपी की उपयोगिता को बढ़ाने में अपना योगदान दिया।

पॉल क्रुगमैन ने जीडीपी के बारे में कहा कि यह आर्थिक गतिविधियों एवं उत्पादन को समझने का एक प्रमुख साधन है, लेकिन इसके अंतर्गत कल्याण और जीवन की गुणवत्ता का सीधा माप नहीं किया जाता, औद्योगिकीकरण से जन्मे बाजारवाद और उपभोक्तावाद के युग में उपभोक्ता की संप्रभुता बाजार को नियंत्रित कर रही है, जिसका प्रभाव न सिर्फ आर्थिक स्तर पर दिख रहा है, बल्कि यह सामाजिक मूल्यों को भी प्रभावित कर रहा है। आज समाज में समृद्धि का मापन उपभोक्ता की खर्च करने की क्षमता से आंका जाता है, जिसके कारण पूरे विश्व के उपभोक्ताओं में उपभोग की प्रतिस्पर्धा हो रही है और उपभोग पर खर्च करने की यह प्रवृत्ति जीडीपी को बढ़ाने में सहायक होती है।

अर्थशास्त्री रॉबिंस ने माना कि वस्तुओं के उपभोग के अलावा आध्यात्मिक शांति और प्राकृतिक सौंदर्य से आनंद लेना भी मनुष्य की आवश्यकता है। उपभोग के लिए बाजार में उपलब्ध वस्तुओं के अलावा मनुष्य की आवश्यकताएं प्रकृति द्वारा निःशुल्क प्रदत्त हैं, इसलिए इनका संरक्षण करने में ही शांति और आनंद प्राप्त होगा। विश्व की आर्थिक शक्तियां जीडीपी के साथ-साथ इकोलॉजी सेवाओं के मूल्यांकन से ही कल्याणकारी समाज की स्थापना कर सकती हैं। अमेरिका 30 ट्रिलियन से अधिक डॉलर के साथ विश्व की सर्वाधिक जीडीपी वाली अर्थव्यवस्था बन गया है और कार्बन उत्सर्जन में विश्व में दूसरे स्थान पर है। विश्व का लगभग 11 से 12 प्रतिशत उत्सर्जन अमेरिका के द्वारा हो रहा है। जनसंख्या की दृष्टि से प्रति व्यक्ति उत्सर्जन अनुपात में अमेरिका प्रथम स्थान पर है।

चीन 19 ट्रिलियन से अधिक डॉलर के साथ दूसरे स्थान की आर्थिक शक्ति है और अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के आंकड़ों के अनुसार यह विश्व का लगभग 30 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जक देश है। हालांकि प्रति व्यक्ति उत्सर्जन अमेरिका से कम है। जीडीपी के आधार पर जर्मनी तीसरे और भारत चौथे स्थान पर है। कार्बन उत्सर्जन में भारत विश्व में तीसरे स्थान पर है, परंतु प्रति व्यक्ति उत्सर्जन की दृष्टि से इसका स्थान काफी पीछे है। विश्व के सभी देश इस दिशा में प्रगतिशील हैं कि उनकी जीडीपी कैसे बढ़े, क्योंकि आज अर्थव्यवस्थाएं पूंजीवादी रेखीय मॉडल पर आधारित हैं, जिसके अंतर्गत प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम दोहन कर उन्हें विभिन्न वस्तुओं में परिवर्तित एवं निर्मित करना है, जिससे वे उपभोक्ताओं के उपभोग के लिए उपलब्ध हों और उपयोग के पश्चात नष्ट कर दिए जाएं।

प्रदूषण और बीमारियों से स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च भी जीडीपी में वृद्धि माना जाता है। आपदा के बाद पुनर्वास और राहत कार्यों की गतिविधियां भी जीडीपी को बढ़ा रही हैं। इसे अर्थशास्त्र में 'क्रिएटिव डिस्ट्रक्शन' या 'रिबिल्डिंग इफेक्ट' कहा जाता है, क्योंकि आपदा के बाद सड़कों, पुलों, मकानों, बिजली और संचार जैसी अधोसंरचनाओं का बड़े पैमाने पर पुनर्निर्माण होता है। इसमें सरकार, निजी क्षेत्र और अंतर्राष्ट्रीय एजेंसियां भारी निवेश करती हैं, जिससे आर्थिक गतिविधियां तेज हो जाती हैं। पुनर्निर्माण कार्यों के लिए मजदूर, इंजीनियर और तकनीशियनों की मांग बढ़ जाती है। इससे निर्माण क्षेत्र और उससे जुड़े उद्योग (सीमेंट, ईंट, लकड़ी, स्टील, कांच उपकरण) को बढ़ावा मिलता है।

आपदा प्रभावित क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय मदद, बीमा कंपनियों का भुगतान और सरकारी राहत पैकेज अर्थव्यवस्था में नए पूंजी प्रवाह की तरह काम करते हैं। इस रेखीय आर्थिक मॉडल से उत्पादन क्षमता और उत्पादकता भी बढ़ सकती है, लेकिन जीडीपी बढ़ने का यह मतलब नहीं कि सब ठीक है। जापान में भूकंप और सुनामी के बाद बड़े पैमाने पर पुनर्निर्माण से जीडीपी में अस्थायी बढ़ोतरी देखी गई। केरल में 2018 की बाढ़ के बाद पुनर्निर्माण में भारी निवेश हुआ, जिससे निर्माण क्षेत्र और मजदूरी की मांग बढ़ी। आपदाओं से जीडीपी बढ़ सकती है, लेकिन यह वृद्धि 'विकास' नहीं होती, बल्कि नुकसान की भरपाई के लिए अस्थायी उछाल होती है। आपदाओं से जनित इस वृद्धि को कल्याणकारी नहीं माना जा सकता।

आपदा से निपटने के लिए हर देश द्वारा हर वर्ष करोड़ों रुपये व्यय किए जाते हैं, परंतु आपदाओं से जो मानसिक आघात पहुंचता है और जो जान-माल की क्षति होती है, उसकी प्रतिपूर्ति शायद ही कभी हो पाए। इसलिए आवश्यकता है कि प्राकृतिक आपदाओं पर नियंत्रण के लिए मानव समाज को संवेदनशीलता के साथ सामूहिक प्रयासों से नियंत्रित करना होगा। तभी आपदाओं के नियंत्रण का दीर्घकालीन समाधान संभव होगा और इसके लिए आर्थिक विकास को रेखीय मॉडल के बजाय चक्रीय (सर्कुलर) मॉडल पर मापना होगा।

प्रसंगवश

देश में बढ़ रहे हैं मोटे लोग

सितंबर माह भारत में राष्ट्रीय पोषण माह के रूप में मनाया जाता है और इस वर्ष के 8वें राष्ट्रीय पोषण माह के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का 79वें स्वतंत्रता दिवस का संदेश विशेष रूप से प्रासंगिक हो गया है। लाल किले से प्रधानमंत्री ने राजनीतिक बयानबाजी को दरकिनार करते हुए देश की एक गंभीर स्वास्थ्य चुनौती पर ध्यान केंद्रित किया। भारत में बढ़ती मोटापे की दर। प्रधानमंत्री की चेतावनी महज एक राजनीतिक बयान नहीं है, बल्कि यह कठोर वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित है।

उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि बदलती जीवनशैली, उच्च कैलोरी वाले आहार और निष्क्रिय व्यवहार मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोग जैसी गैर-संचारी बीमारियों की एक खतरनाक लहर पैदा कर रहे हैं। इस चेतावनी की गंभीरता राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-5 के आंकड़ों से स्पष्ट होती है, जिसके अनुसार 24 प्रतिशत भारतीय महिलाएं और 23 प्रतिशत पुरुष अब अधिक वजन या मोटापे से ग्रस्त हैं। ये आंकड़े पिछले सर्वेक्षण की तुलना में काफी बढ़े हुए हैं, जो दिखाता है कि यह समस्या तेजी से बढ़ रही है और इसका समाधान तत्काल आवश्यक है।

डॉ. सुनिधि मिश्रा

लेखिका

इस स्वास्थ्य संकट की व्यापकता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि यह वृद्धि केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्रामीण मोटापे की दरें भी अब शहरी आंकड़ों के बराबर पहुंच रही हैं। यह दर्शाता है कि उच्च कैलोरी आहार और कम शारीरिक गतिविधि की समस्या पूरे देश में फैल गई है, जिससे भारत की पारंपरिक स्वस्थ जीवनशैली खतरे में पड़ गई है।

इस चिंताजनक स्थिति को और भी गंभीर बनाते हुए, आईसीएमआर-इंडिया अध्ययन-2023 के अनुसार 10.1 करोड़ भारतीयों को मधुमेह है और 13.6 करोड़ लोगों को प्रीडायबिटीज है, जिसकी एक प्रमुख वजह शरीर का अतिरिक्त वजन है। यह आंकड़ा स्पष्ट करता है कि मधुमेह भारत में महामारी का रूप ले रहा है और इसकी जड़ें गलत खान-पान की आदतों में गहराई से जमी हुई हैं।

समस्या यहीं नहीं रुकती, बल्कि यह हमारी भावी पीढ़ियों को भी प्रभावित कर रही हैं। एम्स के विभिन्न अध्ययनों में स्कूली बच्चों में 5 से 14 प्रतिशत तक मोटापा देखा गया है, जो भविष्य के लिए एक गंभीर चेतावनी है और दिखाता है कि यह समस्या अगली पीढ़ी में और भी गंभीर रूप ले सकती है। इस संकट की गंभीरता को समझते हुए, प्रधानमंत्री ने एक अत्यंत व्यावहारिक और मापने योग्य समाधान प्रस्तुत किया है। घरेलू खाना पकाने के तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती। यह सुझाव इसलिए वैज्ञानिक रूप से सही है, क्योंकि पोषण विशेषज्ञ लंबे समय से अत्यधिक तेल के सेवन, विशेष रूप से संतृप्त और ट्रांस वसा से भरपूर रिफाइंड तेलों को वजन बढ़ने, कोलेस्ट्रॉल बढ़ने और हृदय संबंधी जोखिमों से जोड़ते रहे हैं। समस्या यहीं नहीं रुकती, बल्कि यह हमारी भावी पीढ़ियों को भी प्रभावित कर रही हैं।

इस राष्ट्रीय पोषण माह के दौरान हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हम छोटे दैनिक बदलाव करेंगे जो दीर्घकालिक स्वास्थ्य लाभ प्रदान करेंगे। तेल की खपत में 10 प्रतिशत की कटौती जैसे सरल कदम, यदि राष्ट्रव्यापी अपनाए जाएं, तो इसका अत्यधिक सकारात्मक सामूहिक प्रभाव हो सकता है। पारंपरिक भारतीय खाना पकाने के तरीकों को अपनाना, नियमित शारीरिक गतिविधि को अपने जीवन का हिस्सा बनाना, और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों से दूर रहना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं, जिनके लिए नाटकीय जीवनशैली परिवर्तन की आवश्यकता नहीं है।

सोशल फोरम

घर की सांकल खुली छोड़ देने की रिवायत

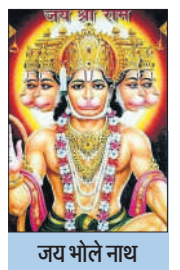

जय भोले नाथ

फेसबुक

बचपन में हम देखते थे कि घर के पुरुषों के बाहर जाने पर महिलाएं कभी भी तुरंत ही दरवाजे की किवाड़ बंद नहीं करती थीं। वह हमेशा सांकल को खुली छोड़ देती थीं। कभी-कभी पुरुष कुछ दूर जाकर लौट आते थे, ये कहते हुए कि कुछ भूल गया हूं और मुस्कुरा देते थे दोनों एक दूसरे को देखकर। एक बार एक बच्चे ने अपनी मां से पूछ लिया कि मां पापा के जाने के बाद कुछ देर तक दरवाजा क्यों खुला रखती हो? उसे बंद क्यों नहीं कर देती हो। मैं बंद करने जाता हूं तो भी आप मना कर देती हो। आखिर इसकी वजह क्या है?

तब मां ने बच्चे को वो गूढ़ बात बताई, जो हमारी सांस्कृतिक विरासत है। उन्होंने बच्चे से कहा कि किवाड़ की खुली सांकल किसी के लौटने की एक उम्मीद होती है। अगर कोई अपना हमसे दूर जा रहा है, तो हमें उसके लौटने की उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। उसका इंतजार जीवन के आखिरी पल तक करना चाहिए।

आस और विश्वास से रिश्तों की दूरी मिट जाती है, इसीलिए मैं दिल की उम्मीद के साथ दरवाजे की सांकल भी खुली रखती हूं, वह जब भी वापस आएं तो उन्हें दरवाजा खटकाने की जरूरत न पड़े, वो खुद मन के घर में आ जाएं।

जीवन में कुछ बातें हमेशा हमें सीख देती हैं कि कोई रिश्तों से नाराज कितना भी हो, उसके लिए दिल के दरवाजे कभी भी बंद मत करो। जब कभी उसे आपकी याद आएगी, उसे आपके पास आना हो तो वो आते हुए हिचके नहीं, मस्ती में पूरे विश्वास से बिना कुंडी खटकाए दिल के अंदर सीधे आ जाए।

सामयिकी

डिजिटल अरेस्ट: चार माह में 120 करोड़ की लूट

डिजिटल अरेस्ट के माध्यम से धोखाधड़ी के शिकंजे में आने की घटनाएं दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही हैं। खास बात यह है कि इन पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए कोई ठोस उपाय अमल में नहीं आ पा रहा है। वीडियो कॉल के माध्यम से किया जाने वाला यह छल दिन प्रतिदिन अपने पांव पसारता जा रहा है। चिंताजनक बात तो यह है कि अच्छे-अच्छे बुद्धिजीवी लोग भी बंधक बनने के उपरांत अपना विवेक खो देते हैं और बलपूर्वक किए जाने वाले भयादोहन के शिकार हो जाते हैं। ये घटनाएं कहीं न कहीं इस बात की ओर भी इशारा करती हैं कि अभी हमारा साइबर सुरक्षा तंत्र पूर्णतया विकसित एवं सुदृढ़ आकार नहीं ले सका है। डिजिटल अरेस्ट को अंजाम देने वाले अपराधी प्रायः पुलिस की पकड़ में नहीं आते और सफलतापूर्वक अपने इस कुकृत्य को अंजाम देने के बाद गायब हो जाते हैं।

शिशिर शुक्ला

लेखक

आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2025 के आरंभिक चार महीनों में भारत में 120 करोड़ रुपये से भी अधिक की रकम केवल और केवल डिजिटल अरेस्ट के नाम पर लूटी जा चुकी है। जैसे-जैसे तकनीकी और इंटरनेट विकास के नए आयामों को स्पर्श कर रहे हैं, साइबर अपराध भी लगातार नए-नए रूपों को धारण करके लोगों को अपना शिकार बनाता जा रहा है। आंकड़े बताते हैं कि कुल वैश्विक डिजिटल लेनदेन का 46 फीसदी भारत में होता है। बीते हुए एक दशक में भारत में इंटरनेट का उपयोग करने वालों की संख्या 25 करोड़ से बढ़कर 95 करोड़ तक हो चुकी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास से जहां जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमें सुविधाओं का भंडार मिला है, वहीं अपराधों के लिए भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक मील का पत्थर साबित हुई है।

कितनी चिंताजनक बात है कि भारत में प्रतिदिन साइबर अपराधों की लगभग सात हजार शिकायतें दर्ज की जाती हैं। इन अपराधों में डिजिटल अरेस्ट एक गंभीर एवं अहम मुद्दा है। कारण यह है कि साइबर अपराधियों के लिए डिजिटल अरेस्ट सबसे आसान पैंतरा साबित हुआ है। यह साइबर अपराधियों के द्वारा अपनाई जाने वाली एक ऐसी अभिनव तकनीक है, जो बड़ी आसानी से लोगों को अपना शिकार बना लेती है। यद्यपि एक बात का उल्लेख करना उचित होगा कि डिजिटल अरेस्ट के मामलों में साइबर अपराधी कहीं न कहीं लोगों की कमजोर मानसिकता एवं दुर्बल आत्मविश्वास का भी लाभ उठाते हैं।

एक बार जब अपराधी अपने झूठे पैतरों के द्वारा व्यक्ति की मनोदशा पर हावी हो जाते हैं, तो फिर उसके बाद पीड़ित व्यक्ति उन्हीं के निर्देशों के अनुसार कदम उठाने को मजबूर हो जाता है। दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु यह है कि कई बार लोगों को अज्ञानता एवं महत्वपूर्ण जानकारी के अभाव में इस तरह की धोखाधड़ी का शिकार होने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि डिजिटल अरेस्ट की समस्या बेहद गंभीर रूप धारण कर चुकी है।

इससे निपटने के लिए किए जा रहे उपाय फिलहाल नाकाफी हैं। आवश्यकता है कि इस चुनौती से निपटने के लिए एक मजबूत साइबर सुरक्षा तंत्र विकसित किया जाए। इसके अतिरिक्त कुछ सावधानियां पीड़ित व्यक्तियों के द्वारा भी बरती जाएं, ताकि साइबर ठग डिजिटल अरेस्ट को सफलतापूर्वक अंजाम देने में नाकाम रहें। पहला तो यह कि किसी भी तरह की अनजान वीडियो कॉल आने पर उसका कोई उत्तर न दिया जाए। फिर भी यदि किसी कारणवश कॉल उठा ली गई है तो सामने वाले की बात पर आंख बंदकर भरोसा न किया जाए।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक त्रिनाथ शुक्ला द्वारा प्लाट नं.-42, निकट बद्री नगर,इंडस्ट्रियल एरिया, नादरगंज, लखनऊ-226008 (उ.प्र.) से मुद्रित एवं 117/एल/320-ए, नवीन नगर काकादेव, कानपुर नगर 208001 (उ.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- राजेश श्रीनेत, कार्यकारी संपादक- दिग्विजय सिंह*

0512-2548300 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2022/85730 *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी।(नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र कानपुर होगा)।

बेजोड़ कारीगरी की नायाब धरोहर कांच का मंदिर

कानपुर के कमला टावर क्षेत्र में माहेश्वरी मोहाल में स्थित कांच का मंदिर स्थानीय के साथ बाहरी पर्यटकों के लिए आकर्षण का बड़ा केंद्र है। श्री धर्मनाथ स्वामी जैन श्वेतांबर मंदिर के नाम से जाना और पहचाना जाने वाला यह दर्शनीय स्थल 155 वर्ष पुराना होने के साथ जैन धर्म का प्रमुख केंद्र है। कांच से बने इस मंदिर को जो भी देखता है, मुग्ध सा रह जाता है। इस मंदिर में कांच की बेजोड़ कारीगरी अकल्पित है। मंदिर में 15 वें तीर्थंकर धर्मनाथ स्वामी और सातवें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाएं स्थापित हैं। इस मंदिर को कानपुर की ऐतिहासिक, धार्मिक और पौराणिक धरोहर का दर्जा प्राप्त है।

कांच की दीवारों पर राजस्थानी और ईरानी शैली की अद्भुत कला

जैन कांच मंदिर वास्तुकला और स्थापत्य कला का इतिहास बयान करता है। पूरा मंदिर कांच से बना है। इसे आगरा से आए कारीगरों ने तैयार किया था। कांच की दीवारों पर राजस्थानी और ईरानी शैली की अद्भुत कला का संगम दिखाई देता है। दीवारों पर बिहार के सम्मेद शिखर (जहां 20 तीर्थंकर को मोक्ष प्राप्त हुआ) की कलाकृति को आकर्षक तरीके से उकेरा गया है। मंदिर का फर्श सफेद संगमरमर से बना है। वास्तु और शिल्प का नायाब उदाहरण यह मंदिर शांतिपूर्ण वातावरण में कांच के जटिल काम और रंगीन चित्रों को प्रदर्शित करता है। कांच के टुकड़ों को तराश कर की गई मनमोहक चित्रकारी देखने वाली है। इसे श्री धर्मनाथ भगवान का कांच का जिनालय भी कहा जाता है। कांच और मीनाकारी की रंगबिरंगी कला का यह अद्भूत नमूना हर किसी के लिए दर्शनीय है। दीवारों पर तीर्थ स्थलों, योग के आसनों आदि का चित्रण किया गया है।

प्रस्तुतिः मनोज त्रिपाठी

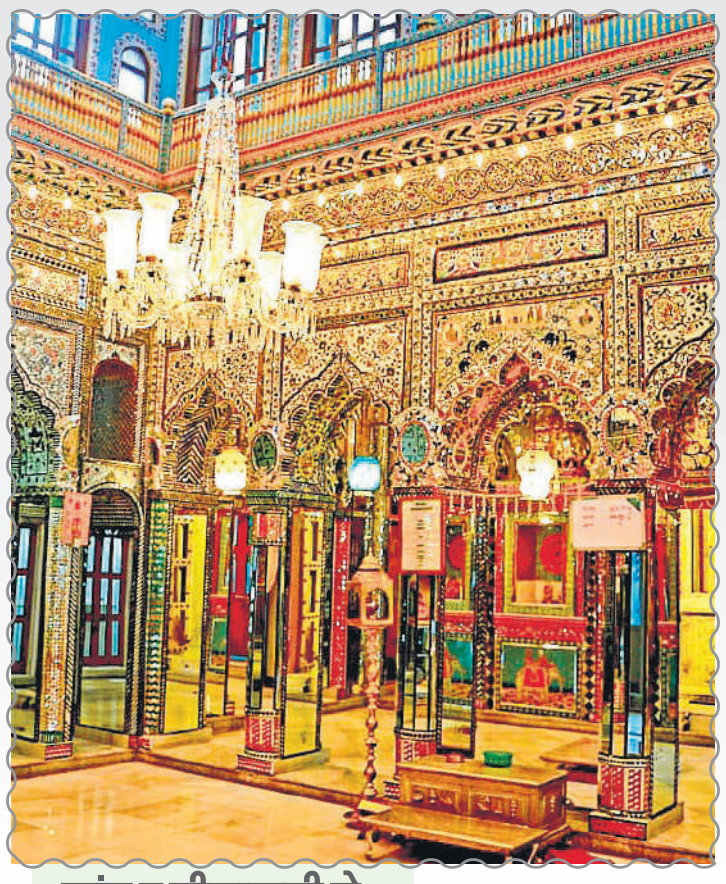

कांच व मीनाकारी से अलंकृत आभूषणों से की गई है सजावट

इस मंदिर का निर्माण प्राचीन और पारंपरिक संरचनात्मक शैली में किया गया है। मंदिर की दीवारों पर कांच और मीनाकारी से शानदार ढंग से अलंकृत व जटिल पैटर्न वाले आभूषण जड़े हुए हैं। मंदिर की पूरी संरचना कांच और मीनाकारी से निर्मित है, जो पारंपरिक स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करती है। मंदिर की दीवारें और छत उत्कृष्ट कलात्मक डिजाइनों में काटे गए दर्पणों से सुसज्जित हैं। दीवारों पर भित्ति चित्र रंगीन कांच से बने हैं। मंदिर में अलंकृत दर्पण कार्य के साथ भव्य शैली के मेहराब हैं।

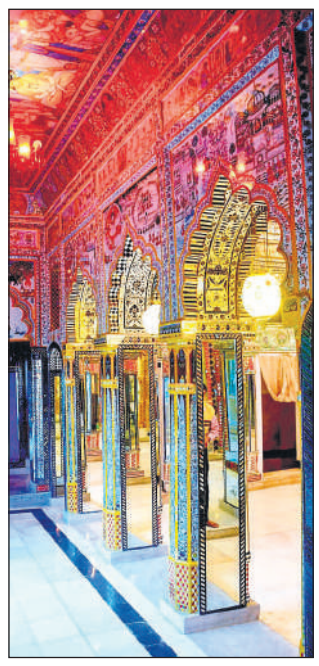

मंदिर प्रांगण में स्थित खूबसूरत बगीचा, संगमरमर की कृतियां

जैन कांच मंदिर जैन धर्मावलंबियों के लिए समर्पित है। इस मंदिर को देखने और दर्शन करने भगवान महावीर के अनुयायियों के साथ शेष 23 जैन तीर्थंकरों के अनुयायी बड़ी संख्या में आते हैं। मंदिर के सामने जहां एक धर्मशाला है, वहीं मंदिर के प्रांगण में खूबसूरत बगीचा पूरे स्थल को रमणीक बनाता है। बगीचे में संगमरमर को तराश कर कई कलाकृतियां स्थापित की गई हैं।

सुरमा बरेली वाला आंखों का है रखवाला

बरेली में सुरमा बनाने से लेकर बिकने की शुरूआत हाशमी परिवार ने की थी 'बरेली का सुरमा' किसी पहचान का मोहताज नहीं है। यह इस शहर का रिवाज और संस्कृति जैसा है, इसके चलते जो कोई बरेली आया, सुरमा साथ लेकर जरूर गया। यहां हाशमी परिवार से शुरू हुआ सुरमा बनाने का कारोबार अब पांचवी पीढ़ी संभाल रही है। बरेली में सुरमा लोगों को रेलवे स्टेशनों से लेकर बस अड्डों, बाजारों, गली-मोहल्लों की दुकानों तक पर आसानी से मिल जाता है। बड़ा बाजार, किला रोड, कुतुबखाना, पुराना शहर, सेटेलाइट हर कहीं सुरमा बिकता है। आला हजरत के उर्स में आने वाले देश-विदेश के जायरीन भी बरेली की निशानी के तौर पर सुरमा खरीदकर ले जाते हैं।-

-आसिफ अंसारी, बरेली

सुरमे का कारोबार

बरेली के सुरमा को ब्रांड बनाने वाले एम हसीन हाशमी का चार साल पहले निधन हो चुका है। एम हसीन हाशमी बरेली में सुरमा कारोबार को आगे बढ़ाने वाले हाशमी परिवार की चौथी पीढ़ी के सदस्य थे। उन्होंने 1971 में कारोबार संभालने के बाद इसे देश-विदेश तक शोहरत दिलाई। अब उनके बेटे हाजी शावेज हाशमी सुरमा का काम संभाल रहे हैं। बड़ा बाजार में सुरमा बेचने वाले व्यापारी मोहम्मद शमा हाशमी ने बताया कि सुरमा लगाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है और सफाई भी हो जाती है। उनके पास दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरू समेत देश के कई हिस्सों से सुरमा की मांग आती है।

मीता! पंचलैट वालेः गोधन और मुनरी की प्रेमकथा

असमानता, विपन्नता और कमतर होने से उपजे एहसास को कम करने का सफल प्रयास जब अपने चरम पर जाता है तब उपजती है कहानी 'पंचलाइट' फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा लिखी गई कालजयी कहानी को नई नजर से मंच पर लाने का प्रयास निर्देशक लव तोमर और उनकी टीम ने किया है। नाटक का नाम– "मीता! पंचलैट वाले"। तीसरी कसम कहानी से महुआ घटवारन का प्रसंग भी कथा का हिस्सा है। यह अपने होने का सिंबॉलिज्म गोधन और मुनरी की प्रेमकथा में खोजता है, लेकिन सफल प्रेम के संदर्भ में। रचनात्मक स्वतंत्रता का प्रयोग करते हुए नाटक में कुछ घटनाएं, चरित्र और भावों का प्रयोग किया गया है, जो मूल कहानियों का हिस्सा नहीं हैं।– *फीचर डेस्क बरेली*

फणीश्वर नाथ रेणु की एक कहानी है। इस आंचलिक कहानी का का नाम है पंचलाइट। इसका समय-काल पुराना है। उन दिनों का जब गैसबत्ती या पंचलाइट को रात में रोशनी के लिए जलाया जाता था। उसे जलाना भी कमाल था। इसी को आधार बनाकर रेणु ने एक प्रेम कथा की रचना की है। उन्हीं की एक कहानी है तीसरी कसम। इन दोनों रचनाओं को मिलाकर एक नाटक रचा गया। नाम है मीता पंचलैट। अस्तिता फाउंडेशन, ड्रामा ड्रॉप आउट्स और वेग्माइन सिटी मॉल ने बरेली नाट्य महोत्सव के तहत प्रभावे ऑडिटोरियम, अर्बन हाट, बरेली में मंचन किया। नाटक में फणीरेश्वर नाथ रेणु जी की दो कहानियों पंचलाइट और तीसरी कसम को मिलाकर एक नया सिंबोलिक खोजकर नाटक को गढ़ा गया। इसमें पंचलाइट जो समस्या है वह तो है ही। साथ ही उसमें गोधन और मुनरी की प्रेम कहानी को भी स्थापित किया है। नाटक के मंचन में एक समय पंचलाइट का अभाव और प्रेम कहानी एक दूसरे के पूरक बन जाते हैं।

फणीरेश्वर नाथ रेणु की कहानी तीसरी कसम की महुआ घटवारन का प्रसंग भी जोड़ा गया। गोधन और मुनरी की प्रेम कहानी दोहराई गई है। प्यारे लाल कहानी चल रही होती है पंचलाइट के अभाव की। यहां पर इनका प्रेम पूरा होता है, जिसका कारण पंचलाइट बनती है। गांव व टोले वालों की इज्जत बच जाती है। कहानी के अनुसार गोधन गांव में रहता है, लेकिन गोधन को पंचायत से बाहर रखा और अंत में वही आगे पंचलाइट जलाता है। नाटक में गोधन को शहर भेज दिया जाता है। जहां वह अच्छे से अपना व्यापार जमा लेता है। फिर वहां से साल-डेढ़ साल बाद आकर गोधन गांव के मेले में ही पंचलाइट की दुकान खोलता है, जो कि गांव व मेले की सबसे बड़ी पंचलाइट की दुकान होती है।

पंचलाइट की आंचलिक कहानी

पंचलाइट रेणु जी की आंचलिक कहानी है। कहानी में बिहार के एक पिछड़े गांव के परिवेश का सुंदर चित्रण प्रस्तुत किया गया है। रामनवमी के मेले में महतो टोली के पंचों ने एक पेट्रोमैक्स खरीदा, जिसको गांव वाले पंचलाइट कहकर पुकारते थे। पंचलाइट खरीदने के बाद दस रुपये बचे थे, जिससे पूजा की सामग्री भी खरीदी गई। उसी में कीर्तन का आयोजन किया गया उस टोली के सभी लोग पंचलाइट देखने के लिए आ गए, लेकिन प्रश्न उठा कि इसको जलाएगा कौन ? क्योंकि खरीदने के पहले यह बात तो दिमाग में आए ही नहीं लोगों ने यह निर्णय लिया की दूसरी टोली के लोगों से नहीं जलाया जाएगा भले ही वही पड़ा रहे। आज किसी ने अपने घर ढिबरी भी नहीं जलाई थी। पंचलाइट न जलने से सभी के चेहरे उतर गए वही राजपूत टोली के लोग कहने लगे सभी लोग कान पकड़कर दस बार उठे–बैठे पंचलैट जल जाएगा, लेकिन ऐसा मजाक को भी धैर्यपूर्वक सहना पड़ा। वहीं पर गुलरी काकी की बेटी मुनरी बैठी थी। वह जानती थी कि गोधन पंचलाइट जलाना जानता है, लेकिन पंचायत ने गोधन का हुक्का पानी बंद कर रखा था, क्योंकि वह सलीमा का गाना गलियों में गाता रहता था और लड़कियों को छेड़ता रहता था। मुनारी गोधन से प्रेम करती थी। इसलिए वह अपने न कहकर अपनी सहेली कनेली को बताई। कनेली सरदार तक यह बात पहुंचा दी कि गोधन पंचलाइट जलाना जानता है, लेकिन सभी लोग सोच में पड़ गए कि गोधन को बुलाया जाए कि नहीं बुलाया जाए। अंत में लोगों ने निर्णय लिया कि उसे बुलाया जाए। सरदार ने छड़ीदार को भेजा, लेकिन उसने आने से मनाकर दिया। अंत में गुलरी काकी झोपड़ी में गई और उसे मनाकर ले आई। गोधन ने पंचलाइट में तेल भरा और पूछा स्प्रिट कहां है, सभी लोग उदास हो गए लेकिन गोधन होशियारी से गाड़ी की तेल की सहायता से पंचलाइट जला देता है। पंचलाइट के जलने से लोगों के मन में प्रसन्नता आ गई। मुनरी ने हसरत की निगाहों से उसे देखा दोनों की नजरें चार हो गई। गुलरी काकी ने शाम को उसे खाने पर बुलाया पंच भी अति उत्साहित होकर गोधन को कह देते हैं – 'तुम्हारा सात खून माफ, खूब गाओ सलीमा का गाना'।

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	80,157.88	24,579.60
गिरावट	206.61	45.45
प्रतिशत में	0.26	0.18

सोना- 1,06,070 प्रति 10 ग्राम

चांदी- 1,26,100 प्रति किलो

अमृत विचार

कानपुर, बुधवार, 3 सितंबर 2025

www.amritvichar.com

बिजनेस ब्रीफ

13 कंपनियों को आईपीओ लाने की मिली मंजूरी

नई दिल्ली। बाजार नियामक सेबी ने अर्बन कंपनी और बोट ब्रांड का संचालन करने वाली कंपनी इमेजिन मार्केटिंग समेत 13 कंपनियों को अपने आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) लाने की मंजूरी दे दी है। भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) ने कहा कि आईपीओ लाने की मंजूरी पाने वाली कंपनियों में जूनिपर ग्रीन एनर्जी, जैन रिसोर्स रिसाइक्लिंग, मौरी टेक, रावी इन्फ्राबिल्ड प्रोजेक्ट्स, पेस डिजिटेक, ओम्निटेक इंजीनियरिंग, कोरोना रेमेडीज, केएसएच इंटरनेशनल, ऑलकैम लाइफसाइंस, प्रॉपरिटी ज्वेल्स और ओम फ्रेट फॉरवर्डर्स भी शामिल हैं। इन कंपनियों ने इस साल मार्च से जून के बीच अपने निर्गम के लिए सेबी के समक्ष दस्तावेज दाखिल किए थे।

आर गांधी फिर बन सकते हैं यस बैंक के चेयरमैन

नई दिल्ली। निजी क्षेत्र के यस बैंक ने मंगलवार को कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक ने आर गांधी को बैंक का गैर-कार्यकारी चेयरमैन फिर से नियुक्त करने की मंजूरी दे दी है। गांधी रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर रह चुके हैं। यस बैंक ने शेयर बाजार को बताया कि भारतीय रिजर्व बैंक ने एक सितंबर, 2025 के अपने पत्र के माध्यम से राम सुब्रमण्यम गांधी को बैंक के अंशकालिक चेयरमैन के रूप में फिर से नियुक्त करने को मंजूरी दी। उनकी नियुक्ति 20 सितंबर, 2025 से 13 मई, 2027 तक के लिए है। गांधी ने 2014 से 2017 तक तीन वर्षों के लिए भारतीय रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर के रूप में काम किया। वह 37 वर्षों तक एक अनुभवी और कुशल केंद्रीय बैंकर रहे।

एप्पल ने बेंगलुरु में पहला खुदरा स्टोर खोला

बेंगलुरु। एप्पल ने मंगलवार को बेंगलुरु में अपना पहला खुदरा स्टोर खोला। यह कंपनी का दक्षिण भारत में पहला और देश में तीसरा स्टोर है। कंपनी ने बयान में कहा कि 'एप्पल हेब्ब्ल' नाम का यह स्टोर ग्राहकों को एप्पल उत्पादों, सेवाओं और सहायता की पूरी श्रृंखला के साथ ही नि:शुल्क 'टुडे एट एप्पल' सत्र की सुविधा भी देगा। एप्पल ने ऑनलाइन मंच के अलावा मुंबई में पहला भारतीय स्टोर 'एप्पल बीकेसी' खोला था। उसके बाद दिल्ली में 'एप्पल साकेत' की शुरुआत हुई।

जीएसटी सुधार से पारदर्शी बनेगी अर्थव्यवस्था

केंद्रीय वित्त मंत्री सीतारमण बोलीं- सुधार से अनुपालन बोझ में और कमी आएगी एवं छोटे व्यवसायों को होगा लाभ

चेन्नई, एजेंसी

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को कहा कि अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधार अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से खुला एवं पारदर्शी बनाएंगे। इससे अनुपालन बोझ में और कमी आएगी एवं छोटे व्यवसायों को लाभ होगा। तमिलनाडु स्थित सिटी यूनियन बैंक के 120वें स्थापना दिवस समारोह को केंद्रीय वितमंत्री ने संबोधित किया। कार्यक्रम में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद रहीं।

सीतारमण ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने हाल ही में अगली पीढ़ी के सुधारों के लिए एक कार्यबल के गठन की घोषणा की है। इसका स्पष्ट उद्देश्य नियमों को सरल बनाना, अनुपालन लागत कम करना तथा स्टार्टअप, सूक्ष्म, लघु व मझोले उद्यमों और उद्यमियों के लिए एक अधिक अनुकूल परिवेश का निर्माण करना है। इसके अतिरिक्त, अगले दो दिन होने वाली परिषद की बैठक के साथ अगली पीढ़ी के जीएसटी सुधारों की योजनाबद्ध शुरुआत से आने वाले महीनों में अर्थव्यवस्था पूरी तरह से पारदर्शी होगी। अनुपालन बोझ में और कमी आएगी, जिससे छोटे व्यवसायों के लिए फलने-फूलना आसान हो जाएगा। स्वतंत्रता दिवस के अपने संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने माल एवं सेवा कर (जीएसटी) में बड़े सुधारों की

● तमिलनाडु स्थित सिटी यूनियन बैंक के 120वें स्थापना दिवस समारोह को केंद्रीय वित मंत्री ने किया संबोधित

घोषणा की थी और नागरिकों के लिए दिवाली पर उपहारों का वादा किया था।

सीतारमण ने कहा कि देश के अपने विकसित भारत 2047 के दृष्टिकोण की ओर बढ़ते हुए बैंकों से न केवल ऋण का विस्तार करने बल्कि बुनियादी ढांचे के विकास को गति प्रदान करने, एमएसएमई के लिए समय पर और आवश्यकता-आधारित वित्तपोषण सुनिश्चित करने, बैंकिंग सेवाओं से वंचित लोगों को औपचारिक बैंकिंग के दायरे में लाने व विविध आवश्यकताओं को पूरा करने का आह्वान किया जाता है। इस लक्ष्य के लिए बैंकिंग क्षेत्र का समर्थन अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि इस परिवर्तन के मार्गदर्शक सिद्धांत विश्वास, प्रौद्योगिकी और पारदर्शिता होने चाहिए। 11 वर्ष में 56 करोड़ जन-धन खाते खोले गए हैं, जिनमें कुल जमा राशि 2.68 लाख करोड़ रुपये है। इनमें से अधिकतर महिलाएं हैं। सीतारमण ने बताया कि भारतीय अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों ने परिसंपत्ति गुणवत्ता में बड़ा सुधार दर्ज किया है। उन्होंने कहा कि रेटिंग एजेंसी एसएंडपी ने 18 वर्ष में पहली बार देश की दीर्घकालिक साख में सुधार किया है।

डिजिटल साक्षरता, वित्तीय जागरूकता को लेकर चुनौतियां अब भी बरकरार : मुर्मू

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने मंगलवार को कहा कि बैंकिंग क्षेत्र में प्रगति के बावजूद, लोगों को अब भी डिजिटल साक्षरता और वित्तीय जागरूकता के संदर्भ में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। राष्ट्रपति ने तमिलनाडु स्थित सिटी यूनियन बैंक के 120वें स्थापना दिवस समारोह में कहा कि किसानों और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सशक्तीकरण बैंकिंग क्षेत्र की प्राथमिकता होनी चाहिए। बैंक और वित्तीय प्रौद्योगिकी कंपनियां वंचित समुदायों के लिए उनके अनुकूल मोबाइल एप्लिकेशन और बीमा उत्पाद प्रदान कर रही हैं। उन्होंने कहा कि भुगतान बैंक, डिजिटल वॉलेट और बैंकिंग प्रतिनिधियों ने वित्तीय सेवाओं को दूरदराज के गांवों के घर-घर पहुंचाया है। हालांकि, इस क्षेत्र में प्रगति के बावजूद, डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट पहुंच और वित्तीय जागरूकता के संदर्भ में कई चुनौतियां अब भी बनी हुई हैं। राष्ट्रपति ने कहा कि सभी पक्षों के संयुक्त प्रयासों से, लोगों को प्रौद्योगिकी, डिजिटल और वित्तीय साक्षरता के माध्यम से बैंकिंग सेवाओं के साथ बेहतर ढंग से एकीकृत किया जा सकता है। बैंक एमएसएमई को विकास के इंजन में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने कहा कि समय पर और सस्ता कर्ज, वित्तीय साक्षरता प्रदान करके और कृषि-प्रौद्योगिकी उपायों को समर्थन देकर, बैंक कृषि को टिकाऊ और लाभदायक बनाने में मदद कर सकते हैं। इस मौके पर तमिलनाडु के राज्यपाल आर एन रवि, मंत्री गीता जीवन, सिटी यूनियन बैंक के चेयरमैन जी महालिंगम, बैंक के प्रबंध निदेशक एन कामकोडी उपस्थित थे।

मुनाफावसूली से सेंसेक्स और निफ्टी नुकसान में

मुंबई, एजेंसी

स्थानीय शेयर बाजार में मंगलवार को शुरुआती तेजी कायम नहीं रह पायी और जीएसटी परिषद की बैठक से पहले बैंक और वाहन शेयरों में कारोबार के अंतिम घंटे में मुनाफावसूली से सेंसेक्स 207 अंक के नुकसान में रहा, जबकि एनएसई निफ्टी 45 अंक टूट गया।

तीस शेयरों वाला बीएसई का सेंसेक्स 206.61 अंक की गिरावट के साथ 80,157.88 अंक पर बंद हुआ। सूचकांक तेजी के साथ खुला और दोपहर तक बढ़त के साथ कारोबार करता रहा। हालांकि, कारोबार के अंत में मुनाफावसूली से यह दिन के उच्चतम स्तर 80,761.14 अंक से 752.64 अंक नीचे आ गया। सेंसेक्स में शामिल शेयरों में 16 नुकसान में जबकि 14 लाभ में रहे। 50 शेयरों पर आधारित एनएसई का निफ्टी 45.45 अंक की गिरावट के साथ 24,579.60 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स की कंपनियों में महिंद्रा एंड महिंद्रा, एशियन पेंट्स, कोटक महिंद्रा बैंक, आईसीआईसीआई बैंक, टाटा मोटर्स और लार्सन एंड टुब्रो प्रमुख रूप से नुकसान में रहीं। दूसरी तरफ, लाभ में रहने वाले शेयरों में पावर ग्रिड, एनटीपीसी, टाटा स्टील और हिंदुस्तान यूनिलीवर शामिल हैं।

● जीएसटी परिषद की बैठक से पहले बैंक-वाहन के शेयरों में बिकवाली

स्मॉल और मिडकैप लाभ में रहे

छोटी कंपनियों से जुड़ा बीएसई स्मॉलकैप 0.64% चढ़ा जबकि मझोली कंपनियों से संबंधित मिडकैप 0.27% के लाभ में रहा। एशिया के अन्य बाजारों में, दक्षिण कोरिया का कॉस्पी और जापान का निक्की बढ़त में रहे, जबकि चीन का शंघाई कम्पोजिट और हांगकांग का हैंगसेंग गिरावट के साथ बंद हुए। यूरोप के प्रमुख बाजारों में दोपहर के कारोबार में गिरावट का रुख था।

जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने से राज्य 'शुद्ध लाभार्थी' बने रहेंगे : एसबीआई रिसर्च

नई दिल्ली, एजेंसी

जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने के प्रस्ताव को अमल में लाने से राज्य 'शुद्ध लाभार्थी' बने रहेंगे और चालू वित्त वर्ष में उनका माल एवं सेवा कर राजस्व, जिसमें हस्तांतरण भी शामिल है, 14.10 लाख करोड़ रुपये से अधिक होने का अनुमान है। मंगलवार को जारी एसबीआई रिसर्च की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई।

इसमें कहा गया कि 2018-19 में जीएसटी दरों को युक्तिसंगत बनाने की पिछली प्रक्रिया से स्पष्ट

है कि दरों में तत्काल कमी से मासिक संग्रह में लगभग 3-4% की अल्पकालिक गिरावट आ सकती है (5,000 करोड़ रुपये या वार्षिक 60,000 करोड़ रुपये)। आमतौर पर आगे चलकर राजस्व प्रति माह 5-6% की दर से बढ़ता है। केंद्र ने माल एवं सेवा कर के तहत दरों और स्लैब को युक्तिसंगत बनाने का प्रस्ताव दिया है। इसके तहत 5 और 18% की दो स्तरीय कर संरचना होगी और कुछ चुनिंदा वस्तुओं पर 40% की दर लागू की जाएगी। विपक्षी दलों के शासन वाले आठ राज्यों ने राजस्व क्षतिपूर्ति की मांग करते हुए कहा है कि प्रस्तावित बदलाव के बाद औसत राजस्व हानि लगभग 1.5-2 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है। एसबीआई रिसर्च ने 19 अगस्त की रिपोर्ट में कहा था कि केंद्र-राज्यों को औसत वार्षिक जीएसटी राजस्व हानि 85,000 करोड़ हो सकती है।

भारत द्विपक्षीय समझौते पर अमेरिका से कर रहा बात : पीयूष

नई दिल्ली, एजेंसी

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंगलवार को कहा कि भारत, अमेरिका के साथ द्विपक्षीय व्यापार समझौते (बीटीए) पर बातचीत कर रहा है। उन्होंने उद्योग निकाय द्वारा स्थिरता पर आयोजित कार्यक्रम में कहा, अभी बहुत कुछ हुआ है, अभी बहुत कुछ होना बाकी है... हम बीटीए के लिए अमेरिका से बात कर रहे हैं।

भारत-अमेरिका मार्च से इस समझौते पर बातचीत कर रहे हैं। अब तक पांच दौर की वार्ता हो चुकी है। 27 अगस्त से 50 प्रतिशत शुल्क लगाने के बाद अमेरिकी दल ने अगले दौर की वार्ता के लिए भारत का अपना दौरा स्थगित कर दिया है जो 25 अगस्त से शुरू होने वाली थी। अब तक छठे दौर की वार्ता के लिए कोई तारीख तय नहीं की गई है।

गोयल ने कहा कि भारत पहले ही ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त अरब अमीरात, मॉरीशस, ब्रिटेन और चार यूरोपीय देशों के समूह ईएफटीए के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर कर चुका है। भारत और अमेरिका के बीच तनाव के बीच, अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेंट ने कहा कि अंत में दोनों महान देश इस समस्या का समाधान निकाल लेंगे। उन्होंने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) को भी काफी हद तक दिखावा बताया।

पटरी पर लौट रहे हैं भारत-चीन संबंध

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि भारत-चीन संबंध धीरे-धीरे पटरी पर लौट रहे हैं। जैसे-जैसे सीमा मुद्दे सुलझते जाएंगे तनाव कम होता जाएगा। शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनफिंन के बीच हुई बैठक में भारत-चीन सीमा मुद्दे के निष्पक्ष, उचित और पारस्परिक रूप से स्वीकार्य समाधान की दिशा में काम करने पर सहमति बनी है। दोनों नेताओं ने वैश्विक व्यापार को स्थिर करने में एक-दूसरे की अर्थव्यवस्थाओं की भूमिका को मान्यता देते हुए व्यापार एवं निवेश संबंधों को बढ़ाने का संकल्प लिया। पीएन3 में ढील की गुंजाइश पर गोयल ने कहा कि शिखर सम्मेलन में सभी एससीओ सदस्यों ने भाग लिया। गलवान में हमारे सामने एक समस्या थी, जिससे हमारे संबंधों में थोड़ी तलखी आई थी। मुझे लगता है कि सीमा मुद्दों का समाधान होने के साथ ही स्थिति का सामान्य होना एक बहुत ही स्वाभाविक परिणाम है।

राष्ट्रीय

पेराई सत्र के लिए गन्ना सट्टा व आपूर्ति नीति जारी

गन्ना किसानों के हित में राज्य सरकार ने लिए बड़े फैसले

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार। पेराई सत्र-2025-26 के लिए मंगलवार को गन्ना विकास विभाग ने गन्ना सट्टा एवं आपूर्ति नीति जारी कर दी। इसमें गन्ना आपूर्ति नीति के संदर्भ में प्रदेश के गन्ना कृषकों को गन्ने की पर्चियों के निर्गमन समेत आपूर्ति के लिए विस्तृत निर्देश चीनी मिलों को दिये गये हैं। सट्टा एवं आपूर्ति नीति में कृषक हितों को ध्यान रखते हुए कई बदलाव किये गये हैं। लघु महिला किसानों को प्राथमिकता दी गई है।

गन्ना एवं चीनी आयुक्त प्रमोद कुमार उपाध्याय ने कहा कि प्रदेश की चीनी मिलों की पेराई क्षमता, किसानों की गन्ना आपूर्ति में सुविधा, लघु महिला किसानों को विशेष प्राथमिकता, गन्ना उत्पादन व चीनी मिलों को गन्ने की उपलब्धता में संतुलन बनाये जाने की आवश्यकता है। इससे चीनी मिलों को उनकी आवश्यकता के अनुरूप पेराई के लिए गन्ना उपलब्धता के साथ किसानों का सभी पेराई योग्य गन्ने की आपूर्ति हो सकेगी।

उन्होंने बताया कि इस पेराई सत्र के लिए निर्गत नीति में पहली बार गन्ना समिति के नये कृषक सदस्यो का सट्टा पेराई सत्र 2024-25 में सम्बन्धित चीनी मिल की औसत गन्ना आपूर्ति या सम्बन्धित जिले की गन्ना उत्पादकता का 70 प्रतिशत, इनमें से जो भी अधिक हो, की सीमा तक गन्ना सट्टा का लाभ दिया जाएगा। राज्य सरकार की मंशा के अनुरूप लघु महिला किसानों को विशेष प्राथमिकता दी गई है। छोटे गन्ना किसानों (81 कुंतल सट्टाधारक) की पेड़ी गन्ने की पर्चियां 1 से 3 पक्ष में और पौधे गन्ने की पर्चियां 7 से 9 पक्ष में जारी करने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है।

● लघु महिला किसानों को राज्य सरकार ने दी प्राथमिकता, किसानों के हितों में कई बदलाव

13.12 लाख छोटे गन्ना कृषक लाभान्वित होंगे

गन्ना आयुक्त ने बताया कि नई नीति से प्रदेश के कुल 13.12 लाख छोटे गन्ना कृषक लाभान्वित होंगे। पहली बार अति लघु गन्ना किसानों (36 कुंतल या 4 पर्ची बेसिक मोड) और लघु महिला गन्ना किसान (81 कुंतल या 9 पर्ची बेसिक मोड) को पेड़ी पौधा को 52:48 के अनुपात से मुक्त रखते हुए अति लघु गन्ना किसानों को शत-प्रतिशत पेड़ी गन्ने की पर्चियां प्रथम पक्ष में, पौधे गन्ने की पर्चियां सातवें पक्ष में और लघु महिला गन्ना किसानों को शत-प्रतिशत पेड़ी गन्ने की पर्चियां 1 से 3 पक्ष में व पौधे गन्ना की पर्चियां 7 से 9 पक्ष में जारी की जाएंगी। इससे लगभग 3.75 लाख अति लघु गन्ना कृषक व 6268 लघु महिला गन्ना किसान लाभान्वित होंगी।

चीनी मिलों के परता में होगी वृद्धि

नई नीति से चीनी मिलों को चीनी परता में वृद्धि होगी। इससे कृषकों को शीघ्र गन्ना मूल्य भुगतान सुनिश्चित किया जा सकेगा। आयुक्त ने बताया कि ऐसे नये समिति सदस्यों जिनके पास पेड़ी या शरदकालीन पौधा है, उनकी पर्चियां पहली बार 5वें पक्ष से 12वें पक्ष में लगाये जानी की सुविधा दी गई है। जिनके पास पौधा गन्ना है, उनकी पर्चियां पिछले वर्ष की तरह 7वें पक्ष से लगेंगी। इस निर्णय से लगभग एक लाख नये गन्ना किसानों को लाभ होगा।

नए सदस्यों को गन्ना उत्पादकता का 70 प्रतिशत मिलेगा लाभ

गन्ना आयुक्त ने बताया कि पहली बार नये सदस्यों को पेराई सत्र 2025-26 में चीनी मिल की औसत गन्ना आपूर्ति अथवा संबंधित जिले की गन्ना उत्पादकता का 70 प्रतिशत, जो भी अधिक हो. की सीमा तक गन्ना सट्टा का लाभ दिया जाएगा। प्रदेश में प्रति वर्ष लगभग 2 लाख गन्ना किसान समितियों के नये सदस्य बनते हैं और इसका लाभ उठाते हैं। गन्ना शोध परिषद की ओर से जारी गन्ना किस्म को 15,023 की परिपक्वता के दृष्टिगत अति शीघ्र मानते हुए गन्ने की कैलेंडरिंग में प्राथमिकता दी गई है। इसमें मुख्यत: को. 15023 गन्ना प्रजाति को अगेती संवर्ग में शीघ्रतम परिपक्वता के कारण पेड़ी की पर्चियां 1 से 2 पक्ष में और पौधे की पर्चियां 7 से 8 पक्ष में अंकित की जाएंगी। इससे लगभग कुल 3.66 लाख किसान लाभान्वित होंगे।

मां के अपमान को मैं माफ कर दूं, जनता नहीं करेगी : मोदी

पटना, एजेंसी

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि बिहार में कांग्रेस की हाल में हुई 'वोटर अधिकार यात्रा' के दौरान उनकी मां को अपशब्द कहे जाने से उन्हें गहरा दुख हुआ है और इस घटना के लिए वह राष्ट्रीय जनता दल (राजद) एवं कांग्रेस को भले ही माफ कर दें, लेकिन बिहार की जनता इन दलों को माफ नहीं करेगी। मोदी ने दरभंगा में हाल में 'वोटर अधिकार यात्रा' के दौरान मंच से उनकी दिवंगत मां को अपशब्द कहे जाने से पैदा हुए विवाद पर पहली बार प्रतिक्रिया देते हुए विपक्षी दलों पर निशाना साधा।

उन्होंने कहा कि उनकी मां को अपशब्द कहना उन लोगों के लिए बड़ी बात नहीं है जो 'भारत माता' का अपमान करते हैं और ऐसे लोगों को दंडित किया जाना चाहिए। उन्होंने सवाल किया, मेरी दिवंगत मां का राजनीति से लेना-देना नहीं था, उनका दोष क्या है। उनके लिए अपशब्द क्यों कहे गए? प्रधानमंत्री ने कहा, मैं उन्हें माफ़ कर भी दूं, लेकिन बिहार की जनता मेरी मां का अपमान करने के लिए उन्हें कभी माफ नहीं करेगी। राज्य की जनता को कहना होगा कि आने वाले दिनों में वे इन पार्टियों के नेताओं को सज़ा देंगे।

उन्होंने कहा कि बिहार की जनता को राजद और कांग्रेस के नेताओं से जवाब मांगना चाहिए... हर गली-मोहल्ले में आवाज़ सुनाई देनी चाहिए - हम एक मां का अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे, हम राजद का अत्याचार और कांग्रेस के हमले बर्दाश्त नहीं करेंगे'। प्रधानमंत्री ने बिहार में स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं के लिए नई सहकारी पहल के डिजिटल तरीके से उद्घाटन पर दिल्ली में सभा को संबोधित करते हुए ये टिप्पणियां कीं। मोदी ने कहा, बिहार मां जानकी की धरती है... यहां महिलाओं को हमेशा से सम्मान दिया गया है। यहीं छठ पूजा मनाई जाती है। उन्होंने कहा कि जो लोग माताओं एवं बहनों को अपशब्द कहते हैं वे महिलाओं को कमजोर समझते हैं। उनकी इसी मानसिकता से वे महिलाओं को शोषण एवं उत्पीड़न की वस्तु समझते हैं। जब भी महिला विरोधी मानसिकता वाले लोग सत्ता में आए, माताओं, बेटियों एवं बहनों को सबसे अधिक कष्ट सहना पड़ा... यह राजद के 'माफिया राज' के दौरान हुआ था। राजद के शासनकाल में बिहार में अपराध चरम पर थे और राज्य में हर दिन हत्या, रंगदारी और दुष्कर्म की घटनाएं होती थीं। राजद सरकार हत्यारों और दुष्कर्मियों को संरक्षण देती थी। महिलाओं को इसका खामियाजा भुगतना पड़ा... इसलिए उन्होंने ही राजद को सत्ता से बेदखल किया और अब यह क्षेत्रीय पार्टी महिलाओं से इसका बदला लेना चाहती है।

वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से सहकारी संघ को संबोधित करते प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी।

● मोदी ने स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं के लिए नई सहकारी पहल का किया उद्घाटन

भाजपा की महिला नेताओं ने अपशब्द पर विपक्ष पर बोला हमला

नई दिल्ली। भाजपा की कई महिला नेताओं ने बिहार में 'वोटर अधिकार यात्रा' के दौरान प्रधानमंत्री मोदी की दिवंगत मां के लिए अपशब्द कहे जाने को लेकर विपक्ष पर हमला बोला तथा दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने आरोप लगाया कि दो राजकुमारों राहुल गांधी और तेजस्वी यादव ने राजनीति को शर्मसार किया है। प्रधानमंत्री मोदी के पहली बार इस मुद्दे पर बोलने के बाद, भाजपा की महिला नेताओं ने विपक्षी दलों के नेताओं की आलोचना की।

भाजपा की राधिका खेड़ा ने दावा किया कि कांग्रेस ने ये दिखा दिया है कि उसमें भारतीय मूल्यों का अभाव है और आरोप लगाया कि पार्टी को विदेशी लोग चला रहे हैं। गांधी परिवार के तीनों सदस्य सोनिया, राहुल और प्रियंका गांधी इस मामले पर चुप्पी साधे हुए हैं। इससे बुरा कुछ नहीं हो सकता। भुवनेश्वर से भाजपा सांसद अपराजिता सारंगी ने कहा कि विपक्षी गठबंधन को करारा जवाब देंगे। केवल कांग्रेस ही इतनी निम्न स्तर की राजनीति कर सकती है। पश्चिम बंगाल की भाजपा नेता लॉकेट चटर्जी ने कहा कि विपक्षी नेता मोदी को अपशब्द कहने के बाद अब उनकी मां पर निशाना साध रहे हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी समेत विपक्षी नेता ने इस अपमानजनक टिप्पणी की आलोचना नहीं की।

दुष्कर्म के आरोपी आप विधायक गोलियों की बौछार की आड़ में पुलिस हिरासत से बच निकले

पटियाला। आप विधायक हरमीत सिंह पठानमाजरा को मंगलवार को उनके खिलाफ दुष्कर्म के मामले में गिरफ्तार किया गया था, लेकिन वह अपने समर्थकों की ओर से की गोलीबारी और पथराव की आड़ में पुलिस हिरासत से बच निकले। पुलिस ने यह जानकारी दी।

पठानमाजरा हरियाणा के करनाल जिले के डाबरी गांव में थे जहां पुलिस उन्हें गिरफ्तार करने गई थी। पटियाला अपराध जांच एजेंसी (सीआईए) के प्रभारी ने बताया कि हमने हरियाणा में पठानमाजरा के आवास पर छापा मारा। उन्हें गिरफ्तार कर लिया, लेकिन ग्रामीणों के समूह और शरारती तत्वों ने पुलिस टीम पर पथराव किया और गोलियां चलाईं। सनौर के विधायक पठानमाजरा गोलियों और पथराव की आड़ में बच निकले। विधायक के साथी बलविंदर सिंह को तीन हथियारों के साथ गिरफ्तार किया गया है।

उन्होंने कहा कि उसके पास से टोयोटा फॉर्च्यूनर जब्त की गई है। मामले में दर्ज प्राथमिकी के अनुसार पठानमाजरा पर दुष्कर्म, धोखाधड़ी व आपराधिक रूप से डराने धमकाने के आरोप दर्ज किए गए हैं।

उत्तर भारत में बाढ़ से 29 की मौत, स्कूल बंद

पठानकोट/शिमला/गुरुग्राम/दिल्ली, एजेंसी

उत्तर भारत में लगातार हो रही भारी बारिश ने हालात बिगाड़ दिए हैं। पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू-कश्मीर, हरियाणा और दिल्ली में सामान्य जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। पंजाब के 12 जिलों में बाढ़ की स्थिति बनी हुई है, जिससे 29 लोगों की मौत हो चुकी है। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में प्रशासन ने राहत और बचाव कार्य तेज कर दिए हैं। पंजाब में पठानकोट, फिरोजपुर और आसपास के जिलों के 1312 गांवों में 2.56 लाख लोग बाढ़ से प्रभावित हैं।

भारी बारिश से हरियाणा के भिवानी, हिसार, सिरसा, यमुनानगर, कुरुक्षेत्र और पंचकूला में कई स्कूलों को बंद रखना पड़ा। वहीं, गुरुग्राम में दफ्तरों को कर्मचारियों के लिए वर्क फ्रॉम होम का आदेश जारी किया गया है। बारिश और जलभराव से यातायात प्रभावित है। जगह-जगह सड़कें क्षतिग्रस्त होने से लोगों को परेशानियां हो रही हैं।

● बाढ़गस्त क्षेत्रों में प्रशासन ने राहत और बचाव कार्य किए तेज, पंजाब के 1312 गांवों में 2.56 लाख लोग प्रभावित

दिल्ली में यमुना नदी का जलस्तर खतरे के निशान के ऊपर है। इससे ट्रांस-यमुना क्षेत्र की कई कॉलोनियों में पानी भर गया। यमुना बाजार, मयूर विहार और आसपास की बस्तियों में प्रशासन ने लोगों को जरूरी सामान लेकर सुरक्षित और राहत शिविरों में जाने की अपील की है। एनडीआरएफ और स्थानीय प्रशासन की टीमें प्रभावित क्षेत्रों से लोगों को निकाल रही हैं।

उत्तराखंड और हिमाचल में हालात बेहद गंभीर

उत्तराखंड में हालात बेहद गंभीर हैं। राज्य के सभी 13 जिलों में स्कूल-कॉलेज बंद हैं। केदारनाथ मार्ग पर लैंडस्लाइड से दो लोगों की मौत हो गई और छह लोग घायल हुए। चार धाम यात्रा को 5 सितंबर तक स्थगित किया गया है। बारिश से पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन हो रहे हैं। प्रशासन ने लोगों को अनावश्यक यात्रा न करने की सलाह दी है।

हिमाचल प्रदेश में बारिश ने 76 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। सामान्य से 68% ज्यादा (256.8 मिमी) बारिश दर्ज की गई, जो 1949 के बाद सबसे अधिक है। शिमला में 24 घंटे में लैंडस्लाइड और मकान गिरने की घटनाओं में चार लोगों की मौत हो गई। मौसम विभाग ने हिमाचल के छह जिलों के लिए रेड अलर्ट जारी किया है और आठ जिलों में स्कूल-कॉलेज बंद हैं। हालात को देखते हुए राज्य सरकार ने राहत और बचाव कार्यों के लिए अतिरिक्त टीमें तैनात की हैं।

वर्ल्ड ब्रीफ

पूर्व चेक पीएम बाबिस पर चुनावी रैली में हमला

प्राग। चेक गणराज्य के पूर्व प्रधानमंत्री आंद्रेज बाबिस पर सोमवार को एक चुनावी रैली के दौरान एक व्यक्ति ने उनके सिर पर किसी वस्तु से हमला कर दिया। चेक समाचार एजेंसी ने बाबिस की पार्टी एएनओ के एक प्रवक्ता के हवाले से बताया कि 2017 से 2021 तक चेक गणराज्य के प्रधानमंत्री रहे बाबिस घटना के बाद जांच के लिए अस्पताल गए। उन्हें आई चोटों की गंभीरता के बारे में अभी पता नही चल पाया है। यह हमला पूर्वी शहर डोबरा में हुआ। चेक पुलिस ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि घटनास्थल पर मौजूद अधिकारियों ने हमले के तुरंत बाद उस व्यक्ति को हिरासत में ले लिया और मामले की जांच की जा रही है।

मनीला में घर में आग लगने से दो की मौत

मनीला। फिलीपींस की राजधानी मनीला में एक घर में आग लगने से दो लोगों की मौत हो गयी एवं छह साल की एक बच्ची गंभीर रूप से झुलस गई। अग्नि सुरक्षा विभाग ने मंगलवार को यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इस हादसे में तीन साल की बच्ची और उसकी नानी की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि आग सोमवार रात करीब 11:55 बजे मेट्रो मनीला के मालाबोन शहर में लगी जिससे पीड़ित घर की दूसरी मंजिल पर फंस गए। उन्होंने बताया कि छह साल की बच्ची के हाथ, पैर और बाजू बुरी तरह जल गए हैं। उसका इलाज एक अस्पताल में चल रहा है।

वियतनाम ने राष्ट्रीय दिवस वर्षगांठ मनाई

हनोई। वियतनाम समाजवादी गणराज्य ने अगस्त क्रांति और राष्ट्रीय दिवस की 80वीं वर्षगांठ मनाई। वियतनाम समाचार एजेंसी के अनुसार राजधानी हनोई के बा दीन्ह स्क्वायर पर एक भव्य सैन्य परेड के साथ मंगलवार को अगस्त क्रांति और राष्ट्रीय दिवस की 80वीं वर्षगांठ समारोह को आयोजित किया गया। समारोह का आरंभ 21 तोपों की सलामी के साथ हुआ, जिसके बाद सशस्त्र बलों और पुलिस की टुकड़ियों के साथ एक सैन्य परेड हुई। परेड में सैन्य वाहनों, तोपों और हथियारों को बड़े पैमाने पर प्रदर्शित किया गया।

इंडोनेशिया में लापता हुए हेलीकॉप्टर की तलाश

जकार्ता। इंडोनेशिया के बोर्नेओ द्वीप से एक भारतीय नागरिक समेत आठ यात्रियों को लेकर रवाना हुए लापता हेलीकॉप्टर की तलाश मंगलवार को भी जारी रही। इंडोनेशियाई समाचार एजेंसी अंतरा के अनुसार सोमवार को एक पायलट, एक इंजीनियर और छह यात्रियों को लेकर रवाना हुआ एस्टिंडो एयर बीके 117 डी3 हेलीकॉप्टर का दक्षिण कालीमंतन प्रांत के मेन्टेवे में मंडिन दमार जलप्रपात के पास संपर्क टूट गया। खबर में कहा गया है कि हेलीकॉप्टर में भारतीय नागरिक संथा कुमार भी सवार थे।

अश्लील डीपफेक सामग्री बनाने वाले एप्स पर पाबंदी लगाएगा ऑस्ट्रेलिया

कैनबरा, एजेंसी

- नाबालिगों को ये एप्स और टूल्स सबसे ज्यादा बना रहे हैं निशाना

आस्ट्रेलिया की सरकार ने मंगलवार की घोषणा की है कि वह अपमानजनक पहुंच वाली तकनीकों को प्रतिबंधित करने जा रही है, इनमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) टूल भी शामिल हैं, जो अश्लील चित्र बनाने की क्षमता रखते हैं।

संचार मंत्री एनिका वेल्स ने कहा कि सरकार प्रौद्योगिकी उद्योग के साथ मिलकर काम करेगी, ताकि छिपे हुए ऑनलाइन स्टॉकिंग टूल्स और एआई ऐप तक पहुंच को प्रतिबंधित किया जा सके। ये टूल्स और ऐप्स स्पष्ट रूप से अश्लील डीपफेक सामग्री बना सकते हैं। वेल्स ने एक बयान में कहा कि आस्ट्रेलिया में एआई और वैध ट्रैकिंग तकनीक के लिए एक जगह है, लेकिन ऐसे किसी भी ऐप्स और तकनीकों के लिए कोई जगह नहीं है, जिनका उपयोग केवल लोगों, विशेषकर हमारे बच्चों को हानि पहुंचाने वाले, अपमानित करने और नुकसान पहुंचाने के लिए किया जाता है। अपमानजनक तकनीकें व्यापक रूप से और आसानी से उपलब्ध हैं और अब अपूरणीय क्षति का कारण बन रही हैं। संघीय सरकार की ई-सुरक्षा आयुक्त जूली इनमैन ग्रांट ने जून में कहा था कि पिछले 18 महीनों में 18 वर्ष से कम आयु के लोगों की डिजिटली बनाई गई अंतरंग तस्वीरों की घटनाओं की संख्या सात सालों की तुलना में दोगुनी हो गयी है।

अमेरिका-भारत: पिक्चर अभी बाकी है

वैश्विक कूटनीति अपने चरम पर

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के ताजा फैसलों से पूरे विश्व की राजनीति में भीषण उथल-पुथल है। एशिया में भारत जैसे अमेरिका के पुराने और प्रमुख सहयोगी को दुश्मनी के लंबे इतिहास के बाद भी चीन से हाथ मिलाने को विवश होना पड़ा है, लेकिन वैश्विक राजनीति के जानकारों का मानना है कि ताजा घटनाक्रम चाहे जो आशंकाएं पैदा कर रहा हो लेकिन भारत और अमेरिका के संबंधों का अंत नहीं है। एक तरफ अमेरिका में ही ट्रंप का जिस तरह विरोध हो रहा है, वह उम्मीद पैदा करता है कि दोनों देशों के बीच आई यह दरार ज्यादा लंबी नहीं खिंचेगी। दूसरी ओर, सीमा विवादों और व्यापार असंतुलन के कारण चीन के साथ भारत के संबंध हमेशा अविश्वास भरे रहे हैं। ऐसे में चीन की विस्तारवाद और व्यापारिक वर्चस्व की नीतियां भविष्य में ज्यादा लंबे समय तक नए संबंधों को बहाल रखेंगी, ऐसी कम ही उम्मीद है।

भारत-अमेरिकी संबंधों की बुनियाद

- भारत और अमेरिका साझा लोकतांत्रिक मूल्यों और रणनीतिक हितों को साझा करते हैं, खासकर भारत-प्रशांत क्षेत्र में।
- अमेरिका सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार से भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा।
- दोनों देशों का रक्षा-सुरक्षा के क्षेत्रों में घनिष्ठ सहयोग, संयुक्त सैन्य अभ्यास और रक्षा प्रौद्योगिकियों का आदान-प्रदान शामिल।
- भारत अपने संबंधों को संतुलित करते हुए राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देने के साथ रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखता है।

चीन के साथ अविश्वास

- भारत और चीन के बीच कई दशकों से सीमा विवाद जारी हैं, जो संबंधों में तनाव का एक प्रमुख कारण हैं।
- चीन भारत का प्रमुख व्यापारिक भागीदार, लेकिन व्यापार में बड़ा असंतुलन, साथ में आर्थिक प्रतिस्पर्धा।
- चीन के क्षेत्रीय दावों और बढ़ता प्रभाव भारत की चिंताओं को बढ़ाता है, भारत को सावधान रहना पड़ता है।
- भारत अपनी विदेश नीति में लचीलापन बनाए रखता है, चीन के साथ अपने संबंधों को संतुलित करता है।

समानता और प्रतिस्पर्धा

- भारत-अमेरिका संबंध साझा मूल्यों व सहयोग पर केंद्रित, चीन से सीमा विवाद, आर्थिक प्रतिस्पर्धा रणनीतिक अविश्वास।
- अमेरिका से व्यापारिक संबंध संतुलित और पारस्परिक रूप से लाभप्रद हैं, चीन के साथ व्यापार असंतुलन बड़ी चुनौती।
- अमेरिका भारत को एक रक्षात्मक साझेदारी प्रदान करता है जो उसे चीन की चुनौतियों का सामना करने में मदद करती है।
- चीन के साथ अपनी रक्षा क्षमताओं को विकसित करने के साथ रणनीतिक संतुलन बनाए रखना भारत के लिए संभव नहीं लगता।

प्रमुख मिशन

- भारत-अमेरिका के बीच अंतरिक्ष सहयोग मजबूत हुआ है। इसमें नासा-इसरो साझेदारी के तहत मानव अंतरिक्ष उड़ान और ग्रह अन्वेषण शामिल हैं। निसार और गगनयान जैसे मिशन पर भी सहयोग।
- भारत-अमेरिका रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी के तहत दोनों देश स्वच्छ ऊर्जा के संक्रमण, नवीकरणीय ऊर्जा वित्तपोषण में सुधार और हरित बुनियादी ढांचे के निर्माण पर भी साथ मिलकर काम कर रहे हैं।

संभावनाएं इसलिए बरकरार...

- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में संतुलन बनाने और चीन के प्रभाव को रोकने के लिए भारत-अमेरिकी साझेदारी अपरिहार्य।
- अमेरिकी कंपनियों का भारत में भारी निवेश, अमेरिका की चीन प्लस वन रणनीति में भारत प्रमुख विकल्प।
- अमेरिका से उच्चस्तरीय रक्षा तकनीक और ड्रोन, जेट इंजन, रक्षा संचार प्रणाली जैसे उपकरणों की आपूर्ति।
- भारत-अमेरिका के बीच खुफिया साझेदारी और सैन्य सहयोग को मजबूत करने के लिए कई प्रमुख समझौते।
- यूक्रेन युद्ध के बाद रूस चीन पर निर्भर हो गया है, इससे भारत रूस पर पूरी तरह भरोसा नहीं कर सकता।
- भारतीय छात्रों और पेशेवरों के लिए सबसे बड़ा गंतव्य, 20 लाख से ज्यादा भारतीय मूल के लोग अमेरिका में।

नवारो ने अब मोदी, पुतिन, जिनपिंग के गहरे होते संबंधों को बताया चिंताजनक

नवारो का नया निशाना. चीन से पुराने टकराव को अनदेखा करने की भूल कर रहा है भारत

न्यूयॉर्क/वॉशिंगटन, एजेंसी

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के शीर्ष व्यापार सलाहकार पीटर नवारो ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच घनिष्ठता को 'चिंताजनक' बताते हुए कहा कि मोदी को रूस के बजाय अमेरिका, यूरोप और यूक्रेन के साथ खड़ा होना चाहिए।

नवारो की यह टिप्पणी सोमवार को तियानजिन में एससीओ शिखर सम्मेलन से इतर तीनों नेताओं द्वारा घनिष्ठता प्रदर्शित किए जाने के बाद आई है। मोदी, शी और पुतिन के बीच 'एकजुटता के प्रदर्शन' के बारे में पूछे जाने पर नवारो ने व्हाइट हाउस में पत्रकारों से कहा, यह चिंताजनक है, बहुत चिंताजनक है। इसका कोई मतलब नहीं है। टैरिफ पर ट्रंप की नीतियों के कारण वाशिंगटन और नई दिल्ली के बीच रिश्तों में गिरावट आने के बाद नवारो कुछ दिनों से लगातार भारत को निशाना बना रहे हैं। नवारो ने कहा, समझ नहीं आता कि मोदी के मन में क्या है, खासकर तब जब भारत पिछले कई दशकों से चीन के साथ कभी शीत युद्ध तो कभी सीधे संघर्ष की स्थिति में रहा है। उन्होंने कहा, भारत को हमारे साथ काम करना चाहिए। भारत को लगता है कि वो हमारे साथ जैसा चाहे वैसा कर सकता है लेकिन ट्रंप ऐसा होने नहीं देंगे।

तियानजिन में मोदी, पुतिन और जिनपिंग की मुलाकात से अमेरिका में है हलचल।

नवारो ने चलाए भारत पर तीर...

- भारत जनसंख्या के लिहाज से दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। इतिहास पर नजर डालें तो दशकों से भारत और चीन के बीच शीत युद्ध जारी रहा है। चीन ने पाकिस्तान की सेना को धन मुहैया कराया उसे परमाणु हथियार विकसित करने में मदद की है।
- चीन ने बार-बार भारत पर खासकर अक्साई चिन में हमला किया है। चीन ने भारत की जमीन पर कब्जा किया और अब भी उस पर कब्जा जमाए है। चीनी नौसेना हिंद महासागर के अंदर तक गश्त कर रही है और भारतीय संप्रभुता को चुनौती दे रही है।
- चीन के कारोबारी और तेल कंपनियां भारतीय व्यापारियों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं, यह संबंध बहुत ही नुकसानदायक है। चीन भारत का इस्तेमाल ऐसी जगह के तौर पर कर रहा है जहां से वह अपना सामान दूसरे देशों में भेज सके और शुल्क से बच सके।

दोनों देश ये मुद्दा सुलझा लेंगे : अमेरिकी वित्त मंत्री

भारत और अमेरिका के बीच टैरिफ को लेकर जारी तनातनी के बीच अमेरिकी वित्त मंत्री स्कॉट बेसेन्ट ने कहा है कि दो महान देश अंतत: इस मुद्दे को सुलझा लेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि भारत के मूल्य रूस के बजाय हमारे और चीन के अधिक करीब हैं। फॉक्स न्यूज़ को दिए साक्षात्कार में बेसेन्ट ने एससीओ को व्यापक तौर पर प्रदर्शनात्मक करार दिया। बेसेन्ट ने यह भी कहा कि ट्रंप प्रशासन रूस पर प्रतिबंधों पर विचार कर रहा है और सभी विकल्पों पर विचार किया जा रहा है।

पाकिस्तान के सेना प्रमुख मुनीर ने की शी जिनपिंग से मुलाकात

बीजिंग। पाकिस्तान के सेना प्रमुख फील्ड मार्शल असीम मुनीर ने प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ के संग मंगलवार को चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ पहली बैठक की। इस दौरान दोनों पक्षों ने द्विपक्षीय और क्षेत्रीय सहयोग पर व्यापक चर्चा की। मुनीर पाकिस्तानी प्रधानमंत्री के उस प्रतिनिधिमंडल का हिस्सा हैं, जिसने तियानजिन में एससीओ सम्मेलन में भाग लिया। वह जापानी आक्रमण के खिलाफ चीनी जन प्रतिरोध युद्ध की 80वीं वर्षगांठ के लिए बुधवार को यहां होने वाली चीनी सेना की परेड में शामिल होंगे। फील्ड मार्शल का पदभार संभालने के बाद जुलाई में अपनी पहली चीन यात्रा के दौरान मुनीर ने उपराष्ट्रपति हान झेंग से मुलाकात की, लेकिन शी जिनपिंग से नहीं, जैसा उनके पूर्ववर्ती जनरल कमर जावेद बाजवा ने किया था। इस यात्रा से पूर्व मुनीर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के साथ दोपहर के भोजन में शामिल हुए थे। मुनीर के शरीफ के साथ उस परेड को देखने जाने की संभावना है, जिसमें चीनी सेना हवाई, ज़मीनी, इलेक्ट्रॉनिक और मिसाइल प्रणालियों सहित सभी प्रकार के अपने सबसे आधुनिक हथियारों का प्रदर्शन करने की योजना बना रही है। ये हथियार प्रणालियां पाकिस्तानी सेना के लिए काफ़ी मायने रखती हैं, क्योंकि उसके 80 प्रतिशत से ज्यादा हथियार चीन से ही आते हैं।

लॉस एंजिलिस में नेशनल गार्ड की तैनाती के ट्रंप के आदेश को अदालत ने बताया अवैध

- आव्रजन प्रवर्तन के विरोध में प्रदर्शनों के दौरान की गई थी तैनाती, जज ने कहा- ये संघीय कानून का उल्लंघन

वाशिंगटन। अमेरिका के एक संघीय न्यायाधीश ने फैसला सुनाया है कि दक्षिणी कैलिफोर्निया में आव्रजन प्रवर्तन के विरोध में प्रदर्शनों के दौरान ट्रंप प्रशासन द्वारा नेशनल गार्ड सैनिकों का इस्तेमाल करना अवैध है। न्यायाधीश चार्ल्स ब्रेयर ने मंगलवार को फैसला सुनाया कि राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के प्रशासन ने आव्रजन कार्रवाई के दौरान संघीय एजेंटों के साथ सैनिकों को भेजकर संघीय कानून का उल्लंघन किया। हालांकि, वाशिंगटन की अदालत में पदस्थ न्यायाधीश ने वहां से सैनिकों को वापस बुलाने का निर्देश नहीं दिया। इस संबंध में दायर मुकदमे में कहा गया है कि गर्मियों के मौसम में लॉस एंजिल्स भेजे गए सैनिक उस कानून का उल्लंघन कर रहे हैं जो सेना द्वारा घरेलू कानूनों को लागू किये जाने पर रोक लगाता है।

शिकागो सबसे खतरनाक शहर और हत्याओं की वैश्विक राजधानी: ट्रंप

वाशिंगटन। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार को कहा कि हत्याओं के मामले में शिकागो विश्व का सबसे बड़ा आपराधिक शहर है। ट्रंप ने ट्रुथ सोशल पर लिखा, शिकागो हत्या की वैश्विक राजधानी है। उन्होंने एक अन्य पोस्ट में कहा कि सप्ताहांत में शिकागो में कम से कम 54 लोगों पर गोलीबारी की गई जिसमें आठ लोग मारे गए जो पिछले दो सप्ताहांतों की तरह है। ट्रंप ने कहा, शिकागो विश्व का अब तक का सबसे ख़राब एवं ख़तरनाक शहर है। इलिनोइस के गवर्नर जेबी प्रित्जकर को मदद की सख्त आवश्यकता है लेकिन उन्हें अभी तक इसका अंदाज़ा नहीं है। मैं अपराध की समस्या का जल्द ही समाधान करूंगा, ठीक वैसे ही जैसे मैंने वाशिंगटन डीसी में किया था। शिकागो जल्द ही फिर से सुरक्षित होगा। इससे पहले दिन में व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने कहा था कि ट्रंप आज पेंटागन से संबंधित एक रोमांचक बयान देंगे। सोमवार को सीएनएन ने कहा था कि शिकागो में संघीय एजेंटों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि होने की उम्मीद है क्योंकि ट्रंप प्रशासन यहां आव्रजन पर कार्रवाई शुरू करने वाला है।

सिंगापुर के प्रधानमंत्री लॉरेंस वोंग आज से भारत की तीन दिवसीय यात्रा पर

सिंगापुर। सिंगापुर के प्रधानमंत्री लॉरेंस वोंग मंगलवार से भारत की तीन दिवसीय आधिकारिक यात्रा शुरू करेंगे, जिसका उद्देश्य द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने की प्रतिबद्धता को दोहराना है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के निमंत्रण पर वोंग की यह यात्रा दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 60वीं वर्षगांठ के मौके पर हो रही है। उनके कार्यालय ने बताया कि यह यात्रा संबंधों को और प्रगाढ़ बनाने के लिए सिंगापुर और भारत की परस्पर प्रतिबद्धता को भी दोहराती है। वोंग नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात करेंगे। मोदी सिंगापुर के प्रधानमंत्री के सम्मान में एक भोज का भी आयोजन करेंगे। वोंग स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री जेपी नड्डा, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, विदेश मंत्री जयशंकर और एनएसए अजीत डोभाल से भी मुलाकात करेंगे।

नेपाल में दो बार भूकंप के झटके

काठमांडू। नेपाल में कम तीव्रता वाले भूकंप के दो बार झटके महसूस किए गए आए, लेकिन इसमें किसी तरह के नुकसान की कोई खबर नहीं है। राष्ट्रीय भूकंप निगरानी एवं अनुसंधान केंद्र के अनुसार, गोरखा जिले में सुबह 6.15 बजे चार तीव्रता का भूकंप आया था। भूकंप का केंद्र काठमांडू से 150 किमी पश्चिम में गोरखा के हंसपुर में स्थित था। नेपाल में अपराह्न 3.15 बजे एक और भूकंप आया जिसकी तीव्रता 4.1 मापी गई, जिसका केंद्र दोलखा जिले के लापिलांग में स्थित था।

इजराइल ने गाजा पर हमले तेज करने को शुरू की अतिरिक्त सैनिकों की मोर्चाबंदी

दीर अल-बलाह, एजेंसी

- इजराइल की सेना उत्तरी और मध्य गाजा में अब ज्यादा स्थानों को बना रही है निशाना

इजराइल ने गाजा में हमलों का दायरा बढ़ाने की अपनी योजना के तहत मंगलवार को हजारों आरक्षित सैनिकों को लामबंद और मोर्चाबंद करना शुरू कर दिया। इस योजना की इजराइल और विदेश में निंदा की जा रही है।

इजराइल ने पिछले महीने आरक्षित सैनिकों को लामबंद करने की घोषणा की थी। सैनिकों को ऐसे समय में लामबंद किया जा रहा है जब थल और वायुसेना उत्तरी और मध्य गाजा में और अधिक स्थानों को निशाना बना रही हैं। इनमें पश्चिमी गाजा शहर से सटे दो स्थान जैतून और शिजइया शामिल हैं। हमास के खिलाफ 23 महीने से जारी युद्ध में इजराइल इन दोनों स्थानों पर कई बार आक्रमण कर चुका है। इजराइली सेना ने पिछले महीने कहा था कि आरक्षित सैनिकों को बुलाने की प्रक्रिया चरणबद्ध होगी और कुल 60 हजार सैनिकों को बुलाया जाएगा। इसके अलावा पहले से तैनात ऐसे 20 हजार सैनिकों की सेवा अवधि भी बढ़ाई जाएगी। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने मंगलवार को बताया कि अगस्त में भुखमरी के कारण कुल 186 लोगों की मौत हुई है। यह किसी एक महीने में भुखमरी से जान गंवाने वालों की सबसे अधिक तादाद है। मंत्रालय के अनुसार युद्ध में कुल 63,557 फलस्तीनियों की मौत हो चुकी है जबकि 160,660 लोग घायल हुए हैं।

करतारपुर गलियारा मरम्मत के कारण श्रद्धालुओं के लिए बंद

लाहौर। पाकिस्तान के पंजाब प्रांत में स्थित पवित्र सिख तीर्थस्थल पर मरम्मत कार्य के कारण करतारपुर गलियारा परिसर, श्रद्धालुओं के लिए बंद है। हाल में यह परिसर बाढ़ में जलमग्न हो गया था।

पाकिस्तानी सेना और नागरिक प्रशासन ने पिछले सप्ताह बाढ़ से प्रभावित करतारपुर स्थित गुरुद्वारा दरबार साहिब में मरम्मत कार्य जारी रखा है। पिछले सप्ताह, पंजाब सरकार ने दावा किया था कि करतारपुर साहिब गलियारा और गुरुद्वारा दरबार साहिब से बाढ़ का पानी हट गया है और इस सप्ताह की शुरुआत में इसे खोल दिया जाएगा। सेना प्रमुख असीम मुनीर ने दरबार साहिब का दौरा किया था। पंजाब की वरिष्ठ मंत्री मरयम औरंगजेब ने शुक्रवार को एक बयान में दावा किया था, पंजाब की मुख्यमंत्री मरयम नवाज के निर्देश पर करतारपुर साहिब में मरम्मत का काम कराया गया है।

लगातार रूसी सेना के हमलों के बीच सुरक्षा के लिए कीव (यूक्रेन) के एक मेट्रो स्टेशन में बैठे लोग।

रूसी सेंटर ग्रुप के हमले में मारे गए 385 यूक्रेनी सैनिक

दहशतजदा लोग बंकरों में

मॉस्को। रूसी रक्षा मंत्रालय ने मंगलवार को कहा कि रूसी सुरक्षा बलों के 'सेंटर' समूह के हमले में पिछले 24 घंटे में 385 यूक्रेनी सैनिक मारे गये हैं। मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि इस हमले में यूक्रेनी सशस्त्र बलों को 385 सैनिकों, पांच बख्तरबंद लड़ाकू वाहनों, चार मोटर वाहनों और तीन तोपों का नुकसान हुआ है। मंत्रालय ने यह भी कहा कि रूस के जैपद (पश्चिम) ग्रुप के सैनिकों ने 240 से अधिक यूक्रेनी सैनिकों को मार गिराया है तथा वोस्तोक (पूर्व) ग्रुप के साथ लड़ाई में विरोधी पक्ष के 225 सैनिक मारे गये। बयान में कहा गया कि इसके साथ ही रूस के युग (दक्षिण) ग्रुप के सैनिकों ने पिछले दिनों 205 से अधिक यूक्रेनी सैनिकों को मार गिराया।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति: 3 सितंबर, बुधवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास-भाद्रपद, पक्ष-शुक्ल पक्ष, एकादशी 4 सितंबर 04.21 तक तत्पश्चात द्वादशी।

आज का पंचांग

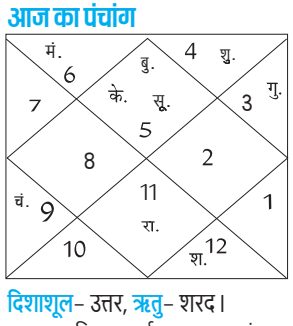

दिशाशूल- उत्तर, ऋतु- शरद।
चन्द्रबल-मिथुन, कर्क, तुला, धनु, कुंभ, मीन।
ताराबल-अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद।
नक्षत्र-पूर्वाषाढ़ा 23.08 तक तत्पश्चात उत्तराषाढ़ा।

मेष — आज व्यवसाय में आप पार्टनरशिप को अत्यधिक महत्व देंगे। लेन-देन के मामले में आप अत्यंत भाग्यशाली रहेंगे। अध्यात्मिक चर्चाओं में भाग ले सकते हैं। अधूरे पड़े कार्यों को पूरा करने का दबाव रहेगा। घर की व्यवस्था उचित बनी रहेगी।

वृष — आज का दिन काफी उतार-चढ़ाव वाला हो सकता है। आपको अपने स्वास्थ्य को लेकर अत्यधिक सचेत रहने की आवश्यकता है। प्रबंधन कार्यों से जुड़े लोगों को अपनी कमियों पर विशेष तौर पर सुधार करना चाहिए।

मिथुन — आज विदेश में व्यापार कर रहे लोगों के लिए दिन बहुत ही अच्छा है। पूर्व में की गई मेहनत का सार्थक परिणाम प्राप्त होगा। दिखावे से आपको दूर रहना चाहिए। तकनीकी क्षेत्र से जुड़े लोगों को अच्छे अवसर मिल सकते हैं।

कर्क — आज दिनचर्या व्यवस्थित और अनुशासित रखें। स्वास्थ्य समस्याओं से छुटकारा मिलेगा। प्रतिस्पर्धा के वातावरण में आप विरोधियों पर भारी पड़ेंगे। किसी को चुभने वाले वक्तव्य न दें। आय के साधन बढ़ सकते हैं।

सिंह — आज बातचीत करते हुए शब्द चयन सही प्रकार से करें। आपको आपके किसी पुराने निर्णय को लेकर काफी परेशानी उठानी पड़ सकती है। उच्च शिक्षा में अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस दबाव के कारण घर में कलह भी हो सकती है।

कन्या — आज दोपहर के बाद आपका मन कुछ अप्रसन्न हो सकता है। जल्दबाजी में किए गए कार्यों के कारण आपको परेशानी होगी। रक्तचाप और शुगर के रोगियों को अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिये। इलेक्ट्रानिक उपकरणों में खराबी आ सकती है।

तुला — आज उच्चाधिकारियों के साथ अपने संबंध अच्छे रखें। कारोबार में सुधार कर सकते हैं। विद्यार्थियों को प्रतियोगी परीक्षाओं में आशा के अनुरूप परिणाम मिलेंगे। आपका स्वास्थ्य काफी अच्छा रहेगा। अपनी प्रतिभा को लेकर अति-आत्मविश्वास में रहेंगे।

वृश्चिक — आज स्वभाव के कारण आपसे परिजन नाराज हो सकते हैं। आंखों में जलन और इंफेक्शन की शिकायत हो सकती है। अपनी बातों को दूसरों पर थोपने से बचें। जीवनसाथी के साथ मिलकर घर के कार्यों में हाथ बंटा सकते हैं।

धनु — आज नए व्यवसाय की शुरुआत करना चाह रहे हैं तो सफलता मिलेगी। धर्म-कर्म के प्रति आपकी आस्था बढ़ेगी। घर में भाई-बहनों के साथ महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा होगी। अविवाहित लोगों को विवाह के रिश्ते मिल सकते हैं।

मकर — आज किसी को धन उधार में न दें अन्यथा आपको नुकसान हो सकता है। महिलाओं को घर में बहुत अधिक काम हो सकता है। नकारात्मक विचारों से बचने का प्रयास करें। प्रेम संबंधों को लेकर विचलित न हों। प्रेमीजन की भावनाओं का सम्मान करें।

कुंभ — आज प्रेम-संबंधों में भावनात्मक निकटता बढ़ेगी। वैवाहिक संबंध मधुर रहेंगे। उधार दिया हुआ धन वापस मिल सकता है। आपकी छवि में काफी सुधार आएगा। संतान की शिक्षा पर आप अत्यधिक ध्यान देंगे। नए विचारों को अपनाने में आप संकोच नहीं करेंगे।

मीन — आज किसी पुराने लीगल मामले का निपटारा हो सकता है। विदेश से जॉब के ऑफर मिलने की संभावना बन रही है। करियर से जुड़े मामलों के लिए दिन बहुत शुभ रहने वाला है। भविष्य की योजनाओं को आप समय देंगे।

सुडोकू-88

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

	7				4	2		
	8				5		1	
						6		9
	5			3	2	1		
6								8
		1	7	9			2	
2							6	
	9		1				7	
	6	7					4	

सुडोकू - 87 का हल

9	3	2	6	7	8	1	5	4
6	7	4	5	3	1	9	8	2
1	8	5	4	9	2	3	7	6
8	5	7	3	2	4	6	1	9
2	9	6	1	5	7	4	3	8
4	1	3	9	8	6	5	2	7
5	2	1	8	6	9	7	4	3
7	4	9	2	1	3	8	6	5
3	6	8	7	4	5	2	9	1

मैं अपने खिलाड़ियों को एशिया कप में भारत के खिलाफ अपनाई जाने वाली योजना को अभी बता दूं तो मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि 19 सितंबर तक वे इसे जरूर भूल जाएंगे। हमारी टीम मजबूत टीमों के खिलाफ चौंकाने वाला प्रदर्शन करेगी।
-सुलक्षण कुलकर्णी, ओमान के डिप्टी कोच

स्टेडियम

कानपुर नगर, बुधवार, 3 सितंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

मुक्केबाज लवलीना बोरगोहेन।

लवलीना भारतीय टीम की अगुवाई करेंगी

बेंगलुरु : टोक्यो 2020 की कांस्य पदक विजेता लवलीना बोरगोहेन और निखत जरीन 4 सितंबर से इंग्लैंड में शुरू होने वाली विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप 2025 में 20 सदस्यीय भारतीय दल का नेतृत्व करेंगी। इस खेल की नवगठित वैश्विक शासी संस्था, विश्व मुक्केबाजी द्वारा आयोजित इस चैंपियनशिप का पहला संस्करण एम एंड एस बैंक एरिना में होगा और 14 सितंबर को समाप्त होगा। 65 से अधिक देशों के 550 से अधिक मुक्केबाज, जिनमें 17 पेरिस 2024 ओलंपिक पदक विजेता शामिल हैं, 20 भार वर्गों (10 पुरुष और 10 महिला) में प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार हैं।

दबंग दिल्ली ने बेंगलुरु बुल्स को हराया

विशाखापट्टनम : आशु मलिक के शानदार प्रदर्शन की बदौलत दबंग दिल्ली केसी ने मंगलवार को यहां प्रो कबड्डी लीग में बेंगलुरु बुल्स पर 41-34 से जीत दर्ज की। बुल्स ने अंतिम समय में वापसी की कोशिश की लेकिन आशु (15 अंक) और नीरज नरवाल (सात अंक) के शानदार प्रदर्शन तथा सुरजीत सिंह, फजल अत्राचली और सौरभ नांदल के दमदार डिफेंस ने दिल्ली की जीत पक्की कर दी। अलीरेजा मिर्जायन का सुपर 10 बुल्स के लिए मैच में सकारात्मक पक्ष रहा। दबंग दिल्ली की टीम मध्यांतर तक 21-11 से आगे थी।

आर्यमन ने संभाली एमपीसीए की कमान

इंदौर : केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के बेटे महान आर्यमन सिंधिया ने मंगलवार को मध्यप्रदेश क्रिकेट संघ (एमपीसीए) के अध्यक्ष का पदभार संभाल लिया और कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के युवा खिलाड़ियों और महिला खिलाड़ियों को बढ़ावा देना उनकी प्राथमिकताओं में शुमार है। एमपीसीए चुनावों में अध्यक्ष सहित कार्यकारिणी के सभी पदों पर निर्विरोध निर्वाचन हुआ है और पूरी कार्यकारिणी सर्वसम्मति से चुनी गई है।

विलियम्स व टेलर की जिम्बाब्वे टीम में वापसी

हरारे : जिम्बाब्वे ने श्रीलंका के खिलाफ आगामी तीन मैचों की टी20 अंतर्राष्ट्रीय (टी20) सीरीज के लिए 16 सदस्यीय टीम की घोषणा की है, जिसमें अनुभवी खिलाड़ी सीन विलियम्स और ब्रेंडन टेलर की वापसी मुख्य आकर्षण है। अनुभवी ऑलराउंडर विलियम्स मई 2024 में बांग्लादेश के खिलाफ आखिरी बार खेलने के बाद सबसे छोटे प्रारूप में वापसी कर रहे हैं। उनके साथ अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज टेलर भी शामिल हैं, जिन्होंने हाल ही में आईसीसी प्रतिबंध के बाद टेस्ट और वनडे प्रारूप में वापसी की है।

न्यूजीलैंड ने मैकमिलन को कोच बनाया

वेलिंगटन : आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप जीतने की कोशिश में न्यूजीलैंड ने अपने कोचिंग कौशल को मजबूत किया है और क्रेग मैकमिलन को पूर्णकालिक आधार पर कोच नियुक्त किया है। मैकमिलन पिछले साल अंशकालिक अनुबंध पर टीम में शामिल हुए थे और उन्होंने व्हाइट फर्न्स को यूएई में महिला टी-20 विश्व कप में सफलता दिलाने में मदद की थी।

कन्नौज की वंशिका ने फहराया परचम

कन्नौज। राजस्थान में चल रही 48वीं यूपी स्टेट शूटिंग चैंपियनशिप प्रतियोगिता 2025 में जनपद की 12 वर्षीय बेटी वंशिका पाल ने राष्ट्रीय स्तर की प्री- प्रतियोगिता में स्थान पक्का कर लिया है। पहले ही राउंड में प्रतिभागी ने 263 का स्कोर बना लिया। ब्लॉक सदर क्षेत्र के गांव शरीफापुर निवासी अनिल पाल की पुत्री वंशिका पाल हाल निवासी शहर के डाक बंगला रोड कन्नौज की हैं। वंशिका पाल दिल्ली पब्लिक स्कूल सरायमीरा में कक्षा 7 की छात्रा हैं।

मिचेल स्टार्क ने टी-20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कहा

ब्रिस्बेन, एजेंसी

- **तेज गति, कमाल की स्विंग, घातक यॉर्कर और खतरनाक बाउंसरों के लिए मशहूर हैं स्टार्क**

ऑस्ट्रेलिया के अनुभवी तेज गेंदबाज मिचेल स्टार्क ने टेस्ट और वनडे प्रारूप में अपने कैरियर को विस्तार देने के लिए टी-20 अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया।

ऑस्ट्रेलिया के प्रमुख तेज गेंदबाजी तिकड़ी (पैट कमिंस और जोश हेजलवुड के साथ) के अहम सदस्य स्टार्क ने आगामी एशेज, भारत में होने वाली टेस्ट सीरीज और 2027 में होने वाले वनडे विश्व कप और आईपीएल जैसे बड़े आयोजनों की तैयारी को ध्यान में रखते हुए खेल के सबसे छोटे अंतर्राष्ट्रीय प्रारूप से संन्यास की घोषणा की। अपनी तेज गति, कमाल की स्विंग, घातक यॉर्कर और खतरनाक बाउंसरों के लिए मशहूर स्टार्क ने 65 टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में 79 विकेट लिए है। वह एडम जाम्पा (103 मैचों में 130 विकेट) के बाद इस प्रारूप में ऑस्ट्रेलिया के दूसरे सबसे सफल गेंदबाज है।

पैंतीस वर्ष के स्टार्क ने 65 टी20 मैचों में 79 विकेट लिए हैं। उन्होंने कहा कि टेस्ट क्रिकेट उनकी प्राथमिकता है और अगले दो साल के व्यस्त अंतर्राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए उन्हें तैयार रहना है। न्यूजीलैंड के खिलाफ एक अक्टूबर से शुरू हो रही तीन मैचों की श्रृंखला के लिए मंगलवार को घोषित ऑस्ट्रेलियाई टी20 टीम में स्टार्क और टेस्ट कप्तान पैट कमिंस के नाम नहीं हैं। उन्होंने कहा मैने ऑस्ट्रेलिया के लिए हर टी20 मैच के हर मिनट का मजा लिया है। खासकर 2021 विश्व कप क्योंकि जीत के साथ हमने पूरे सफर का आनंद लिया। बायें हाथ के इस गेंदबाज ने कहा भारत में होने वाली टेस्ट श्रृंखला, एशेज और 2027 विश्व एकदिवसीय विश्व कप के लिए खुद को तरोताजा और फिट रखने के लिए मुझे लगता है कि यह सही फैसला है। स्टार्क ने कहा मेरे संन्यास से हमारी गेंदबाजी समूह को टी20 विश्व कप की तैयारी के लिए भी समय मिल जाएगा। टी20 विश्व कप का आयोजन अगले साल भारत और श्रीलंका में होगा। आधुनिक दौर के सबसे बेहतरीन गेंदबाजों में एक स्टार्क की आईपीएल में हमेशा से काफी मांग रही है।

कोलकाता नाइट राइडर्स ने आईपीएल 2024 में उन्हें 24.75 करोड़ रुपये की रिकॉर्ड कीमत पर खरीदा गया था। उन्होंने केकेआर की खिताबी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दबाव की परिस्थितियों में अकेले दम पर मैच का रुख बदलने की उनकी क्षमता को देखते हुए दिल्ली कैपिटल्स ने उन्हें आईपीएल 2025 के लिए 11.75 करोड़ रुपये में शामिल किया। स्टार्क उन कुछ विदेशी खिलाड़ियों में से एक थे जिन्होंने भारत-पाकिस्तान सीमा विवाद के बाद भारत लौटने का फैसला नहीं किया था। भारत और पाकिस्तान में सैन्य टकराव के कारण आईपीएल को एक सप्ताह के लिए स्थगित करना पड़ा था। स्टार्क की घोषणा मंगलवार सुबह हुई जब ऑस्ट्रेलिया ने टी-20 विश्व कप की तैयारी के लिए अक्टूबर में न्यूजीलैंड में होने वाली श्रृंखला के लिए टीम की घोषणा की।

65
टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों में 79 विकेट लिए है इस सफल गेंदबाज ने।

मिचेल स्टार्क।

भारतीय हॉकी टीम को सुपर 4 में बेहतर प्रदर्शन की जरूरत

हॉकी एशिया कप में कोरिया के खिलाफ आज होगा मुकाबला

राजगीर (बिहार), एजेंसी

पूल चरण में अपराजेय रहने के बाद आत्मविश्वास से ओतप्रोत भारतीय हॉकी टीम को एशिया कप सुपर 4 चरण के मुकाबले में बुधवार को पांच बार की चैंपियन और पिछली विजेता कोरिया के खिलाफ अपने खेल में सुधार करना होगा। भारतीय टीम पूल ए में सारे मैच जीतकर सुपर 4 में पहुंची है। उसने चीन को 4-3 से, जापान को 3-2 और कजाखस्तान को 15-0 से हराया।

जीत के बावजूद भारत का प्रदर्शन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रहा है। चीन और जापान के खिलाफ औसत प्रदर्शन के बाद उसने टूर्नामेंट में दूसरी ही बार खेल रही कजाखस्तान टीम पर बड़े अंतर से जीत दर्ज की। दूसरी ओर कोरियाई टीम भी अपने सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में नहीं है । वह पूल बी में मलेशिया के बाद दूसरे स्थान पर रही और मलेशिया ने उसे 4-1 से हरा दिया था। तेज गर्मी और भारी उमस के बीच टीमें संघर्ष करती नजर आई लेकिन सुपर 4 के मैच शाम को होंगे जिससे प्रदर्शन बेहतर रहने की उम्मीद है।

भारतीय टीम ने सोमवार को हर क्षेत्र में बेहतर खेल दिखाया चाहे गोलकीपिंग हो, डिफेंस , मिडफील्ड या आक्रमण। फॉरवर्ड पंक्ति का प्रदर्शन तारीफ के काबिल रहा जिसमें अभिषेक ने चार गोल दागे । सुखजीत सिंह ने भी हैट्रिक लगाई और फ्लैंक से उनकी ड्रिबलिंग और 'डी' के भीतर शांतचित्त रवैया जबर्दस्त था। भारत की फॉरवर्ड पंक्ति में एकमात्र कमजोर कड़ी दिलप्रीत सिंह रहे जिन्होंने गोल तो किया लेकिन एक आसान मौका गंवाया भी । अभी तक टूर्नामेंट में वह जूझते ही नजर आये हैं और अब उन्हें प्रदर्शन में सुधार करना होगा। भारत के कोच क्रेग फुल्टोन ने कहा सुपर 4 चरण से पहले स्ट्राइकर्स का लय में रहना जरूरी है। मनप्रीत सिंह की अगुवाई में मिडफील्ड का प्रदर्शन भी अच्छा रहा है और कप्तान हरमनप्रीत सिंह ने डिफेंस की कमान बखूबी संभाल रखी है। पहले दो मैचों में औसत प्रदर्शन के बाद गोलकीपर कृशन बहादुर पाठक के प्रदर्शन में भी सुधार हुआ है।

पूल चरण में शानदार प्रदर्शन कर अपराजेय रही भारतीय टीम। एजेंसी

असल टूर्नामेंट अब शुरू हुआ है : कोच फुल्टोन

- कोच फुल्टोन ने हालांकि कहा कि असल टूर्नामेंट अब शुरू हुआ है जिसमें पिछले नतीजे मायने नहीं रखते। हमारी टीम आत्मविश्वास से भरी है। खिलाड़ी लय में है और हम यही चाहते हैं। कजाखस्तान के खिलाफ हरमनप्रीत, जुगराज सिंह , संजय और अमित रोहिदास चारों ने पेनल्टी कॉर्नर तब्दील किए। जुगराज ने हैट्रिक लगाई। सुपर 4 चरण हालांकि सभी टीमों (भारत, कोरिया, चीन और मलेशिया) के लिए नई शुरूआत होगी। सभी टीमें एक दूसरे से खेलेंगी और शीर्ष दो रविवार को फाइनल में जगह बनाएंगी।

समय : शाम 7:30 से

महिला विश्व कप की पुरस्कार राशि देखकर दिग्गज खिलाड़ी हतप्रभ

दुबई : अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) ने आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप 2025 के लिए पुरस्कार राशि में भारी वृद्धि की घोषणा की है। यह विश्व कप इस महीने के अंत में भारत और श्रीलंका में आयोजित होने वाला है। इस प्रतिष्ठित आयोजन की कुल पुरस्कार राशि बढ़कर 13.88 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई है, जो 2022 में न्यूजीलैंड में आयोजित पिछले संस्करण की तुलना में 297 प्रतिशत की भारी वृद्धि है।

इसके साथ ही, कुल पुरस्कार राशि पुरुषों के विश्व कप से भी अधिक हो गई है, जिसकी पुरस्कार राशि 2023 में 10 मिलियन अमेरिकी डॉलर थी। पूर्व भारतीय दिग्गज झूलन गोस्वामी आईसीसी हिंदी इंस्टाग्राम चैनल पर अपनी पहली उपस्थिति के दौरान द आईसीसी रिव्यू पर इस घोषणा से बेहद खुश थीं, जहां वह टूर्नामेंट से पहले नियमित रूप से दिखाई देंगी। गोस्वामी ने इस ऐतिहासिक घोषणा पर कहा मेरे रोंगटे खड़े हो रहे हैं। बढ़ी हुई पुरस्कार राशि] बहुत अच्छी बात है। मैं अपनी तरफ़ से आईसीसी का शुक्रिया अदा करना चाहूंगी। जिस तरह से उन्होंने इस बारे में सोचा है, मुझे लगता है कि इससे महिला क्रिकेट को जरूर काफी बढ़ावा मिलेगा। और नवोदित महिला क्रिकेटरों के माता-पिता के लिए भी।

बीसीसीआई ने टाइटल के लिए बोलियां आमंत्रित कीं

नई दिल्ली, एजेंसी

- **ड्रीम 11 के हाथ खींचने के बाद नई कंपनी की तलाश**
- **भारतीय टीम एशिया कप में बिना मुख्य प्रायोजक के खेलेगी**

फैंटेसी स्पोर्ट्स की दिग्गज कंपनी ड्रीम 11 के हाथ खींचने के बाद बीसीसीआई ने मंगलवार को भारतीय क्रिकेट टीम के टाइटल प्रायोजन अधिकारों के लिए बोलियां आमंत्रित की जिसमें वास्तविक धन गेमिंग और क्रिप्टोकरेंसी में काम करने वाली कंपनियों पर रोक लगाई गई है क्योंकि सरकार ने ऐसी कंपनियों पर प्रतिबंध लगा दिया है।

भारतीय टीम नौ सितंबर से यूएई में शुरू होने वाले एशिया कप में बिना मुख्य प्रायोजक के खेलेगी क्योंकि बोर्ड ने बोली जमा करने की अंतिम तिथि 16 सितंबर तय की है। ड्रीम 11 ने हाल ही में 'ऑनलाइन गेमिंग अधिनियम 2025 के प्रचार और विनियमन' के कारण अपने वास्तविक धन वाले गेम बंद कर दिए हैं। अधिनियम में कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति ऑनलाइन मनी गेमिंग सेवाओं की पेशकश, सहायता, उकसाना, प्रेरित, लिप्त या संलग्न नहीं होगा और न ही किसी ऐसे विज्ञापन में शामिल होगा जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किसी भी व्यक्ति को कोई भी ऑनलाइन मनी गेम खेलने के लिए प्रोत्साहित करता हो।

ड्रीम 11 और माय 11 सर्कल के साथ बीसीसीआई का भारतीय क्रिकेट टीम और इंडियन प्रीमियर लीग के लिए 1000 करोड़ रूपये के करीब टाइटल प्रायोजन करार था। बीसीसीआई की एक विज्ञप्ति में कहा गया बोली लगाने वाला, जिसमें उसके समूह की कोई भी कंपनी शामिल है उसे भारत में या दुनिया में कहीं भी ऑनलाइन मनी गेमिंग, सट्टेबाजी या जुआ या इसी तरह की सेवाओं में संलग्न नहीं होना चाहिए, भारत में किसी भी व्यक्ति को कोई ऑनलाइन मनी गेमिंग, सट्टेबाजी या जुआ या इसी तरह की सेवाएं प्रदान नहीं करनी चाहिए और भारत में सट्टेबाजी या जुए में संलग्न किसी भी व्यक्ति में कोई निवेश या स्वामित्व हित नहीं होना चाहिए।

आखिरी तारीख है 12 सितंबर

- आईईओआई खरीदने की आखिरी तारीख 12 सितंबर है और बोली के दस्तावेज जमा करने की आखिरी तारीख 16 सितंबर है। इसमें आगे कहा गया बोली लगाने वाला या उसके समूह की कोई भी कंपनी किसी भी तरह की ऐसी गतिविधि या व्यवसाय में शामिल नहीं होनी चाहिए जिसकी आनलाइन गेमिंग अधिनियम 2025 के तहत अनुमति नहीं है। इसके अलावा तंबाकू, शराब और ऐसी कोई भी चीज जो सार्वजनिक नैतिकता को ठेस पहुंचाती हो, इसके पात्र नहीं हैं।

जैनिक सिनर एकतरफा जीत के साथ क्वार्टर फाइनल में

न्यूयॉर्क, एजेंसी

इस प्रमुख सीजन में जैनिक सिनर ने कमजोरी के संकेत कम ही दिखाए हैं। यूएस ओपन के तीसरे दौर के मैच के दौरान, एक पल के लिए, इतालवी खिलाड़ी फ्री-स्विंगिंग डेनिस शापोवालोव के सामने जोखिम में दिखे, जिन्होंने पहला सेट जीतकर तीसरे सेट में 3-0 की बढ़त बना ली थी। उस मुकाबले में संघर्ष करने के बाद, एटीपी रैंकिंग में नंबर 1 खिलाड़ी ने सोमवार को शानदार वापसी की और शानदार प्रदर्शन करते हुए 23वीं वरीयता प्राप्त अलेक्जेंडर बुब्लिक को हराकर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। शानदार सिनर ने कजाकिस्तान के खिलाड़ी को 6-1, 6-1, 6-1 से हराकर अपने ख़िताब की रक्षा की तरफ मजबूती से कदम बढ़ाया। सिनर ने कहा कुल मिलाकर मैं बहुत-बहुत खुश हूँ। इस साल पहली बार मैं यहां नाइट मैच खेल पा रहा हूँ और इससे बहुत बड़ा फर्क़ पड़ता है। मैं सभी का आने और उत्साहवर्धन करने के लिए शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ। यह हम खिलाड़ियों के लिए एक बहुत ही ख़ास मौक़ा है, इसलिए आप सबका बहुत-बहुत शुक्रिया।

गॉफ को हराकर ओसाका अंतिम आठ में

- **न्यूयॉर्क :** नाओमी ओसाका ने सोमवार को कोको गॉफ को 6-3, 6-2 से हराकर यूएस ओपन के महिला एकल क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया, जिससे घरेलू दर्शकों के सामने अमेरिकी खिलाड़ी का सफर खराब हो गया। ओसाका ने कहा मैं बस यहां आकर खेलने का मौका चाहती थी। यह दुनिया का मेरा पसंदीदा कोर्ट है, और यहां वापस आना मेरे लिए बहुत मायने रखता है। पोलैंड की दूसरी वरीयता प्राप्त इगा स्वियाटेक ने एकातेरिना एलेक्ज़ेंड्रोवा को 6-3, 6-1 से हराकर क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया। महिला युगल में एलेक्ज़ेंड्रोवा और चीन की झांग शुआई को अमेरिका की वीनस विलियम्स और कनाडा की लेयला फर्नांडीज की जोड़ी ने 6-3, 6-4 से हरा दिया।

इटली के जैनिक सिनर चौथे दौर में अलेक्जेंडर बुब्लिक को शॉट लौटाते हुए। एजेंसी

पता नहीं रूट ने गुस्से में प्रतिक्रिया क्यों दी : प्रसिद्ध

नई दिल्ली, एजेंसी

इंग्लैंड के खिलाफ हालिया टेस्ट सीरीज में प्रभावित करने वाले तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा ने ओवल में खेले गए पांचवें टेस्ट के दौरान जो रूट के साथ मैदान पर हुई बहस के बारे में कहा कि उन्हें यह समझ नहीं आया कि इस दिग्गज बल्लेबाज ने इतने गुस्से के साथ प्रतिक्रिया क्यों दी। भारत ने पांचवें टेस्ट मैच को छह रन से जीतकर सीरीज को 2-2 से बराबर किया था।

इस मैच के दूसरे दिन रूट और प्रसिद्ध के बीच तीखी बहस हुई थी। प्रसिद्ध ने ईएसपीएनक्रिकइंफो से कहा मुझे नहीं पता रूट ने क्यों उस तरह की प्रतिक्रिया दी। मैंने तो बस इतना कहा था, आप अच्छे लग रहे हो और बात गाली गलौज तक पहुंच गयी। उन्होंने कहा मैंने कई खिलाड़ियों से बात की। मैंने रूट से भी बात की। मैंने पूछा क्या हुआ था तो उन्होंने कहा मुझे लगा तुमने गाली दी। मैंने कहा नहीं, मैंने तो ऐसा कुछ नहीं कहा था। रूट ने फिर कहा असल में मैं खुद को भी प्रेरित करने की कोशिश कर रहा था, इसलिए बात थोड़ी बढ़ गयी। उन्होंने कहा मुझे इस खेल में यही सबसे ज्यादा पसंद है। मैं हमेशा से इसे इसी तरह खेलता आया हूं।

- **इंग्लैंड के ओवल में पांचवें टेस्ट के दौरान हुई थी बहस**

कांस्य पदक जीतने से ओलंपिक की भरपाई कर दी : चिराग

नई दिल्ली : भारतीय पुरुष युगल बैडमिंटन टीम के सदस्य चिराग शेट्टी ने कहा कि हाल में पेरिस में विश्व चैंपियनशिप में पदक जीतने से एक साल पहले इसी शहर में ओलंपिक खेलों में पोडियम तक नहीं पहुंच पाने की काफी हद तक भरपाई कर दी।

चिराग और लंबे समय से उनके साथी सात्विक साईराज रंकीरेड्डी ने पिछले सप्ताह विश्व चैंपियनशिप में पुरुष युगल का कांस्य पदक जीता। दुनिया की नौवें नंबर की इस जोड़ी ने क्वार्टर फ़ाइनल में मलेशिया के दो बार के ओलंपिक पदक विजेता आरोन चिया और सोह वूई यिक को हराकर विश्व चैंपियनशिप में अपना दूसरा पदक हासिल किया। भारत की इस जोड़ी का पहली बार विश्व चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचने का सपना सेमीफाइनल में चीन की जोड़ी से हार के साथ टूट गया।

एशिया कप | इरफान पठान ने एशिया कप में शुभमन गिल के चयन को टीम के हित में करार दिया

गिल आक्रामक क्रिकेट खेलना चाहेंगे

मुंबई, एजेंसी

पूर्व हरफनमौला इरफान पठान ने एशिया कप के लिए टी20 टीम में शुभमन गिल की वापसी और उन्हें उपकप्तान बनाने के फैसले को टीम के हित में करार देते हुए मंगलवार को कहा कि वह अपनी आक्रामक बल्लेबाजी से खुद को साबित करने की कोशिश करेंगे। टेस्ट कप्तान के तौर पर इंग्लैंड में अपनी पहली सीरीज में शानदार प्रदर्शन करने वाले गिल की लंबे समय के बाद टी20 टीम में वापसी हुई है।

पठान ने कहा कि गिल के उपकप्तान होने से मौजूदा कप्तान सूर्यकुमार यादव पर भी कोई दबाव नहीं आयेगा।

पठान ने 'सोनी स्पोर्ट्स' द्वारा आयोजित संवाददाता सम्मेलन में कहा सूर्यकुमार की सहमति के बिना शुभमन गिल को उप-कप्तान नहीं चुना गया होगा। पठान ने कहा उनकी (सूर्यकुमार) जिम्मेदारी सिर्फ अपना प्रदर्शन करना या टीम को संभालना नहीं है।

युवा खिलाड़ी में नेतृत्व कौशल विकसित करना और टीम को भविष्य के लिए तैयार करना भी है। इस पूर्व खिलाड़ी ने कहा लोगों को शायद ऐसा लग रहा होगा कि इससे सूर्यकुमार पर दबाव पड़ेगा लेकिन वह जो कर रहे हैं वह वास्तव में भारतीय क्रिकेट के भविष्य के लिए बहुत अच्छा है। यह सूर्यकुमार यादव को ऐसे कप्तान के तौर पर स्थापित करेगा जिनका क्रिकेट जगत में काफी सम्मान है। पठान ने कहा कि गिल अपने चयन और उपकप्तान के तौर पर नियुक्ति को सही साबित करना चाहेंगे। उन्होंने कहा हमने इस सत्र में देखा है, वह शानदार लय में हैं। उन्होंने पिछले कुछ आईपीएल में काफी रन भी बनाये हैं। उनके पास आक्रामक बल्लेबाजी करने की क्षमता है। मुझे नहीं लगता कि गिल के लिए आक्रामक भूमिका निभाने और टीम की जरूरत को पूरा करने में कोई समस्या होगी।

इरफान पठान। एजेंसी

वरुण साबित होंगे एक्स-फैक्टर

- इरफान पठान ने कहा 2021 टी20 विश्व कप के दौरान यूएई में निराशाजनक प्रदर्शन करने वाले वरुण चक्रवर्ती एशिया कप में भारत के लिए 'एक्स-फैक्टर (अपने दम पर मैच का रुख पलटने वाले खिलाड़ी)' होंगे। आप हमेशा सोचते हैं कि ऑलराउंडर एक्स फैक्टर होते है लेकिन मैं वास्तव में यह देखने के लिए उत्सुक हूं कि वरुण चक्रवर्ती कैसा प्रदर्शन करते हैं क्योंकि आपको पता होना चाहिए कि यह एक वापसी की प्रेरणादायक कहानी हो सकती है। मेरी नजरें उन पर पर होंगी क्योंकि उनमें बहुत आत्मविश्वास है और एक्स-फैक्टर साबित हो सकते हैं।